नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 284, नई दिल्ली, रदिदकर 14 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

03 सफला एकादशी 2025, कब है 14 या 15 दिसंबर ?

06 ....डिजिटल दक्षताओं के बिना आगे नहीं बढ़ सकता

08 सीवरमैन वेलफेयर यूनियन अमृतसर द्वारा महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन

परिवहन आयुक्त द्वारा विभाग में तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त कर जनता को सीधे और परोक्ष दोनों तरह के नुकसान में डाल दिया, जाने विश्लेषण

संजय बाठला

दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग में एमवीआई (Motor Vehicle Inspector) के लिए तकनीकी योग्यता दिल्ली के आधिकारिक भर्ती नियमों में साफ-साफ दी गई हैं, जबकि एमएलओ/डीटीओ के लिए नियम हाल में संशोधित हुए हैं और उनमें तकनीकी योग्यता का स्तर पद की प्रकृति के अनुसार रखा गया है।

एमवीआई (Motor Vehicle Inspector) – दिल्ली दिल्ली सरकार के 2021 के भर्ती नियमों के अनुसार एमवीआई के लिए अनिवार्य तकनीकी योग्यता यह है:

1. मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10th पास
2. 3 वर्ष का डिप्लोमा (Diploma) ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग या मैकेनिकल इंजीनियरिंग में, जो केंद्र या राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान से हो।
3. ऐसा वैध ड्राइविंग लाइसेंस, जो गियर वाली मोटर साइकिल और हल्के मोटर वाहन (Light Motor Vehicles) चलाने की अनुमति देता हो।
4. ये सभी शर्तें "Essential Qualification" के रूप में लिखी गई हैं, यानी इनके बिना सामान्यतः सीधे भर्ती (Direct Recruitment) नहीं हो सकती।

एमएलओ / डीटीओ (Motor Licensing Officer / District Transport Officer) – दिल्ली में एमएलओ के पद को हाल में पुनर्गठित कर डिस्ट्रिक्ट ट्रांसपोर्ट ऑफिसर (DTO) के रूप में रीडिज़ाइनेट किया गया है; यह पद फील्ड-लेवल पर लाइसेंस, रजिस्ट्रेशन, एन्फोर्समेंट आदि का दायित्व निभाता है।

2025 में जारी डीटीओ के संशोधित भर्ती नियमों के अनुसार, डिप्यूटेशन/प्रमोशन के लिए उम्मीदवार के पास आम तौर पर लेवल-6 या समकक्ष पद पर सेवा के साथ मेकैनिकल या ऑटोमोबाइल से संबंधित डिप्लोमा / तकनीकी योग्यता की शर्तें रखी गई हैं (सटीक शब्दावली नोटिफिकेशन में दी गई है)।

डीटीओ जैसे पदों के लिए जब नियमों में स्पष्ट तकनीकी योग्यता (मेकैनिकल/ऑटोमोबाइल डिप्लोमा आदि) अनिवार्य की गई हो, और फिर भी बिना इस योग्यता वाले अधिकारियों को नियुक्त किया जाए, तो इससे जनता को सीधे और परोक्ष दोनों तरह के नुकसान हो सकते हैं।

सड़क सुरक्षा और फिटनेस पर असर डीटीओ/आरटीओ अधिकारी वाहन पंजीकरण, फिटनेस सर्टिफिकेट, ओवरलोडिंग, ब्रेक-लाइट, टायर, उत्सर्जन आदि की निगरानी करते हैं; तकनीकी समझ कम होने पर अनफिट वाहन भी सड़क पर चलने की अनुमति पा सकते हैं, जिससे दुर्घटनाओं और जान-माल की हानि का जोखिम बढ़ जाता है।

तकनीकी ज्ञान न होने से नए वाहन मानक, सुरक्षा फीचर, और उत्सर्जन नियम (जैसे BS-VI, क्रैश नॉर्म्स) समझने व लागू करने में चूक हो सकती है, जो मोटर व्हीकल एक्ट के उद्देश्य – सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन – के विपरीत है।

भ्रष्टाचार, मनमानी और पारदर्शिता की कमी तकनीकी मानकों की सूक्ष्म समझ न होने पर निरीक्षण अधिक "काग़ज़ी" या व्यक्तिपरक हो जाता है; ऐसी स्थिति में जानकार दलाल तथा वाहन मालिक नियमों की कमज़ोर समझ का फायदा उठाकर घूस या दबाव के जरिए गलत काम निकलवा सकते हैं।

जब बिना योग्यता वाले लोग तकनीकी फैसले ले रहे हैं, तो विभाग की निष्पक्षता और विश्वास नीयता पर सवाल उठते हैं, जिससे शिकायतें, मुकदमे और प्रशासनिक अविश्वास बढ़ सकता है।

नीति-निर्माण और रोड सेफ्टी रणनीति पर प्रभाव डीटीओ स्तर पर दुर्घटना विश्लेषण, ब्लैक-स्पॉट की पहचान, वाहन-डिज़ाइन से जुड़े पैटर्न, और स्थानीय रोड सेफ्टी एक्शन प्लान बनाना होता है; तकनीकी पृष्ठभूमि न होने पर यह विश्लेषण सतही रह जाता है और प्रभावी नीति नहीं बन पाती।

सुप्रीम कोर्ट कमेटी ऑन रोड सेफ्टी और अन्य विशेषज्ञ निकायों ने ही सिफारिश की है कि मोटर वाहन विभाग के उच्च पदों पर तकनीकी योग्यता ज़रूरी हो, ताकि वे वैज्ञानिक साक्ष्यों और इंजीनियरिंग सिद्धांतों के आधार पर निर्णय ले सकें; इस मानक से विचलन जनता के हित के विपरीत माना जाता है।

कानून के उद्देश्य और बराबरी के अधिकार पर चोट मोटर व्हीकल एक्ट एक कल्याणकारी (welfare) कानून है, जिसका मकसद लोगों की जान की सुरक्षा और सुव्यवस्थित यातायात है; जब जानबूझकर तकनीकी योग्यता की शर्तों को अनदेखा कर नियुक्ति होती है, तो कानून का यही मूल उद्देश्य कमजोर हो जाता है।

योग्य तकनीकी उम्मीदवारों के लिए यह अनुचित प्रतिस्पर्धा (unfair competition) बनती है, जिससे उनके समान अवसर (आर्टिकल 14 और 16 के तहत) प्रभावित होते हैं; लंबी अवधि में इससे विभाग में प्रतिभाशाली तकनीकी लोगों के आने की प्रेरणा भी घटती है, जिसका नुकसान अंततः जनता को ही उठाना पड़ता है।

जय जगन्नाथ जी

जगन्नाथ पुरी धाम दर्शन

(दिल्ली से फ्लाइट द्वारा यात्रा)

यात्रा तिथि: 19 जनवरी से 21 जनवरी

यात्रा कार्यक्रम :

DAY 1 – दिल्ली भुवनेश्वर (फ्लाइट द्वारा)
होटल में चेक-इन
खंडगिरी एवं उदयगिरी गुफाएं
एलिफेंटा / लायन / क्वीन केव्स
लिंगराज मंदिर
जैन मंदिर
मुक्तेश्वर मंदिर
बिंदुसागर
रात्रि विश्राम – भुवनेश्वर

DAY 2
नाश्ता
बुद्ध स्तूप
कोणार्क सूर्य मंदिर
चंद्रभागा बीच
रामचंडी मंदिर
पुरी होटल में ठहराव
श्री जगन्नाथ मंदिर दर्शन
विमला शक्तिपीठ
रात्रि विश्राम – पुरी

DAY 3
नाश्ता
चिल्का झील (डॉल्फिन सैंक्चुरी)
दिल्ली वापसी

पैकेज में शामिल:
हवाई यात्रा
होटल ठहराव
केवल नाश्ता

पैकेज मूल्य: 25,000 /- प्रति व्यक्ति

बुकिंग अंतिम तिथि: 15 दिसंबर

संपर्क करें:
9716338127,
9811732094
9212632095

दिल्ली में प्रदूषण का खतरनाक स्तर, GRAP-4 लागू; जानें किन-किन चीजों पर लगी पाबंदियां

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियों के बीच शनिवार को दिल्ली में प्रदूषण का स्तर इतनी तेजी से बढ़ा कि एक ही दिन में दो बार ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) बदलना पड़ गया। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने सुबह ग्रेप तीन लगाने की घोषणा की तो शाम को ग्रेप चार लगाना पड़ गया। इसी के साथ अब एनसीआर भर में ग्रेप के चारों चरणों की पाबंदियां लागू हो गई हैं।

दिल्ली में शनिवार सुबह धुंध की मोटी चादर छाई रही। एक्यूआई 397 के साथ 'गंभीर' श्रेणी के करीब पहुंच गया। शाम चार बजे यह 431 था, जो शाम छह बजे बढ़कर 441 और रात आठ बजे 452 हो गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार दिल्ली में कुल निगरानी स्टेशन में से 21 में एक्यूआइ 400 से ज्यादा दर्ज किया गया है, जो "गंभीर" श्रेणी में आता है।

सीपीसीबी के आंकड़ों के अनुसार एक्यूआइ वजीरपुर में सबसे अधिक 445, विवेक विहार में 444, जहांगीरपुरी में 442, आनंद विहार में 439 और अशोक विहार व रोहिणी दोनों जगह 437 दर्ज किया गया। नरेला में 432, पटपड़गंज में 431, मुंडका में 430 और बवाना, आइटीओ एवं नेहरू नगर में 429 दर्ज किया गया। सीपीसीबी के आंकड़ों के अनुसार, चांदनी चौक और पंजाबी बाग में एक्यूआइ 423 दर्ज किया गया, जबकि सिरी फोर्ट और सोनिया विहार में यह 424 रहा।

सीपीसीबी ने बताया कि बुराड़ी क्रासिंग में एक्यूआइ 414 दर्ज हुआ, इसके बाद कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में 409, नार्थ कैंपस और आरके पुरम में 408-408 तथा ओखला फेज-2 में 404 एक्यूआई रिकॉर्ड किया गया।

इन चीजों पर रोक

ग्रेप के तीसरे चरण की पाबंदियों के तहत दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर में बीएस तीन पेट्रोल व बीएस चार डीजल के चार पहिया वाहनों के संचालन पर सख्त प्रतिबंध रहेगा।लेकिन अपने व्यक्तिगत इस्तेमाल के लिए दिव्यांग दोनों ही श्रेणी के वाहन चला सकेंगे। स्वच्छ ईंधन पर नहीं चलने वाले ईंट भट्ठे, हाट मिक्स प्लांट और स्टोन क्रशर को दिल्ली-एनसीआर में बंद किया जाएगा।

ग्रेप चार के प्रतिबंधों के तहत राष्ट्रीय राजमार्ग, सड़क, फ्लाईओवर, ओवर ब्रिज, बिजली वितरण से संबंधित परियोजनाओं और आवश्यक सेवाओं से जुड़ी परियोजनाओं को छोड़कर, सभी तरह के निर्माण कार्यों पर पूरी तरह रोक रहती है। इसके तहत दिल्ली में ट्रकों के प्रवेश पर रोक रहेगी। सिर्फ जरूरी चीजें लेकर आने वाले ट्रकों, सीएनजी और इलेक्ट्रिक ट्रकों, और बीएस छह। इंजन वाले ट्रकों को छूट रहेगी।

दिल्ली के बाहर पंजीकृत गैर-आवश्यक हल्के वाणिज्यिक गाड़ियों के प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा। दिल्ली में पंजीकृत बीएस छह या उससे पुराने डीजल के भारी मालवाहक वाहन पर रोक रहेगी।

छठी से नौवीं और 11वीं की पढ़ाई आनलाइन या हाइब्रिड मोड में की जा सकती है। सरकारी और गैर-सरकारी कार्यालयों को 50 प्रतिशत क्षमता के साथ वर्क फ्रॉम होम लागू करने का आदेश दिया जा सकता है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

IRDAI / इंश्योरेंस ऑम्बड्समैन बनकर ठगी के मामले बढ़ रहे हैं

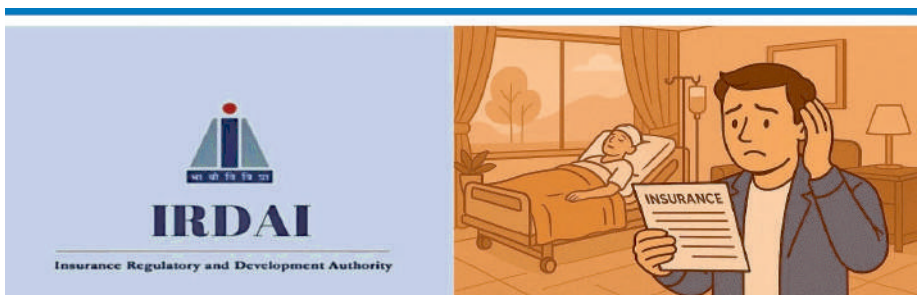

ठग लैप्स हो चुकी बीमा पॉलिसियों की असली जानकारी का इस्तेमाल करके खुद को IRDAI, इंश्योरेंस ऑम्बड्समैन, या बीमा कंपनी का अधिकारी बताकर कॉल करते हैं। वे "पेंडिंग रिफंड" का झांसा देते हैं और प्रोसेसिंग चार्ज, फाइल एक्टिवेशन, NOC, GST, या RBI बॉन्ड के नाम पर पैसे मांगते हैं।

मामला 1 — दिल्ली (₹1.3 लाख की ठगी) चार लोगों को गिरफ्तार किया गया जिन्होंने IRDAI और इंश्योरेंस ऑम्बड्समैन अधिकारी बनकर एक कैंसर पीड़ित व्यक्ति से कहा कि उसका मेडिकल इंश्योरेंस रिफंड "प्रोसेसिंग चार्ज" देने पर ही मिलेगा — और उससे ₹1.3 लाख ठग लिए।

मामला 2 — मुंबई (₹2.36 करोड़ की ठगी) एक सेवानिवृत्त नागरिक से ठगों ने IRDAI, NSDL और NPCI के अधिकारी बनकर बात की और सात लैप्स पॉलिसियों का रिफंड दिलाने का वादा किया। बाद में "RBI क्लियरेंस", "बॉन्ड फीस", और "टैक्स एडजस्टमेंट" के नाम पर लगातार पैसे लेते रहे — कुल नुकसान ₹2.36 करोड़।

ठगी कैसे होती है (संक्षेप में)

1. असली डेटा का दुरुपयोग – लीक हुई पॉलिसी जानकारी, फर्जी KYC कॉल, एक्स इंटरमीडियरी।
2. अधिकारियों की नकल – नकली IRDAI/ऑम्बड्समैन अधिकारी, स्पूफ्ड नंबर, फर्जी ID।
3. विश्वास का जाल – पॉलिसी नंबर, प्रीमियम, लैप्स डेट जैसी असली जानकारी बताते हैं।
4. पैसे की मांग – बैंक ट्रांसफर/UPI या नकली रिफंड पोर्टल के जरिए फीस मांगते हैं।
5. बार बार नए शुल्क – "फाइल RBI में अटकी है", "TDS/GST/NOC देना होगा"।
6. गायब हो जाना – फोन बंद, व्हाट्सऐप डिलीट, पैसा तुरंत निकाल लेते हैं।

लोग क्यों फंस जाते हैं

*असली पॉलिसी जानकारी मिलने से भरोसा हो जाता है
*IRDAI की प्रक्रिया की जानकारी कम होती है
*कॉलर ID स्पूफिंग

नागरिकों के लिए सुरक्षा चेकलिस्ट

✓ IRDAI कभी रिफंड के लिए कॉल नहीं करता
✓ किसी भी बीमा रिफंड के लिए कोई शुल्क नहीं लगता
✓ हर कॉल को बीमा कंपनी के आधिकारिक नंबर पर वेरिफाई करें
✓ अपनी पॉलिसी डॉक्यूमेंट किसी अनजान व्यक्ति को न भेजें
✓ तुरंत रिपोर्ट करें → 1930 | cybercrime.gov.in

आउटरीच संदेश

1. IRDAI रिफंड के लिए कभी कॉल नहीं करता।
2. इंश्योरेंस ऑम्बड्समैन कोई फीस नहीं मांगता। किसी रिफंड के लिए "प्रोसेसिंग चार्ज", "RBI बॉन्ड" या "फाइल एक्टिवेशन" की जरूरत नहीं होती। अगर कोई रिफंड दिलाने के नाम पर पैसे मांगे — यह ठगी है। रिपोर्ट करें: 1930 या cybercrime.gov.in

ऐसी बहुत सी चीजें है, जो मांगने पर नहीं देनी चाहिए, उनको देने से घर आर्थिक रूप से संकट आ सकता है, और जातक के ग्रह भी खराब हो सकते है, इसके अलावा कुछ चीजे ऐसी होती है, जिनका लेन देन करने से भाग्य भी रूठ सकता है

पिंकी कुंडू

हल्दी हल्दी किसी को मांगने पर भी नहीं देनी चाहिए, हल्दी देने से लक्ष्मी जाती है। हल्दी घर में कभी ख़त्म भी नहीं होनी चाहिए, कि आप को भी किसी से मांगना पड़े।

झाड़ झाड़ भी किसी को मांगने पर नहीं देनी चाहिए, ये भी लक्ष्मी होती है।

दही (जामन) जामन भी किसी को देने से बचना चाहिए, अगर किसी कारण वश देना भी पड़े, तो वार देख कर देना चाहिए और दोनों टाइम मिलने पर नहीं दे चाहिए।

नमक नमक का भी आदान प्रादान कम करना चाहिए, कहते है कि किसी के नमक का कर्ज अगले जन्म तक नहीं उतार सकते।

सरसों का तेल सरसों के तेल का भी आदान प्रदान कम ही करें तो बेहतर होगा, क्योंकि ये भी शनि से संबंधित होता है।

दूध दूध भी मांगने से जल्दी से नहीं देना चाहिए, जब तक कोई खास मजबूरी न हो. यदि ऐसा हो तो आर्थिक रूप से तनाव झेलना पड़ता है.

चांदी चांदी का भी देन लेन कम ही करें, चांदी को ना बेंचें और ना गिफ्ट करें, चांदी के बदले चांदी ही खरीद लें, और चांदी गिफ्ट करने से घर की खुशियां जाती है, ऐसी मान्यता गया है,

मोबाइल मोबाइल भी किसी के मांगने पर कम ही दें, जहां तक संभव है मना ही करना बेहतर होगा, सामने वाला मोबाइल से कुछ भी छेड़खानी कर सकता है।

कपड़ों का आदान प्रदान एक दूसरे के पहने हुआ कपड़ों का कम ही इस्तेमाल करें, इससे त्वचा संबंधी इंफेक्शन होने का भी डर रहता है, साथ ही खुद के ग्रह भी खराब होने का डर रहता है।

जूठा भोजन अपना जूठा भोजन अगर बच गया है. जातक नहीं खा पा रहा है तो अपने घर के ही किसी परिजन दे देना चाहिए. ऐसा करने ने ये मान्यता है कि घर की लक्ष्मी घर में ही रहेगी।

अन्यों के साथ एक ही थाली में खाना मेहमानों के साथ अलग ही पात्रों में भोजन करना चाहिए. एक साथ भोजन करने से यदि मेहमान के ग्रह अशुभ है और मेजबान के अच्छे है तो अच्छे ग्रह होते हुए भी मेहमान के अशुभ ग्रह के प्रभाव में आ जाएंगे।

शनि की लोहे की अंगूठी देना अगर जातक ने शनि की अंगूठी (लोहे की) पहन रखी है तो कभी भी दूसरे के मांगने पर ना देनी चाहिए. इससे आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और अन्यो को लाभ पहुंचता है।

धनतेरस वाले दिन दीपक का ध्यान रखना, विशेष कर कौड़ी का धनतेरस वाले दिन सभी के यहां दीपक जलाया जाता है. उसमें कानी कोडी या सिक्का डाला जाता है. उसे संभाल कर रखना चाहिए. ऐसी मान्यता है कि वह कोई चुरा ना पाए. उससे जुआ खेलने से जुआरी अधिकतर जीतते है. दिवाली के समय वैसे भी बहुत जुआ होता है। यदि सावधानी न बरती जाए तो आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

दीपावली पर झाड़ू का ध्यान रखना दीपावली के अवसर पर झाड़ू का लेन देन नहीं करना चाहिए अमूमन झाड़ू मांग लिया जाता है दीपावली पर विशेष कर झाड़ू का ध्यान रखना चाहिए. क्योंकि अक्सर लोग बाग झाड़ू चोरी की ताक में रहते हैं।

ताजमहल ताजमहल उपहार में देने से बचना चाहिए. इससे रिश्ते टूटने का भय रहता है।

चप्पल चप्पल का भी लेन देन से बचना चाहिए. अन्यों की चप्पल पहनने से उनके अशुभ ग्रहों का प्रभाव आने लगता है यदि चप्पल चोरी हो जाए तो यह एक शुभ संकेत है परंतु बदले में अन्यों की चप्पल भी नहीं पहनकर आनी चाहिए.

रुमाल दूजों के रुमाल को भी लेने से बचना चाहिए और अपना रुमाल किसी के पास नहीं छोड़ना चाहिए. यदि ऐसा भूल वश हो भी जाए तो याद आने पर तुरंत मांग ले, वरना रिश्ते टूटने का भय रहता है।

यूं तो आधुनिक युग में युवा वर्ग ये सब पुरानी बातों पर कम ही ध्यान देते है. उन्हें ये सब बात दकियानूसी लगती है, फिर उनकी दोस्ती, जिसने जो प्यार से मांगा, उसको वह दे दिया अथवा उसका पहन लिया, वह यह सब अनजाने में करते है।

हमारे बुजुर्ग जो बात कहते थे. वह सही होता था. कुछ लोग आज भी उनका अनुसरण करते है और कुछ नही, लेकिन हमारी शायद आखरी ही पीढ़ी है, जो काफी कुछ जानती और समझती है, कहते है experience is a good teacher.

हमने जो अपने कुछ कड़वे और कुछ अच्छे अनुभवों से सीखा है, वो अनमोल सीख पीढ़ी में बांट जाए और आज कल के युवा वर्ग को भी चाहिए कि इस अनमोल खजाने से बंचित न रहें।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

डायबिटीज़ वाले लोगों को किन खाद्य पदार्थों से बचना चाहिए — यह सब शोध-आधारित पोषण विज्ञान और विश्वसनीय मार्गदर्शन पर आधारित है।

डायबिटीज़ होने पर किन चीज़ों से बचें / सीमित करें डायबिटीज़ (या प्री-डायबिटीज़) के दौरान, निम्नलिखित भोजन और पेय पदार्थों से बचना या इनकी मात्रा कम करना अच्छा रहता है। शोध बताता है कि ये खुराक ब्लड शुगर को तेजी से बढ़ा सकती हैं, इंसुलिन रोधी (insulin resistance) बढ़ा सकती हैं, तथा लम्बे समय में स्वास्थ्य जोखिम बढ़ा सकती हैं।

बचने योग्य या सीमित करने योग्य खाद्य / पेय

1. मीठे पेय व शुगरयुक्त जूस/ड्रिंक्स — सोडा, पैकेज्ड जूस, शुगर-युक्त एनर्जी ड्रिंक्स आदि तेजी से शुगर बढ़ाते हैं।

2. सफेद ब्रेड, सफेद राइस, पेस्टा और रिफाइंड फ्लोर आधारित चीज़ें — इनमें फाइबर कम होता है; ये जल्दी पच जाते हैं और ब्लड शुगर तेजी से बढ़ाते हैं।

3. शुगर युक्त ब्रेकफास्ट सीरियल्स — कैंफ्लेक्स जैसे सीरियल्स में शुगर और रिफाइंड कार्ब्स अधिक होते हैं; भोजन के तुरंत बाद ग्लूकोज अचानक बढ़ सकती है।

4. मिठाई, केक, पेस्ट्री, बिस्कुट, आइसक्रीम — इनमें शुगर और अस्वस्थ वसा (अनहैल्दी फैट्स) होती है; ब्लड शुगर अस्थिरता, अतिरिक्त कैलोरी और वजन बढ़ने का जोखिम रहता है।

5. तली हुई एवं डीप-फ्राइड चीज़ें — फ्रेंच फ्राइज, समोसा, पकोड़ा, चिप्स, अन्य स्नैक्स जो तेल-वसा में तले गए हों; ये इंसुलिन रोधी, मोटापे व अन्य जटिलताओं की दिशा में ले जा सकते हैं।

6. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड और पैकेज्ड स्नैक्स / फ़ास्ट फूड — इनमें अक्सर रिफाइंड कार्ब्स, अतिरिक्त शुगर, अस्वास्थ्यकर वसा, और संरक्षक (preservatives) होते हैं — डायबिटीज़ प्रबंधन के लिए ये अनुकूल नहीं।

7. पूरा फैट वाले डेयरी प्रोडक्ट्स, उच्च-फैट मीट या प्रोसेस्ड मीट — अधिक संतृप्त वसा और संसाधित मांस से इंसुलिन संवेदनशीलता बिगड़ सकती है, हृदय रोग व अन्य जोखिम बढ़ सकते हैं।

क्या बेहतर विकल्प बन सकते हैं साबुत अनाज (ब्राउन राइस, बाजरा, क्विनोआ), होल-ग्रेन ब्रेड या पास्ता, साबुत अनाज से बनी नाश्ते की चीज़ें।

1. फाइबर युक्त खाद्य पदार्थ — ताज़ा फल-सब्जियाँ, दल-पल, फलियां (legumes), जो शुगर अवशोषण को धीमा करते हैं।

2. लीन (lean) प्रोटीन स्रोत — मछली, चिकन, दालें, टोफू — प्रोसेस्ड मीट की बजाय।

3. शुगर मुक्त या बिना शुगर वाले पेय - पानी, बिना शुगर वाली चाय/कॉफी, स्पार्कलिंग वॉटर आदि।

क्यों यह सलाह वैज्ञानिक रुप से मायने रखती है ?

1. ग्लाइसेमिक इंडेक्स (GI) और ग्लाइसेमिक लोड (GL): जिन खाद्यों का GI/GL अधिक होता है, वे तेजी से पचते और शुगर ब्लड में जल्दी छोड़ते हैं — इससे इंसुलिन की अचानक वृद्धि होती है। बार-बार यह होने पर इंसुलिन रोधी गुण (insulin resistance) बढ़ सकता है।

2. फाइबर की कमी: फाइबर भोजन को धीरे पचाता है, शुगर अवशोषण धीमा करता है और ब्लड शुगर के अस्थिर उछालों को कम करता है। रिफाइंड अनाज या प्रोसेस्ड कार्ब्स से ये लाभ नहीं मिलता।

3. अस्वास्थ्यकर वसा (saturated/trans fats) व प्रोसेस्ड मीट: यह वसा इंसुलिन की संवेदनशीलता कम कर सकती हैं, कोलेस्ट्रॉल और हृदय-सम्बंधी जोखिम बढ़ा सकती हैं — जो कि डायबिटीज़ वाले के लिए ख़तरा और भी बढ़ा देती हैं।

4. मोटापा व मेटाबॉलिक तनाव: लगातार तले हुए, मीठे व प्रोसेस्ड आहार लेने से मोटापा, चयापचय बिगड़ना और अतिरिक्त जटिलताओं का खतरा बढ़ जाता है।

रात को दांत ब्रश करना क्यों आवश्यक और क्या फायदे, जाने

रात को दाँत ब्रश करना उतना साधारण नहीं है जितना लोग समझते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक शोध यह साबित कर रहा है कि अगर हम सोने से पहले ब्रश नहीं करते, तो मुँह में हानिकारक बैक्टीरिया बहुत तेजी से बढ़ते हैं। ये बैक्टीरिया मसूड़ों में सूजन पैदा करते हैं, और यह सूजन रक्त प्रवाह के साथ पूरे शरीर में फैलकर दिल पर असर डाल सकती है। मुँह और दिल का यह संबंध अब चिकित्सा विज्ञान में अच्छे से स्थापित हो चुका है।

नींद के दौरान लार (saliva) कम बनती है, जबकि लार मुँह को साफ रखने का प्राकृतिक तरीका है। कम लार के कारण बैक्टीरिया रातभर आसानी से बढ़ते हैं। अगर रात में ब्रश नहीं किया जाए तो मुंह में बनने वाले बैक्टीरिया मसूड़ों को नुकसान पहुँचाते हैं और सूजन पैदा करते हैं। समय के साथ यही

सूजन रक्त में पहुँचकर:

1. शरीर में सूजन के स्तर बढ़ा सकती है
2. धमनियों को कठोर या संकरी बना सकती है
3. दिल पर अतिरिक्त दबाव डाल सकती है।

कई अध्ययनों ने यह स्पष्ट रूप से दिखाया है कि खराब ओरल हाइजीन से हृदय रोग और स्ट्रोक का खतरा बढ़ता है, अच्छी बात यह है कि यह जोखिम पूरी तरह टाला जा सकता है।

1. रात में सिर्फ दो मिनट ब्रश करना प्लाक हटाता है, मसूड़ों की सूजन कम करता है, और पूरे शरीर में रक्त प्रवाह को स्वस्थ बनाए रखता है। फ्लॉसिंग और नियमित डेंटल चेकअप इस सुरक्षा को और मजबूत बनाते हैं। ये छोटे-छोटे आदतें बैक्टीरिया को नियंत्रित रखती हैं और दिल पर बोझ कम करती हैं।

2. रात का ब्रश एक छोटी सी आदत है, लेकिन इसके लाभ बहुत बड़े हैं। यह सिर्फ आपके मुस्कान की रक्षा नहीं करता, बल्कि आपकी धमनियों और आपके हृदय को भी मजबूत बनाता है। मुँह की देखभाल करना, वास्तव में पूरे शरीर की देखभाल है।

आपकी रात की दिनचर्या आपकी सोच से ज्यादा प्रभाव डालती है।

दिल की सुरक्षा कई बार एक टूथब्रश से ही शुरू हो जाती है।

तिल का प्रयोग, तथ्य–आधारित

तिल के बीज हड्डियों और जोड़ों की सेहत के लिए सबसे शक्तिशाली प्राकृतिक स्रोतों में से एक हैं। छोटी मात्रा में ही इनमें अधिक कैल्शियम, साथ ही मैग्नीशियम, जिंक, कॉपर और विटामिन B6 पाया जाता है, जो हड्डियों की मजबूती और ऊतकों की मरम्मत में मदद करते हैं।

जिंक कोलेजन बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे हड्डियाँ मजबूत और जोड़ लचीले रहते हैं। तिल में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स सूजन को संतुलित रखने में भी सहायक होते हैं।

प्रतिदिन एक चम्मच तिल या ताहिनी आसानी से मिनरल-इंटेक बढ़ा सकती है।

मजबूत हड्डियाँ नियमित आदतों से बनती हैं — पौष्टिक भोजन, धूप, हलचल और स्ट्रेंथ-ट्रेनिंग। तिल इनमें एक सरल और प्रभावी जोड़ है।

कई पोषण संबंधी अध्ययन और विश्लेषण बताते हैं कि तिल के बीज कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक आदि खनिजों का अच्छा स्रोत हैं, जो हड्डियों की सेहत के लिए बेहद ज़रूरी हैं। इसके अलावा, तिल में मौजूद एक यौगिक सेसमिन (Sesamin) पर प्रयोगशाला स्तर पर किया गया अध्ययन दिखाता है कि यह मानव मेसेन्काइमल स्टेम-सेल्स को हड्डी-बनाने वाली कोशिकाओं (ओस्टियोब्लास्ट) में बदलने को प्रेरित करता है; परिणामस्वरूप हड्डियों में कैल्शियम जमाव बढ़ता है।

दोहरा लाभ — खनिजों की आपूर्ति + हड्डी-निर्माण क्रिया को सक्रिय करना — तिल को हड्डियों की मजबूती के लिए एक वैज्ञानिक रूप से तार्किक और लाभदायक आहार विकल्प बनाता है, खासकर उन लोगों के लिए जो दूध या डेयरी प्रोडक्ट्स नहीं लेते। फिर भी, चूंकि तिल (विशेषकर बिना छिले/भिगोए हुए) में फ़ाइटेट और ऑक्सलेट जैसे "एंटी-न्यूट्रिएंट" होते हैं, कैल्शियम का अवशोषण पूरी तरह नहीं हो पाता। इसलिए, यदि आप तिल से लाभ लेना चाहते हैं, तो: रोज़ एक-दो चम्मच तिल बीज (बहुत ज़्यादा नहीं) लें, तिल को हल्का भून कर या भिगोकर खाएं (जिससे एंटी-न्यूट्रिएंट घट जाते हैं), और इसके साथ विटामिन D (धूप / संतुलित आहार), सम्पूर्ण पोषण व स्वस्थ जीवनशैली रखें।

यह दृष्टिकोण — किसी "फास्ट-फिक्स" की दलील नहीं — बल्कि एक संतुलित, वैज्ञानिक रूप से समर्थित, दीर्घकालिक पोषण रणनीति के रूप में उपयोगी है।

मसूड़ों की बीमारी दिमाग तक पहुँचकर पहुंचा सकती है बड़ा नुकसान, जाने

वैज्ञानिकों ने पाया कि मसूड़ों की बीमारी पैदा करने वाले कुछ बैक्टीरिया कभी-कभी दिमाग तक पहुँच जाते हैं। ये बैक्टीरिया जहरीले पदार्थ बनाते हैं, जो Alzheimer's रोग से पीड़ित लोगों के दिमाग में पाए गए।

चूहों पर किए गए प्रयोगों में देखा गया कि जब ये बैक्टीरिया मुँह में थे, कुछ समय बाद वे दिमाग में भी पहुँच गए और Alzheimer's जैसी क्षति बढ़ गई।

जब वैज्ञानिकों ने इन जहरीले पदार्थों को रोकने वाली दवा दी, तो दिमाग में सूजन कम हुई, नुकसान करने वाले प्रोटीन कम बने और दिमाग की कोशिकाएँ सुरक्षित रहीं।

इसका मतलब यह नहीं है कि केवल मसूड़ों की बीमारी से Alzheimer's होता है। लेकिन यह

दिखाता है कि कई वर्षों तक चलने वाला मसूड़ों का संक्रमण दिमाग को नुकसान पहुँचा सकता है।

सीधी बात: मसूड़ों की सफाई और सेहत दिमाग की सुरक्षा में भी मदद कर सकती है।

दाँतों को ग़ैर-प्रमुख हाथ (non-dominant hand) से ब्रश करना

दाँतों को ग़ैर-प्रमुख हाथ (non-dominant hand) से ब्रश करना भले ही छोटी सी बात लगे, लेकिन यह दिमाग़ को गहरी कसरत देता है।

यह छोटी-सी आदत दिमाग़ को नए तरीके से काम करने पर मजबूर करती है, जिससे दोनों हेमिस्फियर के बीच तालमेल बेहतर होता है और न्यूरोप्लास्टिसिटी — यानी नई न्यूरल कनेक्शन बनाने की क्षमता — मज़बूत होती है।

ऐसे "डुअल-टास्क" अभ्यास ध्यान, वर्किंग मेमोरी और मानसिक लचीलेपन को बेहतर बनाते हैं।

समय के साथ ये छोटे-छोटे ब्रेन वर्कआउट ग्रे मैटर की सेहत को बनाए रखने में मदद करते हैं और संज्ञानात्मक गिरावट के जोखिम को कम कर सकते हैं।

हर दिन ऐसे छोटे, अनजान मूवमेंट करते रहने से आपका दिमाग़ सक्रिय, अनुकूलनशील और मज़बूत बना रहता है।

हेल्थ केयर, घरेलू नुस्खे, मूंगफली और गुड़ एक हेल्दी कॉम्बो जो हमारी डाइट का हिस्सा होना चाहिए

ऐसे कई फूड्स हैं जो शरीर को मजबूत बनाने और इम्यूनिटी बढ़ाने में मदद करते हैं और अगर आप दो ऐसे पौष्टिक फूड्स को मिलाते हैं, तो आपको एक सुपर हेल्दी और पावरफुल ट्रीट मिलेगी। सर्दियों के लिए ऐसा ही एक आइडियल कॉम्बिनेशन है गुड़ में लिपटे पीनट बॉल्स या चिक्की जिसे घर पर आसानी से बनाया जा सकता है। यह न सिर्फ स्वादिष्ट है, बल्कि भूख मिटाने और शरीर को मजबूत बनाने का भी एक शानदार तरीका है।

मूंगफली में सेलेनियम, और गुड़ में मैग्नीशियम और आयरन फर्टिलिटी से जुड़ी समस्याओं को ठीक करने और मसल्स को मजबूत बनाने में मदद करते हैं।

यह स्वादिष्ट कॉम्बिनेशन हीमोग्लोबिन की कमी को पूरा करने और एनीमिया से बचाने में मदद करता है। मूंगफली में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट खून को साफ करने में भी मदद करते हैं।

सर्दियों में त्वचा की सुरक्षा अत्यंत उपयोगी और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित

सर्दियों में त्वचा की सुरक्षा: विशेषज्ञों द्वारा सुझाए गए आधुनिक और प्रभावी उपाय

सर्दियों की शुष्क हवा, ठंडी हवाएँ और घरों में चलने वाली हीटर की गर्मी—ये तीनों मिलकर त्वचा के प्राकृतिक नमी-संतुलन को तेजी से कम कर देते हैं। परिणामस्वरूप त्वचा में खुजली, रूखापन, पपड़ी, फटने जैसी सामान्य समस्याएँ बढ़ जाती हैं। कई बार यह साधारण सूखापन एक्ज़िमा (Dry Eczema) या डर्मेटाइटिस जैसी गंभीर स्थितियों का रूप भी ले सकता है। अच्छी बात यह है कि कुछ सरल और नियमित आदतें अपनाकर इन समस्याओं को आसानी से रोका जा सकता है। त्वचा विशेषज्ञों के नवीनतम सुझावों के आधार पर प्रस्तुत हैं सर्दियों में त्वचा को सुरक्षित रखने के अद्भुत और प्रभावी उपाय—

1. नहाने के तुरंत बाद मॉइस्चराइज़र लगाएँ — और दिन में 2–3 बार लगाएँ। विशेषज्ञों का मानना है की त्वचा गीली हो, उसी समय क्रीमी (Cream-based) मॉइस्चराइज़र लगाने से नमी "सील" हो जाती है। लोशन की जगह थिक क्रीम, बॉडी बटर या मलहम (ointment) अधिक प्रभावी होते हैं। Ceramides, Hyaluronic Acid, Shea Butter और Glycerin वाले उत्पाद त्वचा में नमी को बांधकर रखते हैं। बहुत अधिक रूखे हिस्सों—जैसे पैर, एड़ियाँ, कोहनियाँ, हाथ—पर Petroleum Jelly लगाना श्रेष्ठ माना जाता है।

नवीनतम जानकारी: 2024–25 की डर्मेटोलॉजी स्टडीज़ बताती हैं कि Ceramide-rich moisturizers नियमित उपयोग से त्वचा की सुरक्षा परत (Skin Barrier) को 50% तक मजबूत कर देती है।

2. कम समय और गुनगुने पानी से नहाएँ

1. 5–10 मिनट का गुनगुने पानी से स्नान आदर्श माना गया है।

2. बहुत गर्म पानी त्वचा के प्राकृतिक तेलों को नष्ट कर देता है।

3. साबुन की जगह सिंडेट (Syndet) या Mild Cleanser का उपयोग करें, और इसे केवल उन्हीं क्षेत्रों पर इस्तेमाल करें जहाँ अधिक गंदगी या पसीना हो।

4. त्वचा को तौलिये से हल्के हाथ से थपथपा कर सुखाएँ, रगड़ें नहीं।

3. घर के वातावरण में नमी (Humidity) बनाए रखें

1. सर्दियों में घरों के अंदर हवा बेहद सूखी हो जाती है।

2. कमरे में Humidifier चलाने से त्वचा की नमी सामान्य रहती है।

3. आदर्श नमी स्तर: 30–50%, यह त्वचा की पपड़ी, खुजली और फटने की समस्या को 40–60% तक कम कर देता है।

नवीनतम ट्रेंड: ₹Smart Humidifiers₹ — जो कमरे के नमी स्तर को ऑटोमैटिक नियंत्रित करते हैं—त्वचा विशेषज्ञों द्वारा 2025 के लिए highly recommended हैं।

4. बाहर निकलते समय त्वचा की रक्षा करें

1. ठंडी हवा और तेज़ सर्द हवाएँ त्वचा को तुरंत नुकसान पहुँचाती हैं।

2. बाहर निकलते समय स्कार्फ, ग्लव्स, कैप अवश्य पहनें।

3. सर्दियों में भी SPF 30+ Sunscreen आवश्यक है, क्योंकि UV किरणें बर्फ और धूल से परावर्तित होकर त्वचा को नुकसान पहुँचाती हैं।

नवीनतम शोध: Dermatology Research के अनुसार, सर्दियों में सनस्क्रीन न लगाने से त्वचा का सूखापन 25–30% तक बढ़ जाता है।

5. शरीर को भीतर से हाइड्रेट रखें

1. ठंड में प्यास कम लगती है, परंतु शरीर को नमी की आवश्यकता बराबर रहती है।

2. दिन भर में पर्याप्त पानी, साथ ही फल, सब्जियाँ, नारियल पानी, सूप आदि का सेवन करें।

3. ओमेगा-3 युक्त आहार (अखरोट, अलसी, चिया सीड) त्वचा को भीतर से पोषण देते हैं।

6. एक्सफोलिएशन कम करें और त्वचा को शांत रखें

1. कड़े स्क्रब, अल्कोहल बेस्ड टोनर, सुगंधित लोशन—ये सभी सर्दियों में त्वचा को नुकसान पहुँचाते हैं।

2. यदि एक्सफोलिएशन आवश्यक हो तो मुलायम कपड़ा या बहुत हल्का स्क्रबर सप्ताह में एक बार उपयोग करें।

3. ध्यान रहे: लक्ष्य ₹Scrub₹ करना नहीं, बल्कि Hydrate और Protect करना है।

कब डॉक्टर से संपर्क करें? यदि आपको यह लक्षण दिखें—

1. बहुत तेज खुजली
2. त्वचा में गहरी लालिमा
3. पपड़ीदार दाने
4. फटी त्वचा में जलन या दर्द
5. रात में नींद प्रभावित होना

तो यह Eczema या Dermatitis का संकेत हो सकता है। डॉक्टर Prescription Creams, Barrier Repair Therapy, या Short-term Steroids देकर जल्दी राहत देते हैं।

समय है इसे तुरंत अपनाने का, दिसंबर मध्य से जनवरी मध्य तक त्वचा सबसे ज्यादा संवेदनशील होती है। अभी से ये आदतें शुरू करने पर—

1. त्वचा नर्म, कोमल और चमकदार बनी रहती है
2. फटने या एक्ज़िमा जैसी समस्याएँ नहीं होतीं
3. सर्दियों का मौसम ज्यादा आरामदायक गुजरता है

आत्म-साक्षात्कार: भ्रम से ब्रह्म की ओर

पिंकी कुंडू

1. मूल सत्य: परमात्मा का ज्ञान, परमात्मा का ज्ञान केवल और केवल 'आत्मा' को ही है, या फिर उसे, जिसने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया हो—अर्थात जिसने 'स्वयं' को जान लिया हो।

2. वर्तमान विडंबना: धर्म या धंधा?

1. प्रश्न यह है कि वह कौन है जिसने वास्तव में इसका साक्षात्कार किया है?

2. क्या वह, जिसने धर्म को धंधा बना रखा है?

3. क्या वह, जो धर्म की आड़ में अनैतिक कार्य कर रहा है?

4. क्या वह, जो स्वयं वहम में है और दूसरों को भी भ्रम बांट रहा है? (क्योंकि एक भ्रमित व्यक्ति भ्रम के सिवा और क्या बांट सकता है?) या फिर वह,

5. जो केवल शारीरिक सुख की प्राप्ति हेतु 'भ्रम' को ही 'ब्रह्म' के रूप में परोस कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहा है?

यह किसी पर आरोप नहीं, अपितु कड़वा सत्य है। यदि ऐसा नहीं होता, तो आज ईश्वर और साधना के नाम पर समाज में ऐसे कृत्य नहीं परोसे जाते और न ही ऐसा आकर्षण फैलाया जाता।

3. साधना का वास्तविक स्वरूप आत्म-साक्षात्कार मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से परे जाकर होता है। इसे 'त्रिगुणातीत' अवस्था कहते हैं। जो साधक साधना की एक निश्चित अवस्था को पार कर लेता है, उसे यह ज्ञात हो जाता है कि भीतर स्थित उस परम तत्व का दायरा और गहराई अनंत है।

सृष्टि का आधार: समस्त सृष्टि—देव, मानव, दानव, गंधर्व, यक्ष और हर जीव-जंतु उसी परम तत्व से उत्पन्न होते हैं, उसी में विचरते हैं और अंततः उसी में विलीन हो जाते हैं।

आदि और अनंत: जहाँ इसकी सीमा प्रतीत होती है, वहीं से इसकी नई शुरुआत होती है। जिसे स्वयं श्री हरि भी पूरी तरह नहीं भेद पाए, उसकी गहराई को एक साधारण बुद्धि कैसे माप सकती है?

4. समर्पण और विलय:- साधना के दौरान जब साधक उस परम तत्व को साक्षी मानकर चलता है, तो उसके मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, गुण और विषय उसी में विलीन होने लगते हैं। जो परम तत्व समस्त सृष्टि को अपने भीतर समाहित किए हुए है, क्या वह तुम्हारे तुच्छ दुख, संताप, क्रोध, काम और अहंकार को नहीं सोख सकता? वह अथाह समुद्र है। तुम नमक के एक ढेले के समान उसमें डुबकी लगाओ, तुम धीरे-धीरे स्वतः घुलते जाओगे। परत-दर-परत सारे आवरण खुलते जाएंगे, सारे वहम छंट जाएंगे और अंत में केवल वही शेष रह जाएगा जिसकी तुम्हें तलाश है। यहीं जीवन का उद्देश्य पूर्ण होता है, यात्राएं समाप्त होती हैं और काल का चक्र ठहर जाता है।

5. युगपरिवर्तन: सतयुग बनाम कलियुग आत्म-साक्षात्कार हेतु उतनी ही शिद्दत और गहराई की आवश्यकता है, जितनी गहराई से आज तुम स्वयं को केवल 'शरीर' समझ कर जी रहे हो। यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं—एक तरफ 'ब्रह्म' और दूसरी तरफ उसकी 'माया' (भ्रम)।

सतयुग: जिस युग में लोग ब्रह्म को मानते थे, ईश्वर की सत्ता को स्वीकारते थे और उसी अनुरूप आचरण करते थे।

कलियुग: जिस युग में लोग 'भ्रम' को ही 'ब्रह्म' की उपाधि देकर बांट रहे हैं। यहाँ एक ईश्वर के अनेक मत हैं, क्योंकि ऐसे व्यक्तियों को न साधना से मतलब है, न आत्म-उत्थान से। वे केवल शरीर और इंद्रियों के दास हैं। आज धर्म के बाजार में केवल वेशभूषा, भाव-भंगिमा और मुखौटा बदलकर, मनगढ़ंत किस्से-कहानियों और चमत्कारों के द्वारा भ्रम फैलाया जा रहा है।

6. निष्कर्ष:- जो साधक समस्त आवरणों से पार चला गया, उसके लिए धर्म का अर्थ वह नहीं रह जाता जिसमें आम मनुष्य उलझा हुआ है। वह सत्य का साक्षात स्वरूप हो जाता है।

मेरी यह बातें किसी की अवहेलना के लिए नहीं, बल्कि सत्य को सत्य के रूप में वर्णित करने के लिए हैं। जो सरल और सत्य स्वरूप हैं, उनके लिए यह कल्याणकारी होगा। परंतु जो इसकी आड़ में खेल खेल रहे हैं, उनके लिए यह नीम से भी अधिक कड़वा होगा, क्योंकि यह चोट सीधे उनके उस 'अहंकार' पर है जिसे वे सत्य मानकर पोषित कर रहे हैं।

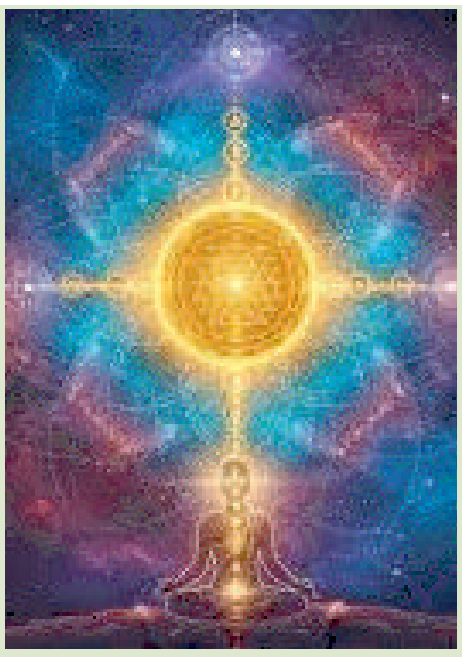

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, नन्दिकेश्वराय धीमहि, तन्नो वृषभरू प्रचोदयात

पिंकी कुंडू

नंदी केवल शिव का वाहन नहीं, अपितु शिव-तत्व की मौन चेतना का विस्तार है।

जहाँ शिव तांडव का प्रचंड स्वरूप है, वहीं नंदी समाधि का शांत बिंदु है।

महादेव के सामने नंदी की स्थिर दृष्टि यह बताती है कि भक्ति का सार बाहरी आडंबर में नहीं, भीतर की अविचल एकाग्रता में है।

नंदी वह ऊर्जा है जो साधक को काम-क्रोध-लोभ से पार कर तन्मयता की स्थिति तक ले जाती है।

जिस घर या स्थान पर नंदी की उपस्थिति होती है वहाँ शुचिता, धैर्य और आध्यात्मिक संरक्षण की शक्तियाँ प्रबल होती हैं। तंत्र परंपरा में नंदी साधना को शिव-दीक्षा का द्वार माना गया है, क्योंकि नंदी वही सुनता है जो हृदय से निकला हो, शब्दों से नहीं।

नंदी का संदेश सरल है – मन को स्थिर करो, विचारों को पवित्र करो और अपने भीतर महादेव के लिए स्थान बनाओ।

जो साधक नंदी की उपासना करता है, उसकी अंतर्यात्रा में अदृश्य संरक्षण और दिव्य मार्गदर्शन सहज प्रकट होता है।

नंदी का ध्यान मन को समाधि की ओर ले जाए, और शिव-तत्व की अनुभूति आपके भीतर जागृत हो।

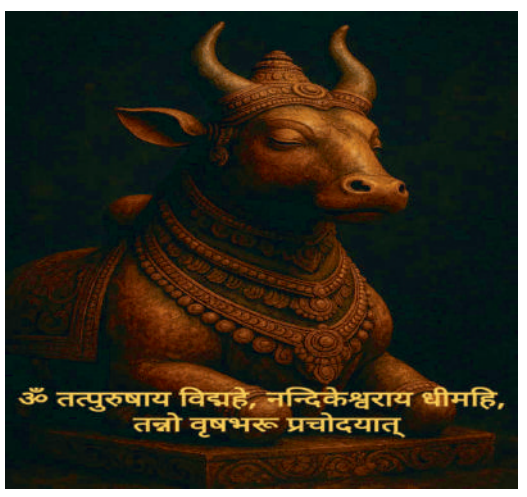

प्रभु के आगे करने वाली मांगे/ प्रार्थना

पिंकी कुंडू

1 - हे मेरे स्वामी ! मेरी इच्छा कभी पूर्ण न हो... सदैव आपकी ही इच्छा पूर्ण हो... क्योंकि मेरे लिए क्या सही है... ये मुझसे बेहतर आप जानते हैं।

2 - हे नाथ ! मेरे मन, कर्म और वचन से कभी किसी को भी थोड़ा सा भी दुःख न पहुँचे... यह कृपा बनाये रखें।

3 - हे नाथ ! मैं कभी न पाप करूँ न होता देखूं.. न सुनू.. और न ही कभी किसी के पाप का बखान करूँ।

4 - हे नाथ ! शरीर के सभी इन्द्रियों से आठो पहर... केवल आपके प्रेम भरी लीला का ही आस्वादन करता रहूँ।

5 - हे नाथ ! प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थिति में भी... आपके मंगलमय विधान देख सदैव प्रसन्न रहूँ।

6 - हे नाथ ! अपने ऊपर महान से महान विपत्ति आने पर भी... दूसरों को सदैव सुख ही दिया करूँ।

7 - हे प्रभु ! अगर कभी किसी कारणवश मेरे वजह से किसी को दुःख पहुँचे तो उसी समय उससे हाथ जोड़कर क्षमा माँग लूँ।

8 - हे प्रभु ! आठो पहर रोम रोम से केवल आपके नाम का ही जप होता रहे।

9 - हे प्रभु ! मेरे आचरण, श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानस के अनुकूल हों।

10 - हे मेरे प्रभु ! हर एक परिस्थिति में मुझे आपके ही दर्शन हों।

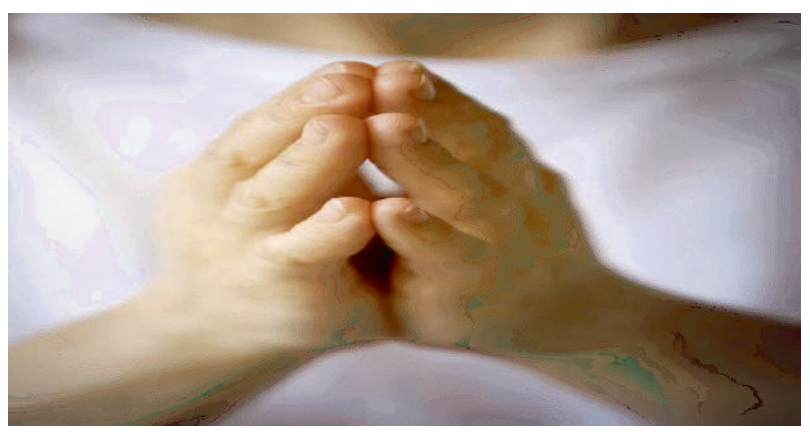

"आप वही बनते हैं, जो आप रोज अपने मन में सोचते हैं।"

पिंकी कुंडू

मनुष्य को उसके कर्म नहीं, पहले उसके विचार बनाते हैं। और उसके विचारों को बनाती है -उसकी आंतरिक दृष्टि।

रामायण केवल युद्ध की कथा नहीं है, यह विचार से व्यक्तित्व बनने की यात्रा है।

श्रीराम राजा नहीं बने थे -वे पहले मन से राम बने थे।

वनवास उन्हें मिला पर उन्होंने अपने मन में कभी वनवास को "दंड" नहीं बनाया। उन्होंने उसे योग बना दिया, साधना बना दिया, सेवा बना दिया।

अगर राम अपने मन में यह ठान लेते कि "मेरे साथ अन्याय हुआ है"

तो इतिहास में एक क्रोधित राजकुमार लिखे जाते।

लेकिन उन्होंने सोचा "यह ईश्वर की योजना है" और वे बन गए —"मर्यादा पुरुषोत्तम।

अशोक वाटिका में बैठी सीताजी अगर अपने मन में यह सोच लेती कि — "मैं अब टूट चुकी हूँ" तो वह सच में टूट जातीं।

लेकिन उन्होंने सोचा —"मैं राम की अर्धांगिनी हूँ, मैं शक्ति हूँ" और वही शक्ति उनका कवच बन गई।

रावण उन्हें छू भी नहीं सका क्योंकि वह पहले उनके मन से हार चुका था।

हनुमान जी ने कभी पहले से नहीं माना था कि वे महान हैं। वे तो स्वयं को "सेवक" मानते थे।

लेकिन जैसे ही जामवंत जी ने कहा कि "तुममें अपार शक्ति है" हनुमानजी ने सिर्फ सोचा नहीं, स्वीकार किया। और उसी क्षण एक वानर देवता बन गया।

अगर वे सोचते कि "मैं छोटा हूँ" तो लंका आज भी अपार दूर होती।

वहीं दूसरी और जबकि रावण परम ज्ञानी था, शिव भक्त था, पर उसने अपने मन में यह विचार पाल लिया था कि "मैं अजेय हूँ।"

यही एक विचार बना उसका अंत।

जब मन में अहंकार बैठता है, तब लंका का जलना तय हो जाता है।

आप आज जैसे सोचते हैं, आप वही बनते चले जा रहे हैं।

अगर आप सोचते हैं कि मेरे बस का नहीं; मेरे साथ हमेशा गलत होता है; मेरे पास साधन नहीं हैं—तो आप धीरे-धीरे वही बन जाते हैं — असहाय।

लेकिन अगर आप सोचते हैं —

1. मैं बदल सकता हूँ
2. ईश्वर मेरे साथ है
3. मैं साधना में हूँ

तो भीतर से एक हनुमान, एक राम, एक सीता जन्म लेने लगते हैं।

आप आज अपने मन में राम को पाल रहे हैं या रावण को?

क्योंकि याद रखिए कि "आप वही बनते हैं, जो आप रोज अपने मन में सोचते हैं।"

और रामायणजी यही सिखाती हैं कि "विचार ही सबसे पहला युद्ध होता है।"

शिव और गण — अपूर्णता को दिव्यता में बदलने वाली शक्ति

पिंकी कुंडू

जब भगवान शिव अपने गणों के साथ दिखाई देते हैं, तो यह सिर्फ एक दिव्य दृश्य नहीं होता— यह संदेश होता है कि ब्रह्मांड का सबसे बड़ा योगी उन ऊर्जाओं को भी अपने साथ रखता है जिन्हें दुनिया "अराजक", "अनियंत्रित" या "असमझ" कहती है।

गण चाहे योगी हों, आत्माएँ हों, या अद्भुत दिव्य शक्तियाँ—

इन सबकी उग्र, जंगली और अनगढ़ ऊर्जा शिव के सान्निध्य में संतुलन, दिशा और उद्देश्य पाती है।

शिव शासन से नहीं, स्वीकृति से जोड़ते हैं।

वह किसी पर भय या दबाव से नहीं चलते—

उनके पास आने वाला हर गण उनकी सच्चाई, स्वतंत्रता और प्रेम से बंध जाता है।

यही कारण है कि शिव और गण हमें सिखाते हैं:

दिव्यता कभी अपूर्णता को अस्वीकार नहीं करती उसे रूपांतरित करती है।

मन का सबसे जंगली कोना भी शांति पा सकता है, जब उसे जागरूकता और प्रेम से अपनाया जाए।

शिव की शक्ति यही है—वह दुनिया से नहीं डरते, दुनिया उनसे सीखती है।

हर वह व्यक्ति जो खुद को टूटा, बिखरा या "अलग" समझता है

शिव और गण उसे याद दिलाते हैं—

तुम भी पूर्ण हो, तुम भी दिव्य हो, और तुम्हें भी अपनापन मिल सकता है।

कुल देवी, कुल देवता और ग्राम देवी-देवता, दो शक्तियों की रहस्यमयी दुनिया, जिनके बिना अधूरी है हर पूजा

पिंकी कुंडू

भारत के धार्मिक और सामाजिक जीवन में कुलदेवी-कुलदेवता और ग्राम देवी-देवता की अवधारणाएं सिर्फ पूजा के लिए नहीं, बल्कि पहचान, पूर्वज-स्मृति और सुरक्षा के लिए खड़ी की गई थीं. यही वजह है आज भी इन नियमों का पालन पूरे अनुशासन के साथ किया जाता है.

कुलदेवी-कुलदेवता, वंश की आध्यात्मिक रीढ़ वैदिक और स्मृति ग्रंथों में मूल इसके बारे में विस्तार से बताया गया है. ये परंपरा कुछ वर्षों की नहीं बल्कि सैकड़ों सालों से चली आ रही है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी ट्रांसफर होती चली आ रही है. आज के आधुनिक दौर में भी इनकी अनदेखी करने की हिम्मत किसी में नही है.

इस परंपरा के निशान ऋग्वेद में कुल और गण के साथ देवताओं की संरचना में मिलती है. मनुस्मृति (3.203) में स्पष्ट बताया गया है कि ₹₹कुलस्य रक्षणार्थं तु कुलदेवतां समाचरेत्₹₹ .` इसका अर्थ है कि वंश की रक्षा के लिए कुलदेवता की पूजा की जाए.

इसी प्रकार प्राचीन ग्रंथ जैसे याज्ञवल्क्य स्मृति और पाराशर स्मृति में कुलदेवता को पितरों के तुल्य पूजनीय माना गया है.

⚜कुलदेवता कौन होता है?

एक विशेष गोत्र, वंश या जाति के लिए तय किया गया ईष्ट या रक्षक देवता. उनकी पहचान पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा, कुल पुरोहित, या पारिवारिक मंदिर से होती है.

कुलदेवता की पूजा कब और क्यों?

1. विवाह, मुंडन, गृह प्रवेश, उपनयन जैसे संस्कारों से पहले.

2. कई घरों में देवता की मूर्ति, चित्र को रखकर विधिपूर्वक पूजन किया जाता है.

ग्राम देवी या ग्राम देवता, गांव की सीमा पर बैठे रक्षक! इसकी उत्पत्ति के बारे में आदिवासी संस्कृति, द्रविड़ परंपरा और पुराणों में व्यापक उपस्थिति देखने को मिलती है. स्कन्द पुराण में ग्रामपाल का उल्लेख मिलता है जो महामारी और बुरी शक्तियों से गांव की रक्षा करता है.

यह पूजा क्यों जरूरी है?

1. गांव में वर्षा, फसल, महामारी, आग, अकाल से बचाव के लिए.

2. नवरात्रि, चैत्र मास, जत्रा और अमावस्या पर विशेष पूजा.

ग्राम देवी के कुछ प्रख्यात रूप क्षेत्र ग्राम देवी नाम-`

1. उत्तर भारत - शीतला माता, भैरव बाबा

2. महाराष्ट्र- ज त्र ा देवी, खंडोबा

3. तमिलनाडु- मरियम्मा, एलम्मा

4. पश्चिम बंगाल- म न सा देवी, शोशी देवी

कुल देवता और ग्रामदेवता में क्या अंतर है?

1. पक्ष कुलदेवी या कुलदेवता ग्राम देवी या देवता

2. उत्पत्ति वैदिक-स्मृति परंपरालो क - आ दि वा सी परंपरा

3. संबंध गोत्र, कुल, वंश गांव, क्षेत्रीय समाज

4. पूजा विधि, कु ल पुरोहित द्वारा जाति या क्षेत्र विशेष पुजारी

5. उद्देश्य वंश की रक्षा, संस्कार ग्राम की सुरक्षा, आपदाओं से बचाव

6. पूजा का समय विवाह, उपनयन, गृहप्रवेश वार्षिक मेले, महामारी, अमावस्या

7. स्थानकुल मंदिर या घर का पूजा स्थान, ग्राम की सीमा, वृक्ष या चबूतरा

दोनों का धार्मिक अर्थ

कुलदेवता:- पूर्वजों की आत्मा की सुरक्षा और मार्गदर्शक शक्ति

ग्रामदेवता:- भौगोलिक, जैविक और सामाजिक संकटों के विरुद्ध रक्षक

इन दोनों को समझना अपनी मूल, परंपरा और सामाजिक संरचना को समझना है.

आज के दौर में क्यों आवश्यक है

1. आज के शहरों में रहते हुए भी लोग कुलदेवी के दर्शन के बिना विवाह नहीं करते.

2. ग्रामदेवता के मंदिरों में अब भी मेला, बलिदान और परिक्रमा की परंपरा जीवित है.

3. यह लोक-शक्ति और शास्त्र-शक्ति का अद्भुत संगम हैं.

कुलदेवी या कुलदेवता की पूजा न करने से कौन से ग्रह अशुभ होते हैं?

चंद्रमाः- मानसिक अशांति, परिवार में कलह

मंगलः- विवाह और संतान में बाधा

गुरुः- धर्म से भटकाव, संस्कारों में विघ्न

शनिः- पितृदोष, बार-बार विफलता, आर्थिक संकट

क्या प्रभाव होते हैं?

1. विवाह, संतान, नौकरी और घर में बार-बार रुकावट

2. अकारण भय, बुरे स्वप्न, पूजा में अरुचि

3. परिवार में कलह और पीढ़ियों में रोग

लेकिन यदि कोई अपनी कुलदेवी या देवता नहीं जानता, तो क्या करें?

1. बुजुर्गों से पूछें- अपने परिवार के सबसे वृद्ध सदस्य से पूछें, जैसे हमारे यहां किसकी पूजा होती थी विवाह से पहले?

2. परिवार के पुराने चित्र, मंदिर, पूजा सामग्री देखें- कई बार घर में रखे गए प्राचीन चित्र, मूर्ति, सिंदूर, फूल की शैली संकेत देते हैं।

3. कुल पुरोहित या गोत्र-सम्बंधी ब्राह्मण से पूछें- यदि आपके गोत्र या वंश के कुलपुरोहित का नाम ज्ञात है, उनसे संपर्क करें।

4. पूर्वजों की भूमि (मूल ग्राम) जाएं- वहां स्थित गांव का प्रमुख मंदिर और उसकी देवी या देवता अक्सर आपका कुलदेवता हो सकता हैं।

जब कुछ ज्ञात न हो यदि सभी स्रोतों से जानकारी न मिले, तो शास्त्र सलाह देता है-`

1. यदि कुलदेवता अज्ञात हो, तो ईष्ट देव रूप में विष्णु, शिव या देवी दुर्गा की आराधना की जा सकती है।

2. धर्मसिंधु और निरुक्त ग्रंथों में यह निर्देश मिलता है कि कुलदेवता अज्ञात हो तो साधक अपने चित्त में जो भी देवी/देवता को अपना रक्षक माने, उसे कुलदेवता रूप में पूजे.

यह जानकारी क्यों जरूरी है?

1. कुलदेवता हमें हमारी पहचान से जोड़ते हैं.

2. ग्रामदेवता हमें हमारे समुदाय और भूगोल से जोड़ते हैं.

3. इन दोनों को जानना अपने रूट्स को जानना है.

यह नहीं भूलना चाहिए कि असली भारत गांवों में बसता है. यह वे मजबूत परंपराएं हैं जो दौड़ती-भागती और व्यस्त जिंदगी में भी लोगों को अपनी जड़ों से जुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं.

Q1. क्या हर कुल की कुलदेवी अलग होती है? हां, भिन्न गोत्र या जातियों की अलग-अलग कुल देवियां हो सकती हैं.

Q2. क्या ग्रामदेवी और कुलदेवी एक ही हो सकती हैं? कभी-कभी गाँव में एक ही देवी को दोनों रूपों में पूजा जाता है, पर परंपरागत रूप से यह अलग होती हैं.

Q3. क्या कुलदेवता को बिना जानकर पूजा कर सकते हैं? नहीं, सही जानकारी और कुल परंपरा से ही पूजा फलदायी मानी जाती है.

सफला एकादशी 2025, कब है 14 या 15 दिसंबर ?

पिंकी कुंडू

सनातन धर्म में एकादशी व्रत का विशेष महत्व है। इस दिन भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करने का विधान है। साथ ही सभी पापों से मुक्ति पाने के लिए व्रत भी किया जाता है।

वैदिक पंचांग के अनुसार, पौष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी को सफला एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस व्रत को करने से जीवन में सुख-शांति बनी रहती है। सफला एकादशी २०२५ तिथि और शुभ मुहूर्त वैदिक पंचांग के अनुसार, पौष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि की शुरुआत 14 दिसंबर को रात 08 बजकर 46 मिनट पर हो रही है। वहीं, इस तिथि का समापन 15 दिसंबर को रात 10 बजकर 09 मिनट पर हो रहा है। ऐसे में 15 दिसंबर को सफला एकादशी व्रत किया जाएगा और व्रत का पारण अगले दिन 16 दिसंबर को किया जाएगा। सफला एकादशी पारण तिथि और समय एकादशी व्रत का पारण द्वादशी तिथि पर किया जाता है। 16 दिसंबर को व्रत का पारण करने का समय सुबह 06 बजकर 55 मिनट 09 बजकर 03 मिनट तक है।

जरूर करें इन चीजों का दान एकादशी के दिन दान करने का विशेष महत्व है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना करें और मंदिर या फिर गरीब लोगों में अन्न-धन समेत आदि चीजों का दान करें। धार्मिक मान्यता के अनुसार, एकादशी के दिन दान करने से धन लाभ के योग बनते हैं और साधक को जीवन में कोई कमी नहीं होती है।

सफला एकादशी पूजा सामग्री सूची

1. दीपक
२. पीला कपड़ा
३. फूल
4. कुमकुम
5. पंचमेवा
6. अक्षत
7. फल
8. मिठाई
9. चौकी
10. धूप
11. आम के पत्ते
१२. भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की प्रतिमा
१३. तुलसी के पत्ते

व्रत के दौरान इन बातों का रखें ध्यान एकादशी व्रत के दौरान नियम का पालन जरूर करना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि व्रत से जुड़े नियम का पालन न करने से साधक अशुभ फल की प्राप्ति से वंचित रहता है।

* व्रत के दिन तामसिक भोजन का सेवन न करें।
* साथ ही किसी से वाद-विवाद न करें।
* किसी के बारे में गलत न सोचें।
* तुलसी के पत्ते न तोड़ें।
* एकादशी के दिन तुलसी के पौधे में जल देने की मनाही है।
* भगवान विष्णु के भोग में तुलसी के पत्ते जरूर

सुन्दरकाण्ड पाठ से शीघ्र ही प्रसन्न होकर मनवांछित फल प्रदान करते हैं श्रीहनुमानजी महाराज : अनिरुद्धाचार्य महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। परिक्रमा मार्ग स्थित गौरी गोपाल आश्रम में मां सीता रसोई के सौजन्य से श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के द्वारा प्रमुख समाजसेवी ₹पंजाब रत्न₹ बहिन मनप्रीत कौर (लुधियाना) के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सुंदर काण्ड का संगीतमय सामूहिक पाठ किया गया।जिसमें कई प्रख्यात सन्तों, विद्वानों, धर्माचार्यों एवं तमाम भक्तों-श्रद्धालुओं ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर गौरी गोपाल आश्रम के संस्थापक अध्यक्ष व विश्वविख्यात भागवताचार्य डॉ. अनिरुद्धाचार्य महाराज ने कहा कि सुंदरकांड का पाठ सभी बाधाओं को दूर करने वाला है।इस पाठ को करने से श्रीहनुमानजी महाराज शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करते हैं। भगवताचार्य सुमंत कृष्ण शास्त्री एवं प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज भक्ति शिरोमणि हैं।कलिकाल में श्रीहनुमानजी की आराधना के बिना भगवान श्रीरामजी की भक्ति प्राप्त कर पाना असम्भव है।

मां सीता रसोई की संचालिका ₹पंजाब रत्न₹ बहिन मनप्रीत कौर (लुधियाना) एवं प्रबंधक आचार्य अंशुल पाराशर ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज समस्त सद्गुणों की खान हैं। उनमें वीरता, स्वामी भक्ति, बुद्धि-ज्ञान आदि का भंडार है।जो व्यक्ति जिस कामना से उनकी पूजा-अर्चना करता है,उसकी कामना वे निश्चित ही पूर्ण करते हैं। कार्यक्रम में श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के अध्यक्ष अशोक व्यास, बागेश्वर धाम के परम लाडले आचार्य रोहित रिछारिया, आचार्य बद्रीश महाराज, धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण शास्त्री, आचार्य विमल कृष्ण पाठक, आचार्य शिवम साधक, आचार्य अश्विनी मिश्रा, आचार्य श्रीराम मुद्गल, आचार्य बुद्धिप्रकाश शास्त्री,श्याम सुन्दर ब्रजवासी, स्वामी सत्यमित्रानंद महाराज, सन्त रामदास महाराज (अयोध्या), आचार्य अंकित कृष्ण शास्त्री, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, चैतन्य किशोर कटारे, स्वामी रामशरण शर्मा, स्वामी प्रेमशरण शर्मा, आचार्य मुकेश मोहन शास्त्री, आचार्य घनश्याम दुबे, धर्मवीर शास्त्री, प्रियाशरण भक्तमाली, बाल व्यास ध्रुव शर्मा एवं आचार्य विपिन बापू आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन आचार्य सुमंत कृष्ण महाराज ने किया।धन्यवाद ज्ञापन व आभार व्यक्त आचार्य अंशुल पाराशर ने किया। बहिन मनप्रीत कौर ने आयोजन में उपस्थित सभी महानुभावों को कंबल सप्रेम भेंट किए।

कार्यक्रम का समापन सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ पर वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना का संबोधन - राष्ट्र की आत्मा और स्वतंत्रता संग्राम की धड़कन है वंदे मातरम

परिवहन विशेष न्यूज

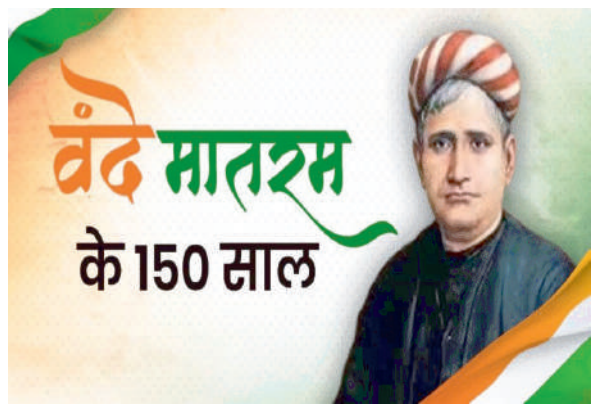

उत्तर प्रदेश, संजय सिंह। वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने इसे राष्ट्र की आत्मा और स्वतंत्रता संग्राम की धड़कन बताते हुए देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले सभी ज्ञात अज्ञात वीरों को विनम्र नमन किया।

वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने कहा कि वंदे मातरम् हमारी पहचान, हमारी आपसी एकता और हमारे सामूहिक भविष्य का प्रण है। वीरों का बलिदान केवल इतिहास नहीं, राष्ट्र की अनंत प्रेरणा शक्ति है। उन्होंने तीन सूत्रों को याद रखने पर बल दिया आपसी एकता हमारी शक्ति, बलिदान हमारा मार्ग और भारत माता हमारी आत्मा है।

उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान, तपस्या और मातृभूमि के प्रति अनन्य प्रेम की गूंज इस गीत की हर पंक्ति में आज भी सुनाई देती है। यही कारण है कि वंदे मातरम् ने दासता के अंधकार में करोड़ों भारतीयों के दिलों में स्वतंत्रता की लौ प्रज्ज्वलित रखी।

वरिष्ठ समाजसेवी ने महान तमिल कवि सुब्रमण्य भारती के उस विचार का भी उल्लेख किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि वंदे मातरम् का स्वर विश्वभर में तेजस्विता और आपसी एकता का प्रकाश फैलाता है। उन्होंने कहा कि बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की लेखनी से निकला यह कालजयी गीत उस दौर में जन्मा जब मातृभूमि पर उपनिवेशवाद का भारी प्रतिबंध था, लेकिन यह देखते ही देखते पूरे राष्ट्र की साझा धड़कन बन गया। वंदे मातरम्-केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत माता के प्रति अदम्य साहस, त्याग और समर्पण की शाश्वत भावना है।

समापन में वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने स्मरण कराया कि यह गीत धर्म, मजहब, भाषा और भौगोलिक सीमाओं से परे पूरे देश को एक सूत्र में पिरोता आया है। लाखों स्वतंत्रता सेनानियों के लिए वंदे मातरम् केवल प्रेरणा नहीं था यह वीरों की अंतिम पुकार था, जब वे हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर चढ़ते हुए मातृभूमि के स्वप्न को हृदय में लिए इसे उच्चारित करते थे।

लाखों की लागत से बना सामुदायिक शौचालय बना शोपीस!लटके ताले

परिवहन विशेष न्यूज

बंदायु। ग्रामीणों का आरोप पंचायत घर पऱ लगे रहते ताले आवश्यक कार्य पर भी समय भी नहीं खुलता पंचायत घर गांव में लगे सरकारी हैडपंप पड़े है खराब, बार बार शिकायत के बाबजूद भी ग्राम प्रधान पर ठीक न कराने का आरोप गांव में सफाई न होने के कारण पनप रही गंदगी !कीचड़ भरे रास्ते से होकर गुजरने को मजबूर है ग्रामवासी व राहगीर गलियों में फैली गंदगी नाले,नालियों में कीचड़ से पनप रहे हैं जानलेवा मच्छर ! जिसकी बजह से गाँव में बीमारी फैलने का खतरा बढ़ा ग्राम प्रधान के मनमाने रवैया के चलते ग्रामीणों में भारी आक्रोश

जिम्मेदारों पर मनमानी और दबंगई के लगे गंभीर आरोप

शिकायत के बाबजूद भी नहीं हुई कोई कार्यवाही !

स्वच्छता अभियान को लगातार पलीता लगा रहे जिम्मेदार !काम काज केवल कागजों तक सीमित !उच्च अधिकारियों को किया जा रहा है गुमराह

R.R.C (रिसोर्स रिकवरी सेंटर) पर लगाए जा रहे उपले

खबर संबंधित वीडियो फोटू सोशल मीडिया पर वायरल

पूरा मामला इस्लामनगर ब्लॉक की ग्राम पंचायत बझेड़ा का है।

दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की बड़ी कार्रवाई, अंतरराज्यीय अवैध हथियार तस्करी गिरोह का सदस्य गिरफ्तार

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल (सदर्न रेंज) ने अवैध हथियारों की सप्लाई लाइन तोड़ने की दिशा में बड़ी सफलता हासिल करते हुए एक अंतरराज्यीय अवैध हथियार तस्करी गिरोह के सक्रिय सदस्य को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से 11 उच्च गुणवत्ता की सेमी-ऑटोमैटिक पिस्टल और 11 अतिरिक्त मैगजीन बरामद की गई हैं। ये हथियार मध्य प्रदेश से लाकर दिल्ली और एनसीआर के अपराधियों को सप्लाई किए जाने थे।

स्पेशल सेल को लगातार यह सूचना मिल रही थी कि दिल्ली और एनसीआर के गैंगस्टर व शातिर अपराधी मध्य प्रदेश स्थित हथियार निर्माताओं और डीलरों से अवैध हथियार मंगवा रहे हैं। इसी कड़ी में स्पेशल सेल/सदर्न रेंज की एक टीम, जिसका नेतृत्व इंस्पेक्टर रंजीत सिंह और इंस्पेक्टर संजीव कुमार कर रहे थे तथा जो एसीपी नीरज कुमार की निगरानी में काम कर रही थी, पिछले एक महीने से इस नेटवर्क की पहचान और भंडाफोड़ में जुटी हुई थी।

लगातार तकनीकी और मानवीय सूचना संकलन के बाद गिरोह के कुछ सदस्यों की पहचान की गई। इसी दौरान 9 दिसंबर 2025 को स्पेशल सेल को एक पुख्ता सूचना मिली कि इस हथियार तस्करी सिंडिकेट का एक सदस्य मनपाल, मध्य प्रदेश के सेंधवा से अवैध पिस्टलों की खेप लेकर दिल्ली आ रहा है और इन्हें सराय काले खां क्षेत्र में सप्लाई करने वाला है।

सूचना के आधार पर इंस्पेक्टर रंजीत सिंह के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित कर जाल बिछाया गया। 9 दिसंबर की देर रात संदिग्ध व्यक्ति को चिन्हित कर घेराबंदी की गई और उसे काबू कर लिया गया। तलाशी लेने पर आरोपी के पास से 11 सेमी-ऑटोमैटिक पिस्टल (.32 बोर) और 11 अतिरिक्त मैगजीन बरामद की गईं।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान मनपाल पुत्र कल्याण, उम्र 22 वर्ष, निवासी बिजलिपुरा, मुरैना, मध्य प्रदेश के रूप में हुई है। आरोपी के खिलाफ थाना स्पेशल सेल में एफआईआर संख्या 302/25, दिनांक 10.12.2025, धारा 25/25(8) आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

पूछताछ में आरोपी ने खुलासा किया कि वह ये पिस्टल मध्य प्रदेश के सेंधवा स्थित एक हथियार सप्लायर से खरीदता था और उन्हें दिल्ली व एनसीआर के अपराधियों को बेचता था। उसने यह भी स्वीकार किया कि वह अब तक 25 से अधिक अवैध पिस्टल मध्य प्रदेश से लाकर दिल्ली-एनसीआर में विभिन्न अपराधियों को सप्लाई कर चुका है।

दिल्ली पुलिस के अनुसार, इस मामले में अन्य आरोपियों और पूरे नेटवर्क की पहचान के लिए आगे की जांच जारी है। पुलिस को उम्मीद है कि इस कार्रवाई से दिल्ली और एनसीआर में अवैध हथियारों की सप्लाई पर बड़ा असर पड़ेगा।

यह जानकारी डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस, स्पेशल सेल (सदर्न रेंज) श्री आलाप पटेल द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में दी गई।

किताबों में बंद कहानियाँ हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक विकास का आधार हैं।

डॉ.मुश्ताक़अहमद शाह

किताबें केवल काग़ज़ के पन्नों का ढेर नहीं होतीं। ये मानव के सदियों पुराने अनुभव, ज्ञान, आशाएँ और आँसुओं का अमूल्य संग्रह होती हैं। कहानियाँ वास्तव में हमारी संस्कृति, सभ्यता और सोच की दर्पण होती हैं। जब हम कहानियों को अपनाते हैं, तो हम अपने अतीत की आवाज़ और भविष्य की रौशनी से जुड़ते हैं। लेकिन जब हम इन्हें छोड़ देते हैं, तो हम अपनी पहचान, अपनी विरासत और अपनी सच्चाई से कट जाते हैं।

कहानियाँ क्यों ज़रूरी हैं?

1. पहचान और परिवार से जुड़ाव।

कहानियाँ हमें हमारी असली पहचान से जोड़ती हैं। यह हमारे पूर्वजों के संघर्ष, रीति-रिवाज और मूल्यों को सहेजकर, पीढ़ियों के बीच पुल का काम करती हैं।

2. ज्ञान और अनुभव का आदान-प्रदान।

खाली बातों की जगह कहानियों के ज़रिये सीखना आसान और असरदार होता है। इनमें ज्ञान और नैतिकता प्राकृतिक ढंग से समाहित होती हैं।

3. कल्पना और सृजन।

जब हम कहानियाँ पढ़ते या सुनते हैं, तो हमारा मन नए-नए संसारों की रचना करता है, समस्याओं के नए समाधान खोजता है और जीवन के अनगिनत रंग खोजता है।

4. समझ और संवेदना।

दूसरों के अनुभवों, संघर्षों और सपनों से अवगत होकर हमारे भीतर करुणा विकसित होती है। यही भावना समाज को मानवता से जोड़ती है।

कहानियाँ छोड़ देना, क्या खो बैठते हैं?

कहानियाँ पढ़ना या सुनना बंद करने का अर्थ सिर्फ किताबें बंद करना नहीं है, बल्कि,

अपनी जड़ों से कट जाना

सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भूल जाना

कल्पना और रचनात्मकता की शक्ति को खो देना

भिन्न संस्कृतियों और विचारों से अनजान रह जाना

और इस तरह सामाजिक चेतना में गिरावट आ जाना

हम क्या कर सकते हैं?

कहानियों को अपने और अपने बच्चों के जीवन में शामिल करें।

परिवार और मित्रों के साथ कहानियाँ साझा करें; अपने अनुभव सुनाएँ, दूसरों की कहानियाँ सुनें।

नई किताबें पढ़ें और पुरानी, अर्थपूर्ण कहानियों को ज़िंदा रखें।

कहानियों से मिले सबक को अपने हर रोज़ के निर्णयों और व्यवहार में लाएँ।

कहानी सिर्फ़ शब्द नहीं होती, वह सपना होती है, सबक होती है, भावना होती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलने वाली विरासत होती है। किताबों में बंद कहानियाँ हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक विकास का आधार हैं। इन्हें पढ़ना, बाँटना और समझना, ख़ुद से जुड़ने और समाज से जुड़े रहने का सबसे सहज और सुंदर तरीका है।

कहानियाँ जीवन हैं,

इनसे जितना जुड़ते जाएँगे, उतना ही अपनी असल पहचान, सभ्यता और चेतना से भी जुड़ते जाएँगे।

विद्युत (संशोधन) विधेयक 2025 और समय- आधारित (टाइम-ऑफ़-डे) टैरिफ-नियम, नीति और राष्ट्रीय ऊर्जा सुधार की नई दिशा-एक समग्र अंतरराष्ट्रीय- स्तरीय विश्लेषण

विज़न 2047 में टाइम-ऑफ-डे टैरिफ व्यवस्था भारत को न केवल ऊर्जा दक्ष बनाएगी, बल्कि उसे वैश्विक ऊर्जा संक्रमण की मुख्यधारा में भी स्थापित करेगी- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर भारत का बिजली क्षेत्र अब एक ऐतिहासिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है।दशकों तक देश में बिजली बिलिंग की प्रणाली मुख्यतःयूनिट-आधारित रही, जहाँ उपभोक्ता द्वारा खपत की गई कुल बिजली के आधार पर शुल्क तय होता था,समय का कोई विशेष महत्व नहीं होता था। किंतु बदलती ऊर्जा आवश्यकताओं बढ़ती मांग, नवीकरणीय ऊर्जा केविस्तार और ग्रिड प्रबंधन की जटिलताओं ने इस परंपरागत मॉडल को अप्रासंगिक बना दिया है।इसी पृष्ठभूमि में भारत सरकार और विद्युत नियामक संस्थाओं ने समय आधारित बिजली टैरिफ (टाइम ऑफ़ डे टैरिफ़) को लागू करने का संभावित निर्णय की और अग्रसर है, जिसके तहत दिन, रात, सुबह और शाम अलग-अलग दरों पर बिजली बिल लगेगा। यह प्रणाली अगले 3 से 6 महीनों में चरणबद्ध तरीके से पूरे देश में लागू की जा रही है।यह परिवर्तन कोई तात्कालिक प्रशासनिक निर्णय नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक सुदृढ़ कानूनी ढांचा, राष्ट्रीय ऊर्जा नीति, टैरिफ नीति संशोधन,और अंतरराष्ट्रीय अनुभवों पर आधारित रणनीति है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि विद्युत (संशोधन) विधेयक, 2025 को आधुनिक बिजली व्यवस्था की आवश्यकता और ऊर्जा संक्रमण की राष्ट्रीय रणनीति के अनुरूप तैयार किया गया एक प्रमुख सुधारात्मक प्रस्ताव है। इसका उद्देश्य वितरण क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ाना,नियामकीय ओवरसाइट सुदृढ़ करना और उपभोक्ताओं को उनकी वास्तविक खपत के अनुसार भुगतान के लिए प्रेरित करना है।विधेयक की यह नींव पारंपरिक यूनिफ़ॉर्म-टैरिफ मॉडल से हटकर मांग-आधारित समय- संवेदी कीमत निर्धारण की ओर ले जाने का एक महत्त्वपूर्ण कदम है,जिसका सबसे निर्णायक उपकरण समय-आधारित टैरिफ है।विधेयक की प्रमुख धारणाएँ, टीओडी टैरिफ का वैज्ञानिक व आर्थिक तर्क, कार्यान्वयन चुनौतियाँ स्मार्ट मीटरिंग और ग्रिड-समर्थन तकनीकों की भूमिका, उपभोक्ता-प्रभाव (वंचित वर्गों सहित) मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से हम इसका विश्लेषण करेंगे।

साथियों बात अगर हम टाइम- ऑफ-डे टैरिफ क्या है और इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी? इसको समझने की करें तो, टाइम -ऑफ-डे टैरिफ वह व्यवस्था है जिसमें बिजली की कीमत इस बात पर निर्भर करती है कि बिजली किस समय उपयोग की जा रही है। उदाहरण के लिए,जब बिजली की मांग अत्यधिक होती है,जैसे शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक,उस समय दरें अधिक होंगी। वहीं जब मांग कम होती है,जैसे देर रात या दोपहर,तब बिजली सस्ती होगी। भारत में बिजली की मांग दिन के अलग- अलग समय पर अत्यंत असमान रहती है। पीक आवर्स में ग्रिड पर भारी दबाव पड़ता है,महंगे पावर प्लांट चालूकरने पड़ते हैं और कभी-कभी बिजली कटौती तक करनी पड़ती है। इसके विपरीत ऑफ-पीक समय में उत्पादन क्षमता का बड़ा हिस्सा निष्क्रिय रहता है।टीओडी टैरिफ का उद्देश्य मांग को संतुलित करना, ग्रिड स्थिरता बढ़ाना,और उपभोक्ताओं को समय के अनुसार खपत बदलने के लिए प्रेरित करना है।भारत में बिजली क्षेत्र का मूल कानूनी ढांचा विद्युत अधिनियम, 2003 (इलेक्ट्रिसिटी एक्ट,2003) है। यह अधिनियम केंद्र और राज्य दोनों सरकारों को बिजली उत्पादन, वितरण और टैरिफ निर्धारण के लिए व्यापक अधिकार देता है। अधिनियम की धारा 61 और 62 विशेष रूप से टैरिफ निर्धारण से संबंधित हैं, जिनमें कहा गया है कि टैरिफ आर्थिक दक्षता, उपभोक्ता हित, और संसाधनों के कुशल उपयोग को ध्यान में रखते हुए तय किया जाएगा।समय आधारित टैरिफ इसी अधिनियम की भावना के अनुरूप है, क्योंकि यह बिजली संसाधनों के बेहतर उपयोग और लागत-आधारित मूल्य निर्धारण को प्रोत्साहित करता है।अधिनियम किसी एक समान दर की बाध्यता नहीं लगाता, बल्कि नियामक आयोगों को नवाचार की स्वतंत्रता देता है।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय टैरिफ नीति 2016 और 2023 संशोधन की भूमिका इसको समझने की करें तो, टाइम -ऑफ-डे टैरिफ को वास्तविक रूप से अनिवार्य बनाने का कार्य राष्ट्रीय टैरिफ नीति (टैरिफ़ पालिसी) के माध्यम से किया गया। 2016 की टैरिफ नीति में पहली बार संकेत दिया गया कि बड़े उपभोक्ताओं के लिए समय आधारित टैरिफ अपनाया जाना चाहिए। किंतु यह प्रावधान सीमित और वैकल्पिक था।वास्तविक परिवर्तन 2023 में किए गए टैरिफ नीति संशोधन से आया। इस संशोधन में स्पष्ट रूप से कहा गया कि,डिस्कॉम को सभी उपभोक्ताओं के लिए चरणबद्ध तरीके से टाइम ऑफ़ डे टैरिफ़ लागू करना होगा।(1) स्मार्ट मीटर वाले उपभोक्ताओं के लिए यह व्यवस्था प्राथमिकता से लागू की जाएगी।(2) राज्य विद्युत नियामक आयोगों को पीक और ऑफ-पीक घंटों की अधिसूचना करनी होगी।यह संशोधन ही वह प्रत्यक्ष नीति आधार है जिसके तहत अब देशभर में दिन-रात के हिसाब से बिजली दरें तय की जा रही हैं।

साथियों बात अगर हम राष्ट्रीय विद्युत नीति और ऊर्जा संक्रमण का संदर्भ,राज्य विद्युत नियामक आयोगों की भूमिका,इसको समझने की करें तो,भारत की राष्ट्रीय विद्युत नीति का मूल उद्देश्य सस्ती, विश्वसनीय और सतत बिजली उपलब्ध कराना है।नीति यह स्वीकार करती है कि भविष्य की ऊर्जा व्यवस्था में सौर और पवन ऊर्जा की हिस्सेदारी लगातार बढ़ेगी। चूंकि ये स्रोत समय-निर्भर होते हैं, इसलिए पारंपरिक फ्लैट टैरिफ उनके अनुकूल नहीं है।दिन में जब सौर ऊर्जा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है, उस समय बिजली सस्ती होनी चाहिए। वहीं रात में, जब सौर उत्पादन नहीं होता, दरें स्वाभाविक रूप से अधिक होंगी। टीओडी टैरिफ इसी तार्किक ऊर्जा संतुलन को लागू करता है।टाइम-ऑफ-डे टैरिफ बिना स्मार्ट मीटर के संभव नहीं है। इसी कारण भारत सरकार ने रीवैम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (आरडीएसएस) के तहत करोड़ों स्मार्ट मीटर लगाने का लक्ष्य रखा है। स्मार्ट मीटर उपभोक्ता की बिजली खपत को रियल-टाइम में रिकॉर्ड करते हैं और यह बताने में सक्षम होते हैं कि किस समय कितनी बिजली उपयोग हुई।आरडीएसएस योजना का एक प्रमुख उद्देश्य ही यह है कि टैरिफ को डायनेमिक, पारदर्शी और तकनीक-आधारित बनाया जाए।टीओडी टैरिफ इसी योजना का स्वाभाविक परिणाम है।राज्य विद्युत नियामक आयोगों की भूमिका-हालाँकि नीति और दिशा -निर्देश केंद्र सरकार तय करती है, लेकिन वास्तविक टैरिफ निर्धारण का अधिकार राज्य विद्युत नियामक आयोगों के पास होता है। प्रत्येक राज्य अपने भौगोलिक, आर्थिक और खपत पैटर्न के अनुसार पीक और ऑफ-पीक समय निर्धारित करेगा।इसका अर्थ यह है कि दिल्ली, महाराष्ट्र, तमिलनाडु या उत्तर प्रदेश में पीक आवर्स अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन मूल सिद्धांत समान रहेगा -भीड़ वाले समय में महंगी बिजली और खाली समय में सस्ती बिजली।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय अनुभव और भारत की स्थिति इसको समझने की करें तो,टाइम-ऑफ-डे टैरिफ कोई भारतीय प्रयोग नहीं है। अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में यह प्रणाली वर्षों से लागू है। इन देशों के अनुभव बताते हैं कि टीओडी टैरिफ से (1) पीक डिमांड में 10-20 प्रतिशत तक कमी आई (2) ग्रिड फेल्योर और ब्लैकआउट की घटनाएँ घटीं (3) उपभोक्ताओं की ऊर्जा दक्षता बढ़ी, भारत अब उसी वैश्विक ऊर्जा सुधार पथ पर आगे बढ़ रहा है, लेकिन अपने सामाजिक- आर्थिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए।उपभोक्ताओं पर प्रभाव, अवसर और चुनौतियाँ,इस नई प्रणाली से उपभोक्ताओं को यह समझना होगा कि बिजली अब केवल कितनी नहीं, बल्कि कब उपयोग की जा रही है। जो उपभोक्ता वॉशिंग मशीन, पानी की मोटर, चार्जिंग और अन्य भारी उपकरण ऑफ-पीक समय में चलाएंगे, उनके बिल कम होंगे।हालाँकि शुरुआती दौर में जागरूकता की कमी, तकनीकी समझ और व्यवहारिक बदलाव चुनौती बन सकते हैं। इसलिए नीति में स्पष्ट किया गया है कि टीओडी टैरिफ क्रमिक रूप से लागू किया जाएगा, न कि एक झटके में।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि नियम आधारित सुधार,न कि तात्कालिक निर्णय,भारत में समय आधारित बिजली टैरिफ किसी एक आदेश या घोषणा का परिणाम नहीं है। यह विद्युत अधिनियम, 2003, राष्ट्रीय टैरिफ नीति (संशोधित 2023), राष्ट्रीय विद्युत नीति, और आरडीएसएस जैसी योजनाओं के संयुक्त प्रभाव से उभरा एक संरचनात्मक सुधार है।यह प्रणाली भारत को न केवल ऊर्जा दक्ष बनाएगी, बल्कि उसे वैश्विक ऊर्जा संक्रमण की मुख्यधारा में भी स्थापित करेगी। आने वाले वर्षों में बिजली केवल उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि समय-संवेदी आर्थिक संसाधन बन जाएगी—और यही इस ऐतिहासिक बदलाव का मूल उद्देश्य है।

मूर्खता के मंत्र से धूर्तता की साधना (आलेख : बादल सरोज)

इस सप्ताह शुरुआत राजनाथ सिंह ने की। उन्हें कुछ लोग उनकी पार्टी के रेवड़ में अलग तरह की – कम मरखनी, कम कटखनी प्रजाति -- का मानते हैं। शायद इसलिए कि राजनीति में अनेक पदों पर रहने के अनुभवों के अलावा वे पढ़े-लिखे भी माने जाते हैं, उनकी डिग्रियां असली हैं, कम-से-कम अभी तक उनको लेकर कोई शकोशुबहा नहीं है। भौतिकशास्त्र के व्याख्याता भी रहे हैं और अक्सर अटल बिहारी वाजपेई के अंदाज में बोलने की भी सायास, किन्तु असफल कोशिश करते रहते हैं। जो भले और भोले लोग अटल जी को अलग निराकार, निर्गुण कोटि का भाजपाई मानते थे, वे ही इनमें भी भिन्नता देखते हैं। तो इस बार शुरुआत इन्हीं ने की, यूं भी कह सकते हैं कि इन्हीं से करवाई गयी।

गुजरात के वडोदरा में एक सभा में उन्होंने रहस्योदघाटन-सा करते हुए दावा किया कि : "देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू पब्लिक फंड का इस्तेमाल करके बाबरी मस्जिद को फिर से बनवाना चाहते थे, लेकिन सरदार पटेल ने नेहरू के प्लान को कामयाब नहीं होने दिया।" विडम्बना यह थी कि इस तरह की साफ़-साफ़ विभाजनकारी बातें वे उस सभा में बोले, जिसे 'एकता रैली' बताया गया था। इस बयान के बाद, इसके खंडन में आये अनेक दस्तावेजी सबूतों, जिनकी कोई सफाई इनकी तरफ से नहीं आई, को छोड़ भी दें, तो अत्यत सरल-सी बात यह थी कि जिस कालखंड का वे जिक्र कर रहे थे, तब तक बाबरी मस्जिद सलामत थी, लिहाजा उसके बनाने या बनवाने का सवाल ही नहीं उठता था।

मगर उन्हें इस सबसे क्या : उन्हें इस अज्ञानता के सार्वजनिक इजहार के साथ जो करना था, वह उन्होंने कर लिया : बाबरी मस्जिद के गिराने की याद दिलाते हुए ध्रुवीकरण की मथनी में एक झोंटा लगा दिया। मूर्खता को साधन की तरह इस्तेमाल करके असाध्य को साधने की कला, जिस कुनबे के राजनाथ सिंह हैं, उसने अच्छी तरह साधी हुई है। गुजरात में बोलते हुए भी वे इसी का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे।

इसी का एक और नमूना डॉलर के मुकाबले रूपये की कीमत में लगातार, अनवरत जारी गिरावट को लेकर दिए गए कुतर्कों में दिखा। भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने अनूठा तर्क दिया कि ₹हमारे देश के लोग अपनी ज़ेब मे रुपया लेकर घूमते हैं, रूपये से खरीदारी करते हैं। हमें डॉलर से कोई लेना-देना नहीं है, डॉलर महंगा हो या सस्ता, हमारे देश के लोगों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।₹ अपने स्तरहीन अभिनय की तरह, उसी तरह की बेतुकी और सतही टिप्पणियों के लिए कुख्यात तिवारी जी को उनके ज्ञान की सीमा को देखते हुए कुछ छूट देने की सोची भी जा सकती है – मगर तब तक अच्छे-खासे शिक्षा संस्थान से अर्थशास्त्र की पढाई करने वाली और रुपये को अधोगति की तरफ ले जाने वाले विभाग की मुखियाइन, वित्त मंत्राणी निर्मला सीतारमण की उक्ति आ गयी, जिसमे उन्होंने इसे कोई ज्यादा चिंता करने की बात ही नहीं माना।

वे बोलीं कि ₹रुपया अपना लेवल खुद ही बना लेगा।₹ रूपये-डॉलर की कीमतों को लेकर विपक्ष में रहते हुए मोदी, भाजपा और स्वयं इनके द्वारा की गयी रसीली टिप्पणियों पर भी झाड़ू फेरते हुए निर्मला जी ने कहा कि तब आर्थिक हालात बिल्कुल अलग थे। भले ही रुपया कमजोर हुआ हो, लेकिन भारत की आर्थिक बुनियाद मजबूत है, इसलिए घबराने की जरूरत नहीं है।"

हालांकि यह दावा वे तब कर रही थीं, जब आईएमएफ ने उनकी अगुआई वाले वित्त मंत्रालय के जीडीपी इत्यादि के आंकड़ों को गलत और अविश्वसनीय करार देते हुए उन्हें 'सी' ग्रेड की श्रेणी में डाल दिया था। उनके बोलते ही उनके बाकी अनुचर भी ज्ञान देने उतर पड़े। रिज़र्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने रुपये की गिरावट को अनुल्लेखनीय घटना बताते हुए इसे आपदा में अवसर के मोदी सिद्धांत के तहत घरेलू मुद्रा को अपना स्तर खोजने की अनुमति देने वाला अवसर बताया, तो नीति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष राजीव कुमार जैसे कुछ विद्वान अर्थशास्त्रियों ने तो अर्थशास्त्र की अब तक की सारी समझदारियों को ही ताक पर रख दिया और कहा कि 'कमजोर रुपया वास्तव में अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक होता है, क्योंकि यह निर्यात को बढ़ावा देता है और अधिक रोजगार पैदा करता है', का सिद्धांत भी ठेल दिया।

मगर इस प्रतियोगिता में बाजी केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने मारी। मिथकों के अर्जुन की तरह उन्होंने सीधे निशाने पर वार करने की बजाय निशाना ही बदल दिया और एलान कर दिया कि डॉलर के मुकाबले उतार-चढ़ाव फालतू की बात है, असल में तो भारतीय रुपये की ताकत बढ़ रही है। वे यहीं तक नहीं रुके, उन्होंने रुपये की इस 'मजबूती' का श्रेय भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था के आकार और अन्य देशों के साथ बढ़ते व्यापार को दिया है। यह भी बताया कि 35 से अधिक देशों ने व्यापार के लिए भारतीय रुपये के उपयोग की अनुमति दी है, जिससे विदेश यात्रा करने वाले भारतीयों के लिए स्थानीय मुद्रा या अमेरिकी डॉलर में मुद्रा बदलने की आवश्यकता कम हो गई है।

अब इतने आला दर्जे की 'बुद्धिमत्ताओं' को ऐसे ही तो नहीं छोड़ा जा सकता : इनका स्मारक बनाकर मूर्त रूप देना भी बहुत जरूरी था, सो खुद सरकार ने हाथ बढाया और प्रधानमंत्री का हाल मुकाम बदल कर उसे सेवा तीर्थ नम्बर वन का नाम दे दिया। नौ साल में यह तीसरा नामकरण था ; पहले रेसकोर्स रोड से लोककल्याण मार्ग हुआ और अब तो तीरथ ही बन गया। आखिर नेहरू से मुकाबला भी तो करना है।

आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री के नाते उन्होंने बड़े-बड़े सार्वजनिक उद्योगों, निर्माणों और बांधों और चंडीगढ़, दुर्गापुर, भिलाई जैसे शहरों को भारत का आधुनिक तीर्थ बताया था – अब उनमे से ज्यादातर का मोदी जी अपने मित्र कारपोरेटों द्वारा भोग लगवा ही चुके हैं। मगर सेवा अभी अधूरी है, सो उसे पूरी करने के लिए मोदी ने खुद का पता ही सेवा तीर्थ वह भी नम्बर वन कर दिया। इसी की तुक में राजभवनों को भी लोकभवन बनाने की घोषणा भी कर दी गयी। ताज्जुब नहीं कि बात और आगे तक जाए और सांसदों, विधायकों, पार्षदों, पंचों, सरपंचों के घरों-मकानों को भी छोटे-मोटे देवताओं या उनके गणों के नाम का तीर्थस्थल बता दिया जाए।

जिस दिल्ली में तीर्थ बनाया जा रहा था, उसकी मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने भी ताल से ताल मिलाई और दिल्ली की गलघोंटू हवा और प्रदूषण से मुकाबले के लिए नयी शोध लेकर आ गयीं। उनका दावा रोचक था कि जहां सबसे ज्यादा प्रदूष्ण हो, वहां - हॉटस्पॉट पर - पानी छिड़ककर उसे कम किया जा सकता है। इस ज्यादा ही हास्यास्पद शेखचिल्लीपन का बचाव करते हुए कुनबे की मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि आखिर एक्यूआई - वायु गुणवत्ता सूचकांक - भी तो ₹एक तापमान की तरह है₹, इसलिए पानी का छिड़काव इसे कम करने का एक प्रभावी तरीका है। वायु गुणवत्ता सूचकांक को किसी भी थर्मामीटर से मापे जाने योग्य ₹एक तरह का तापमान₹ बताना बादलों की आड़ लेकर रडार को धोखा देने और नाली की गैस से चाय पकोड़ा बनाने जैसी 'वैज्ञानिक खोजों' की कड़ी में आगे की खोज है।

मूर्खत्व के यज्ञ में सप्ताह की आख़िरी आहुति वंदे मातरम पर दिन भर की बहस थी। इसके जरिये स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देश को जोड़ने वाले इस लोकप्रिय गान को जनता की एकता को तोड़ने के नफरती अभियान में बदलने के लिए पूरी ताकत लगा दी गयी। खुलकर हिन्दू-मुसलमान किया गया। जिन्होंने जब वन्देमातरम देश को एकजुट कर प्रेरित और उत्साहित कर रहा था, तब उसका 'व' तक नहीं बोला, जिस आर एस एस ने अपने पूरे 100 साल में एक बार भी वन्दे मातरम नहीं गाया, उनका अचानक इस गान के प्रति अनुराग जिस कुत्सित इरादे से था, उसे उन्होंने छुपाया भी नहीं।

बंगाल में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण को और तीखा करने के लिए इसका इस्तेमाल हो रहा है, यह खुद प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में बार-बार बंगाल का जिक्र करके एक तरह से खुद ही कबूल कर लिया। उन्होंने देश भर के इस गान को बंगाल तक ही सीमित कर दिया। जिस उपन्यास का यह हिस्सा है, उस आनंदमठ के लेखक बंकिम बाबू की बंगाली पृष्ठभूमि के बखान से लेकर 'पश्चिम बंगाल की मेधा पूरे देश को रास्ता दिखाया करती थी', जैसे कई बोल-वचन से इस बहस के नफरती मंतव्य को साफ़ कर दिया। ध्यान रहे, यह बहस भी उस पटकथा का हिस्सा थी, जिसे एक दिन पहले लाखों लोगों को इकट्ठा कर कोलकता के मैदान में मंचित किया गया था। इनसे, जिसकी अगले दिन संसद में दुहाई दी जा रही थी, वह वन्देमातरम नहीं गवाया गया, जिसकी कोई धार्मिक परम्परा नहीं है, जिसका किसी धार्मिक कर्मकांड में कोई प्रावधान तो दूर, उल्लेख तक नहीं है। वहां भगवद्गीता का सामूहिक पाठ कराया गया था।

यह वही धूर्ततापूर्ण पटकथा थी, जिसमें इधर बंगाली अस्मिता पर जोर देकर स्वतंत्रता आंदोलन में राज्य के भद्र लोक के अहम योगदान की याद दिलाई जा रही थी, उधर मुस्लिम तुष्टीकरण और विभाजन की बात कर परोक्ष रूप से राज्य के हिंदू वोटरों को संदेश देने की कोशिश की जा रही थी। इसी का परोक्ष हिस्सा था भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में लोकसभा चुनाव लड़ चुके, बाद में ममता की पार्टी में गए, अब निलम्बित, हुमायूं कबीर से बाबरी मस्जिद फिर से बनवाने का अहद उठवाकर आग में तेल डलवाया जाना।

कुल मिलाकर यह कि पूरी निर्लज्जता और दीदादिलेरी के साथ विवेक हरने और अविवेक का वर्चस्व बनाने की साजिश तूफानी तेजी के साथ अमल में लायी जा रही है। ध्यान बंटाने के मनोविज्ञान में मूर्खता को एक उपयोगी संसाधन के रूप में कर दिया गया है। मौजूदा हुक्मरान अच्छी तरह जानते हैं कि किन-किन तरीकों से किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह का ध्यान असली हालात या विचार से कैसे हटाया जा सकता है। उन्हें पता है कि मनुष्य के मस्तिष्क में जानकारी संग्रह करने, उसका विश्लेषण करके दूध और पानी को अलग करने और केवल प्रासंगिक चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने और उनका सार ग्रहण करने की क्षमता सीमित होती है। जब ध्यान भटकता है, तो यह प्रक्रिया और भी बाधित होती है। नतीजे में अनावश्यक, यहाँ तक कि स्वयं उसके लिए भी घातक समझ दिमाग में घर बना लेती है। दारुण दुःख देने के पहले मति हर लेना इसी को कहते हैं।

सत्ता में बैठा कार्पोरेटी हिंदुत्व का गठजोड़ इसकी कारगरता को जानता है और उसके लिए खुद को मूर्ख दिखाने में भी संकोच या शर्म लिहाज नहीं करता। लोकप्रिय मुहावरे में इसे 'ऐड़ा बनके पेड़ा खाना' कहते हैं। पिछले सप्ताह में मूर्खताओं की इस बहार में छुपा कर पतझरों को लहलहाने का काम किया जाना इसकी मिसाल है। इधर वन्दे मातरम पर नफरती कोरस गाया जा रहा था, उधर भारत की खेती-किसानी की रीढ़ तोड़कर उसे हमेशा के लिए अंतर्राष्ट्रीय बीज-राक्षसों के मुनाफे की तिजोरियों में दफ़न कर देने वाला सीड बिल, 2025 लाया जा रहा था। बिना संसदीय प्रक्रिया का पालन किये, बिना बहस कराये, बिना किसी संसदीय समिति को भेजे, बिजली बिल, 2025 सहित एक के बाद एक जनविरोधी विधेयक धड़ाधड़ पारित किये जा रहे थे।

कुख्यात चार लेबर कोड्स को लागू किये जाने के साथ शुरू हुआ हमला जनता के बाकी हिस्सों को भी अपनी चपेट में ले रहा था। बिहार में मिली जीत के बाद वहां भी बुलडोजर दनदनाने लगे थे। इस कुहासे के बीच देश के सभी नागरिकों के मोबाइल फोन में जासूसी का एप्प बिठाने की कोशिश की जा रही थी, जिसे समय रहते कम-से-कम फिलहाल के लिए तो रोक दिया गया है। किन्तु आशंकाएं और गहरी हो गयी हैं।

दिखावे के लिए मूर्खता की आराधना करने वाले धूर्तता के साधकों की कार्यशैली को समझकर ही इन आशंकाओं से बचा जा सकता है। इसके लिए जानकारी ही बचाव है, आवाज उठाना ही उपचार है।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।)

एक राष्ट्र, एक शिक्षा नियामक, एक विज़न: उच्च शिक्षा का नया युग

मोदी सरकार की दूरदर्शी सोच ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि भारत की उच्च शिक्षा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने का उनका संकल्प अटल है। 12 दिसंबर 2025 को कैबिनेट द्वारा स्वीकृत विकसित भारत शिक्षा अधिक्षण विधेयक के माध्यम से उच्च शिक्षा व्यवस्था में ऐतिहासिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इस विधेयक के तहत यूजीसी, एआईसीटीई और एनसीटीई जैसे बिखरे हुए नियामक ढाँचों को समाप्त कर एकल और सशक्त उच्च शिक्षा नियामक की स्थापना की जा रही है। यह क्रांतिकारी कदम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'विकसित भारत @2047' की परिकल्पना को ठोस आधार प्रदान करेगा, जहाँ शिक्षा केवल डिग्री अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सबसे बड़ी शक्ति बनेगी। वर्षों से चली आ रही पुरानी व्यवस्था में नियमों की टकराहट, स्वीकृतियों में अनावश्यक विलंब और गुणवत्ता की असमानता ने छात्रों की प्रतिभा को सीमित किया था; एकल नियामक इन सभी बाधाओं को समाप्त कर सुशासन, पारदर्शिता और निर्णायक नेतृत्व की मोदी सरकार की प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

यह विधेयक, जिसे पहले हायर एजुकेशन कमीशन ऑफ इंडिया (एचईसीआई) के नाम से जाना जाता था, अब विकसित भारत शिक्षा अधिक्षण के रूप में नई पहचान और व्यापक दृष्टि के साथ सामने आया है। इस नए आयोग की तीन प्रमुख भूमिकाएँ होंगी— विनियमन, प्रत्यायन और व्यावसायिक मानकों का निर्धारण। विनियमन के माध्यम से संस्थानों के संचालन, पाठ्यक्रम संरचना और नीतियों में एकरूपता आएगी, जिससे नवाचार और अकादमिक स्वतंत्रता को नई ऊर्जा मिलेगी। प्रत्यायन व्यवस्था कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता का पारदर्शी मूल्यांकन एवं रैंकिंग सुनिश्चित करेगी, जिससे छात्रों को सूचित और सही निर्णय लेने में सहायता मिलेगी। वहीं, व्यावसायिक मानक शिक्षण, तकनीकी शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण में समानता और उत्कृष्टता स्थापित करेंगे। यह समग्र सुधार राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की भावना को साकार करता है, जिसमें बहु-विषयक शिक्षा, कौशल विकास और वैश्विक मानकों पर विशेष बल दिया गया है। मोदी सरकार की यह नीति इसलिए भी विशिष्ट है क्योंकि यह भावनात्मक नारेबाज़ी नहीं, बल्कि चरणबद्ध, संतुलित और व्यावहारिक सुधारों पर आधारित है। मेडिकल और विधि शिक्षा को नए नियामक के दायरे से बाहर रखकर सरकार ने यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं और संरचनाओं का सम्मान किया जाएगा। वर्तमान में फंडिंग से जुड़ी स्वायत्तता मंत्रालयों के पास बनाए रखना और भविष्य में इसे आयोग के अधीन लाने की संभावना रखना—यह दूरदर्शी और सावधानीपूर्ण दृष्टिकोण सरकार की नीति-निर्माण में परिपक्वता को दर्शाता है। अतीत की सरकारें सुधारों की घोषणाएँ तो करती रहीं, लेकिन ज़मीनी अमल में इच्छाशक्ति का अभाव साफ दिखाई देता था; इसके विपरीत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से लेकर विकसित भारत शिक्षा अधिक्षण विधेयक तक सुधार केवल काग़ज़ों में नहीं, बल्कि वास्तविकता में उतरते दिख रहे हैं। उच्च शिक्षा संस्थानों की अभूतपूर्व वृद्धि, सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) में निरंतर बढ़ोतरी और अनुसंधान बजट में रिकॉर्ड इज़ाफ़ा—ये सभी उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि मोदी सरकार भारत के युवाओं को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए सक्षम बनाने के मिशन पर पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

छात्रों के लिए यह परिवर्तन एक नई आशा और नए अवसरों का द्वार खोलता है। अब तक अनेक नियामकों की जटिल प्रक्रियाएँ समय, ऊर्जा और संसाधनों की अनावश्यक बर्बादी का कारण बनती थीं—जहाँ तकनीकी पाठ्यक्रमों के लिए एआईसीटीई और सामान्य पाठ्यक्रमों के लिए यूजीसी से अलग-अलग स्वीकृतियाँ लेनी पड़ती थीं। एकल खिड़की प्रणाली के लागू होने से अनुमोदन प्रक्रिया तेज़ होगी, पाठ्यक्रम अधिक लचीले बनेंगे और गुणवत्ता मानकों का समान रूप से पालन सुनिश्चित होगा। बहु-विषयक शिक्षा को वास्तविक अर्थों में बढ़ावा मिलेगा, जहाँ छात्र बिना प्रशासनिक बाधाओं के इंजीनियरिंग के साथ कला या मानविकी जैसे विषयों का संयोजन चुन सकेंगे। इससे ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच की खाई भी कम होगी, क्योंकि आईआईटी से लेकर छोटे कॉलेज तक सभी संस्थानों पर समान नियम लागू होंगे। शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि यह सुधार नवाचार को प्रोत्साहित करेगा, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाएगा और संस्थानों को अधिक पारदर्शी व जवाबदेह बनाएगा। परिणामस्वरूप भारतीय युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सतत विकास और नवाचार जैसे क्षेत्रों में वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर होंगे और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को साकार करेंगे।

यह विधेयक इस सच्चाई को रेखांकित करता है कि मोदी सरकार शिक्षा को केवल एक प्रशासनिक विषय नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण का सबसे प्रभावी और दीर्घकालिक हथियार मानती है। जहाँ विपक्ष खंडित और अप्रभावी पुरानी व्यवस्था को बनाए रखने की वकालत करता रहा, वहीं सरकार ने साहसिक निर्णय लेकर सुधारों की नई इबारत लिखी है। इससे न केवल पारदर्शिता में वृद्धि होगी, बल्कि गुणवत्ता में उल्लेखनीय उछाल आएगा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के चार सशक्त स्तंभ— एक्सेस, इक्विटी, क्वालिटी और अफोर्डेबिलिटी—और अधिक मजबूत होंगे। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की भावना से प्रेरित यह पहल करोड़ों छात्रों के सपनों को नई उड़ान देगी। भविष्य में फंडिंग के पूर्ण एकीकरण के साथ उच्च शिक्षा का एक समग्र, आधुनिक और वैश्विक मानकों वाला मॉडल उभरेगा, जो भारत को विश्व का प्रमुख शिक्षा केंद्र बनाएगा।

विकसित भारत शिक्षा अधिक्षण विधेयक मोदी सरकार की उन ऐतिहासिक उपलब्धियों में से एक है, जो आने वाली पीढ़ियों के भविष्य की दिशा तय करेगा। यह विधेयक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक नवयुग का उद्घोष है, जहाँ एकल और सशक्त नियामक व्यवस्था प्रशासनिक दक्षता को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी। इससे न केवल संस्थानों की कार्यप्रणाली सुगम होगी, बल्कि भारतीय युवा वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा का परचम लहराने में सक्षम होंगे और भारत एक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में विश्व नेतृत्व की भूमिका निभाएगा। गुणवत्तापूर्ण, पारदर्शी और आधुनिक शिक्षा का यह ढाँचा उन करोड़ों छात्रों के लिए आशा का सशक्त आधार है, जो अपने सपनों को साकार करने के लिए अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दृष्टिकोण पूर्णतः स्पष्ट और दूरगामी है—एक ऐसा भारत, जहाँ शिक्षा समावेशी हो, नवाचार को बढ़ावा दे, गुणवत्ता में वैश्विक मानकों को छुए और देश के हर युवा तक समान रूप से पहुँचे। इस विधेयक की स्वीकृति यह प्रमाणित करती है कि मोदी सरकार केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि ठोस परिणाम देने वाले साहसिक और राष्ट्रहितकारी निर्णय लेने में विश्वास रखती है। यह कदम निस्संदेह 2047 तक एक सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण की आधारशिला को और मजबूत करेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

व्यवसाय भले ही हो पर नैतिक ज़िम्मेदारी तो बनती है

राजेश जैन

यह कहानी केवल उड़ानें रद्द होने की नहीं है। यह कहानी है-टूटते भरोसे की, कमजोर सिस्टम की और उस कॉर्पोरेट संस्कृति की जो अक्सर नैतिक जिम्मेदारी को भूल जाती है। व्यवसाय बड़ा हो सकता है, बेड़ा आधुनिक हो सकता है, मुनाफा बढ़ सकता है लेकिन यदि प्रबंधन में नैतिकता न हो, तो कारोबार लंबे समय तक नहीं टिकता। भारत आने वाले वर्षों में दुनिया के सबसे बड़े विमानन बाज़ारों में शामिल होगा। करोड़ों नए यात्री इस क्षेत्र में जुड़ेंगे। इसलिए यह निर्णय अब राष्ट्रीय प्राथमिकता है कि हम कैसी विमानन संस्कृति चाहते हैं-लाभ प्रधान या यात्री प्रधान, अव्यवस्थित या पारदर्शी, जोखिमपूर्ण या सुरक्षा-केंद्रित...।

भारत की सबसे बड़ी निजी एयरलाइन में हालिया अव्यवस्था और उसके बाद उभरे संकट ने केवल विमानन उद्योग ही नहीं बल्कि उपभोक्ता अधिकारों और कॉर्पोरेट नैतिकता पर भी गहरे सवाल खड़े कर दिए हैं।

हवाई यात्रा आज आम है। यह उन लोगों की मजबूरी बन चुकी है, जिन्हें नौकरी, पढ़ाई, इलाज, व्यापार या पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते एक शहर से दूसरे शहर तुरंत पहुंचना होता है। ऐसे समय में जब हजारों उड़ानें अचानक ठप पड़ जाती हैं और लाखों लोग फंस जाते हैं तो यह केवल ऑपरेशनल समस्या नहीं रहती। यह भरोसे का संकट बन जाती है। भरोसा, जो एक कंपनी वर्षों में बनाती है और एक क्षण की अव्यवस्था में खो भी सकती है।

यह पूरी कहानी पायलटों की लगातार बढ़ती थकान और तनाव से शुरू होती है। विमानन उद्योग में पायलट का पेशा जितना ग्लैमरस दिखता है, उतना ही कठिन भी है। अलग-अलग टाइम ज़ोन में उड़ान, रात-दिन उलट-पुलट ड्यूटी, मौसम का दबाव, तकनीकी जटिलताएं-इन सबके बीच 35,000 फीट की ऊंचाई पर सेकंड भर की चूक भी जानलेवा हो सकती है। इसके मद्देनजर अहमदाबाद एयरक्रैश के बाद सरकार ने नए नियम लागू किए। इन नियमों के तहत पायलटों को अधिक आराम, पर्याप्त रिकवरी टाइम, रात में लैंडिंग की संख्या पर सीमा और एक सप्ताह में उड़ान घंटों की नई सीमा तय की गई। ये नियम कोई सुविधा या बिज़नेस-विरोधी नहीं थे। ये न्यूनतम सुरक्षा मानक थे, जो पहले से कई देशों में लागू हैं।

समस्या यह हुई कि एयरलाइन नए नियमों के लिए तैयार नहीं थी। पायलटों की कमी, ओवर-शेड्यूलिंग और पिछले कई वर्षों से खिंच रहे तंग परिचालन मॉडल ने अचानक पकड़ छोड़ दी। नतीजा यह हुआ कि सैकड़ों नहीं, हजारों उड़ानें रद्द, लाखों यात्री फंसे हुए, एयरपोर्ट्स पर अफरा-तफरी और ग्राहक सहायता व्यवस्था लगभग ठप। यह संकट एक चेतावनी थी कि यदि ऑपरेशनल दक्षता सुरक्षा की कीमत पर बनाई जाए, तो सिस्टम एक दिन ऐसा ही ढहता है।

यात्री बेचैन थे। उन्हें पता ही नहीं था कि उनकी उड़ान कब चलेगी, चलेगी भी या नहीं। कॉल सेंटर घंटों तक नहीं लगा, वेबसाइट क्रैश हो गई, रिफंड की प्रक्रिया अस्पष्ट थी, एयरपोर्ट पर कोई ठोस जवाब नहीं मिलता था...। अन्य एयरलाइनों के पास सीमित क्षमता थी। इसलिए इस बीच टिकटों के दाम अचानक कई गुना बढ़ गए।

हर यात्री की एक कहानी थी। कोई छात्र परीक्षा देने जा रहा था, कोई नौकरी के इंटरव्यू के लिए, कोई गंभीर मरीज बड़े शहर इलाज के लिए, कोई शादी में शामिल होने का सपना लिए एयरपोर्ट पहुंचा था। हर व्यक्ति अपने स्तर पर संकट झेल रहा था और एयरलाइन खड़ी थी जैसे कुछ अस्वाभाविक हुआ ही न हो। भरोसा यहीं टूटता है। कंपनियां जब मुनाफे के समय ग्राहक को याद रखती हैं, पर संकट में नहीं, तो उनकी कॉर्पोरेट संस्कृति की पोल खुल जाती है। यह घटना केवल एक एयरलाइन के संचालन से जुड़े सवालों तक सीमित नहीं है। यह उस व्यापक कॉर्पोरेट सोच का आईना है जिसमें ग्राहक सेवा एक स्लोगन बनकर रह जाती है, सुरक्षा मानक औपचारिकता बन जाते हैं और उपभोक्ता अधिकार कागजों पर टिके रहते हैं। सवाल यह है कि क्या कंपनी इतने वर्षों से इतना तंग और जोखिमयुक्त शेड्यूल में काम कर रही थी कि थोड़ी सी कठोरता पूरी व्यवस्था को गिरा दे? यदि हां, तो यह केवल प्रबंधन की विफलता नहीं, बल्कि व्यवसाय मॉडल की नैतिक विफलता है।

दरअसल, भारत का उपभोक्ता शिकायत तंत्र कमजोर है। अक्सर कंपनियां जानती हैं कि यात्री थककर शिकायत छोड़ देगा, अदालत का रास्ता लंबा है, सरकारी कार्रवाई धीमी है। इसलिए जवाबदेही का दबाव लगभग नहीं के बराबर है।

नियमों में नहीं, तैयारी में कमी

दुनिया के किसी भी प्रोफेशन में थकान को सबसे बड़ा जोखिम माना जाता है, पर विमानन क्षेत्र में यह और भी संवेदनशील है। थका हुआ पायलट- एक चलता-फिरता सुरक्षा जोखिम है। इसलिए यूरोप, अमेरिका, जापान जैसे विकसित देशों में थकान प्रबंधन के कठोर नियम है। उड़ान में देरी या रद्द होने पर एयरलाइंस यात्रियों को मुआवजा, वैकल्पिक फ्लाइट, होटल की सुविधा, भोजन, सब कुछ समय पर देती हैं। भारत में अब तक यह व्यवस्था मजबूत नहीं है, और यही समय है जब इसे दुरुस्त किया जाए।

कौन है जिम्मेदार?

नई गाइडलाइंस में कोई खामी नहीं थी। खामी केवल एक ही थी-एयरलाइन की तैयारी नहीं थी और इसकी कीमत यात्रियों ने चुकाई।

यह सवाल अब राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बन चुका है। क्या नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने समय पर निगरानी की, क्या एयरलाइन प्रबंधन ने चेतावनियां अनदेखी कीं, क्या डीजीसीए ने पर्याप्त सख्ती दिखाई, क्या कंपनी ने समय रहते पायलट भर्ती, प्रशिक्षण और शेड्यूलिंग में निवेश किया...अभी तक किसी पर स्पष्ट जिम्मेदारी तय नहीं है।

नियम बदलने होंगे, कड़े कानून जरूरी

यूरोप में ईयू—२६१ नियम लागू है। इसके तहत यदि उड़ान दो—तीन घंटे से अधिक देर हो जाए या रद्द हो जाए, तो यात्री को भारी मुआवजा मिलता है, एयरलाइन होटल, भोजन और वैकल्पिक उड़ान का इंतजाम करती है, कंपनियां यात्रियों को अंधेरे में नहीं रख सकतीं। अमेरिका में भी डिपार्टमेंट ऑफ ट्रांसपोर्टेशन (डीओटी) एयरलाइंस को तत्काल विकल्प देने और मुआवजा देने के लिए बाध्य करता है। भारत में यह व्यवस्था बहुत ढीली है। अब समय आ गया है कि भारत भी कठोर और यात्री-केंद्रित नियम बनाए, ताकि कोई भी कंपनी हजारों लोगों को परेशानी में छोड़कर भी सहज महसूस न कर सके।

सपनों का गुप्त विज्ञान : नींद के भीतर चलती अदृश्य प्रयोगशाला

उमेश कुमार साहू

रात की नींद हमें हर दिन थकान से राहत देती है लेकिन हमारे मस्तिष्क के लिए यह एक छुपी हुई प्रयोगशाला बन जाती है जहाँ वह हमारी यादों को तराशता है, भावनाओं को ठीक करता है और नई ऊर्जा के साथ जीवन की अगली सुबह तैयार करता है। सपने, जिन्हें अक्सर लोग "बस कल्पना" मान लेते हैं, विज्ञान और प्राचीन भारतीय दर्शन के अनुसार हमारी चेतना का सबसे रहस्यमयी और महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

कल्पना कीजिए, आपका मस्तिष्क रात के अंधकार में एक वैज्ञानिक बन जाता है। कभी डर के दृश्य बनाता है, कभी अनोखे दृश्य, कभी जीवन के उलझे धागे सुलझाता है और कभी भविष्य की समस्याओं को चुपचाप हल कर देता है।

विज्ञान कहता है - "हम रात में सपनों में जितना समय बिताते हैं, उतना समय जागकर भी शायद ही कभी अपने भीतर झांकते हैं।"

सपने कहां बनते हैं? : आधुनिक विज्ञान की खोज

पहले वैज्ञानिक मानते थे कि सपने केवल REM नींद में आते हैं। अब शोध कहता है —

सपने पूरी रात आते हैं

नींद के किसी भी चरण में सपना बन सकता है। मस्तिष्क के दृश्य क्षेत्रों (visual cortex) में अचानक गतिविधि बढ़ जाती है। भावनाओं का केंद्र (amygdala) सबसे सक्रिय हो जाता है।

यही कारण है कि सपने रंगीन, भावनात्मक और अक्सर तर्क से परे दिखाई देते हैं।

सपने मस्तिष्क की "मेमोरी मशीन" हैं

नए शोध बताते हैं कि जब हम सपने देखते हैं, हमारा दिमाग -

अनुभवों को छाँटता है,

ज़रूरी बातों को याद में जमाता है,

अनावश्यक तनाव को हटाता है,

और कल के फैसलों के लिए हमें तैयार करता है।

नींद में चलता यह प्रक्रिया इतनी गहरी होती है कि जागृत अवस्था में हम इसे समझ ही नहीं पाते।

हम अजीब सपने ही क्यों देखते हैं?

कभी उड़ते हुए, कभी परीक्षाओं में नकल करते हुए, कभी किसी खोए हुए व्यक्ति से बात करते हुए, ऐसे सपने इसलिए आते हैं क्योंकि रात में दिमाग़ दो काम एक साथ करता है:

1. यादों की सफाई
2. भावनाओं की मरम्मत

इस दौरान पुरानी यादें, नई घटनाएँ और छुपी हुई इच्छाएँ एक-दूसरे से टकराती हैं और "अजीबोगरीब" कथाएँ बन जाती हैं।

सपने असल में मस्तिष्क का भावनात्मक संतुलन बनाने का तरीका हैं।

प्राचीन भारत : जहां सपनों को आत्म-अन्वेषण माना गया

वेद, उपनिषद और योगदर्शन में सपनों को "मानसिक दर्पण" कहा गया है। भारतीय दार्शनिकों का मानना था:

सपने अवचेतन मन (subconscious) की आवाज़ होते हैं।

इन्हें समझकर व्यक्ति अपनी दिशा पहचान सकता है।

योग की "योग निद्रा" अवस्था में व्यक्ति सपनों को नियंत्रित भी कर सकता है।

आज के वैज्ञानिक इसे Lucid Dreaming कहते हैं, जहाँ व्यक्ति जानता है कि वह सपना देख रहा है और वह सपने की कहानी बदल भी सकता है।

आधुनिक लैब में सपनों पर चल रहे नए प्रयोग

पिछले कुछ वर्षों में "ड्रीम साइंस" में सबसे रोमांचक खोजें हुई हैं:

(1) हम सपनों की दिशा बदल सकते हैं

विशेष ध्वनियों और संकेतों से मस्तिष्क को रात में निर्देश दिया जा सकता है। इसे कहते हैं - ड्रीम इंजीनियरिंग।

यह तकनीक:

बुरे सपनों को रोक सकती है

PTSD रोगियों की मदद कर सकती है

नींद की गुणवत्ता सुधार सकती है

(२) मस्तिष्क सपनों में बातचीत कर सकता है

नींद के दौरान सोते व्यक्ति को सवाल पूछे जाएँ और वह सपने में ही जवाब दे — ऐसे प्रयोग अब सफल हो चुके हैं।

यानी सपनों की दुनिया पूरी तरह बंद नहीं है — वह जागृत दुनिया से जुड़ सकती है।

(३) सपने रचनात्मकता बढ़ाते हैं

एडिसन से लेकर आइंस्टाइन और दा विंची तक — दुनिया के कई महान आविष्कार सपनों से प्रेरित बताए गए हैं। विज्ञान भी मानता है:

"मस्तिष्क सपनों में ऐसे विचार जोड़ता है, जिन्हें जागते हुए जोड़ना असंभव होता।"

सपने हमें बचाते कैसे हैं : भावनाओं की चिकित्सा

दिन भर का तनाव, डर, शर्म, चिंता, इन सबका बोझ मन में कहीं न कहीं जमा रहता है। रात के सपने उस बोझ को "पिघला" देते हैं।

सपनों को देखते समय:

तनाव हार्मोन कम होते हैं

मस्तिष्क कठिन भावनाओं को सुरक्षित वातावरण में दोहराता है

और धीरे-धीरे उनसे निपटने की रणनीति बनाता है

यही कारण है कि कई बार कोई कठिन भाव जागते समय भारी लगता है पर रात की नींद के बाद हल्का।

यह सिर्फ थकान कम होने से नहीं, सपनों की उपचार-प्रक्रिया से होता है।

क्या सपने भविष्य बताते हैं?

वैज्ञानिक कहते हैं, सपने सीधे भविष्य नहीं बताते, लेकिन भविष्य के लिए तैयार जरूर करते हैं।

उदाहरण:

जिस चीज़ से हम डरते हैं, उस पर सपना आ सकता है

कोई अनसुलझी समस्या सपने में समाधान दे सकती है

कोई व्यक्ति लगातार विचारों में हो, तो सपने में दिख सकता है

यानी सपने "भविष्य दर्शन" नहीं, पर "भविष्य संकेत" जरूर हो सकते हैं, क्योंकि वे हमारे अवचेतन मन के real-time calculations का परिणाम होते हैं।

हम अपने सपनों को कैसे बेहतर बना सकते हैं?

पुरातन और आधुनिक दोनों विज्ञान 5 बातें कहते हैं:

1. सोच समझकर सोएँ जो सोचकर सोते हैं, वही जल्दी सपनों में आता है।
२. सोने की 1 घंटे पहले स्क्रीन कम करें नीली रोशनी सपनों की गुणवत्ता पर असर डालती है।
३. ड्रीम डायरी लिखें सपने याद रखने से दिमाग़ उनका विश्लेषण बेहतर करता है।
4. योग निद्रा/ध्यान सपनों को शांत, रचनात्मक और गहरा बनाता है।
5. सोने से पहले हल्के सकारात्मक विचार दिमाग वही सामग्री उठाता है और उसी पर रात की लैब चलाता है।

सपने : जहाँ विज्ञान, मन और चेतना मिलते हैं

सपने हमारे भीतर के ऐसे दरवाज़े हैं, जहाँ विज्ञान की मशीनें भी हैरान हो जाती हैं और दर्शन की पुस्तकों को भी नए अर्थ मिलते हैं। हम दिन में दुनिया देखते हैं, और रात में अपनी ही दुनिया को। हर सपना हमारे जीवन, मन, स्मृति, भावनाओं और इच्छा-शक्ति का एक अदृश्य प्रयोग है। उसे अनदेखा करना मानो अपनी ही चेतना का आधा हिस्सा खो देना है।

अगली बार जब आप सोएँ। याद रखिए, आप सिर्फ सो नहीं रहे होंगे, आपकी चेतना एक रहस्यमयी प्रयोगशाला में अपनी अगली सुबह को गढ़ रही होगी।

भारत में खेलों के लिए 2025 का दृष्टिकोण: एक परिवर्तनकारी वर्ष

● विजय गर्ग

भारत में खेल के भविष्य को आकार देने वाले प्रमुख रुझान भारतीय खेलों की गतिशील वृद्धि कई प्रमुख रुझानों द्वारा संचालित हो रही है: 1। सरकारी नीति और जमीनी स्तर का विकास 'खेलो भारत नीति' (राष्ट्रीय खेल नीति 2025): इस नई, व्यापक नीति की स्वीकृति एक प्रमुख उत्प्रेरक है। इसका उद्देश्य 2036 तक भारत को एक "वैश्विक खेल पावरहाउस" में बदलना है, जिसमें "खेलों के व्यापक आधार और उत्कृष्टता प्राप्त करने" पर दोहरी फोकस होगी इसमें खेल महासंघों में शासन को बेहतर बनाना और खेल को जीवनशैली के रूप में बढ़ावा देना शामिल है।

वर्ष 2025 भारत में खेल उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण और उच्च-विकास अवधि बन रहा है, जो एक नई राष्ट्रीय नीति, महत्वपूर्ण सरकारी और कॉर्पोरेट निवेश, तथा प्रौद्योगिकी और डिजिटल जुड़ाव के बढ़ते प्रभाव से प्रेरित है। घटनाओं के एक जीवंत कैलेंडर और प्रतिभाओं को पोषित करने पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने के साथ, दृष्टिकोण अत्यधिक सकारात्मक है। ☑ भारत में खेल के भविष्य को आकार देने वाले प्रमुख रुझान भारतीय खेलों की गतिशील वृद्धि कई प्रमुख रुझानों द्वारा संचालित हो रही है: 1। सरकारी नीति और जमीनी स्तर का विकास 'खेलो भारत नीति' (राष्ट्रीय खेल नीति 2025): इस नई, व्यापक नीति की स्वीकृति एक प्रमुख उत्प्रेरक है। इसका उद्देश्य 2036 तक भारत को एक ₹वैश्विक खेल पावरहाउस₹ में बदलना है, जिसमें ₹खेलों के व्यापक आधार और उत्कृष्टता प्राप्त करने₹ पर दोहरी फोकस होगी इसमें खेल महासंघों में शासन को बेहतर बनाना और खेल को जीवनशैली के रूप में बढ़ावा देना शामिल है। बढ़ाया गया बजटीय आवंटन: 2025 के लिए केंद्रीय बजट में खेलों के लिए आवंटन में पर्याप्त वृद्धि देखी गई है (जैसे, 3,794.30 करोड़ रुपये), युवा प्रतिभाओं की पहचान और पोषण करने के लिए खेलो इंडिया (युवा खेल, शीतकालीन खेल, पैरा गेम) जैसे जमीनी स्तर के कार्यक्रमों को प्राथमिकता देते हुए। बुनियादी ढांचा निवेश: सरकार और राज्य स्तर के कार्यक्रम खेल अवसंरचना में दीर्घकालिक निवेश को बढ़ावा दे रहे हैं, विशेष रूप से पूर्वी भारत जैसे क्षेत्रों में, जहां दर्शक खेल बाजार में महत्वपूर्ण चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) देखने की उम्मीद है। 2। डिजिटल परिवर्तन और प्रशंसक जुड़ाव स्ट्रीमिंग और ओटीटी का प्रभुत्व: डिजिटल स्ट्रीमिंग के लिए ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफार्मों पर जाने से बाजार में विखंडन जारी है, लेकिन व्यापक पहुंच प्रदान होती है और इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) और प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) जैसी लोकप्रिय लीगों की वृद्धि को बढ़ावा मिलता है। खेल प्रौद्योगिकी का उदय: खेल प्रौद्योगिकी बाजार फल-फूल रहा है, तथा उच्च सीएजीआर (उदाहरण के लिए, 2025-2030 तक 25.3%) पर बढ़ने की उम्मीद है। विकास के प्रमुख क्षेत्रों में शामिल हैं एनालिटिक्स और सांख्यिकी: प्रदर्शन वृद्धि, चोट की रोकथाम और व्यक्तिगत प्रशिक्षण के लिए डेटा विश्लेषण और एआई को अपनाना। स्मार्ट स्थल: बेहतर इवेंट प्रबंधन और प्रशंसक अनुभव के लिए अगली पीढ़ी की स्टेडियम प्रौद्योगिकियों में निवेश। ऑनलाइन सहभागिता और काल्पनिक खेल: काल्पनिक खेल और मोबाइल ऐप्स प्रशंसकों की अधिक भागीदारी को बढ़ावा दे रहे हैं, जो बदले में माल और टिकट बिक्री के माध्यम से राजस्व में वृद्धि में योगदान देता है। 3। गैर-क्रिकेट खेलों और लीगों का विकास प्रोफेशनल लीग का विस्तार: जबकि क्रिकेट (आईपीएल) अपना प्रभुत्व बनाए रखता है, प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) और इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) जैसी गैर-क्रिकेट पेशेवर लीग परिपक्व हो रही हैं, जिससे महत्वपूर्ण कॉर्पोरेट प्रायोजन आकर्षित हो रहा है। ओलंपिक/व्यक्तिगत खेलों पर ध्यान केंद्रित करें: बढ़ाया गया बजट समर्थन और 2036 ओलंपिक की मेजबानी का उद्देश्य व्यक्तिगत खेलों को बढ़ावा दे रहा है, जिसमें एथलीटों के प्रशिक्षण, कोचिंग और सहायता प्रणालियों में अधिक निवेश किया जाएगा। महिला खेलों का उदय: महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के नेतृत्व में महिलाओं की क्रिकेट में असाधारण वृद्धि देखी जा रही है, जिसका पूर्वानुमान 2030 तक 24.78% का सीएजीआर होगा, जो सभी खेल खंडों में सबसे अधिक है। महिला एथलीट तेजी से राष्ट्रीय खोज रुझानों और डिजिटल प्रवचन का विषय बन रही हैं। 4। द स्पेक्टेटर स्पोर्ट्स मार्केट एंड मेजर इवेंट्स बाजार का आकार और राजस्व: भारतीय दर्शक खेल बाजार का मूल्य 2025 में लगभग 1.77 बिलियन डॉलर है और 2030 तक इसमें काफी वृद्धि होने की संभावना है (6.41% का सीएजीआर)। मीडिया अधिकार राजस्व का प्रमुख स्रोत बना हुआ है। इवेंट कैलेंडर: 2025 भारत में आयोजित किए जा रहे हाई-प्रोफाइल अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू कार्यक्रमों के एक पैक शेड्यूल का दावा करता है, जिसमें शामिल हैं: आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप (सितंबर-नवंबर) पुरुषों का एफआईएच हॉकी जूनियर विश्व कप (नवंबर-दिसम्बर) विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप (सितंबर-अक्टूबर) बीडब्ल्यूएफ विश्व जूनियर चैंपियनशिप (बैडमिंटन) राष्ट्रीय खेल और खेलो भारत के आयोजनों के कई संस्करण। ✨ निष्कर्ष भारतीय खेलों के लिए 2025 का दृष्टिकोण गति और आधुनिकीकरण द्वारा परिभाषित है। सरकारी पहल जमीनी स्तर पर नींव को मजबूत कर रही है, कॉर्पोरेट निवेश लीगों को पेशेवर बना रहे हैं, और प्रौद्योगिकी खेल के उपभोग और खेलने के तरीके में क्रांति ला रही है। नीतिगत समर्थन, डिजिटल नवाचार और बाजार विकास का यह संयोजन भारत को न केवल क्रिकेट-प्रेमी राष्ट्र के रूप में स्थापित करता है, बल्कि एक उभरती हुई वैश्विक खेल शक्ति के रूप में भी रखता है, जिसमें खेलों की व्यापक श्रृंखला में उत्कृष्टता प्राप्त करने की स्पष्ट दिशा है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर

संपादकीय

चिंतन-मनन

रामानुजन ने 100 साल पुराने पाई फॉर्मूला को तैयार किया

डॉ विजय गर्ग

एक सदी से भी अधिक समय पहले, भारत के स्व-शिक्षित गणितीय प्रतिभाशाली व्यक्ति श्रीनिवास रामानुजन ने इतने शक्तिशाली सूत्रों का एक सेट लिखा था कि वे आज भी गणितज्ञों और भौतिकविदों को आश्चर्यचकित करते हैं। उनमें से चौंका देने वाली गति के साथ पीआई (पीआई) के मान की गणना करने का एक असाधारण सूत्र था। पहली नज़र में यह एक चतुर गणितीय चाल लग रही थी। एक सौ साल बाद, वैज्ञानिकों को पता चल रहा है कि रामानुजन के अनुसार पाई सूत्र भी ब्रह्मांड की अंतर्निहित गहरी संरचनाओं का संकेत दे सकता है।

एक ऐसा फार्मूला जो अपने समय से बहुत आगे है

1914 में रामानुजन ने परिणामों का संग्रह ब्रिटिश गणितज्ञ जी.एच. को भेजा। हार्डी। उनकी नोटबुक में पी के लिए अनंत श्रृंखलाएं दबी हुई थीं जो अकल्पनीय रूप से तेजी से एकत्रित हो गईं। उनके सबसे प्रसिद्ध सूत्रों में से एक है:

\फ्रैक{1}{\पीआई} =
\फ्राक{2\स्क्वार्ट{2}}{9801}
\सम_{के=0}^{\इंफी} \फ्राक{(4के)!(1103 + 26390के)}{(के!)^4 396^{4k}}

इस श्रृंखला का प्रत्येक अतिरिक्त पद पी के लगभग आठ सही दशमलव स्थान जोड़ता है। तुलना के लिए, पहले ज्ञात सूत्रों ने सटीकता में धीरे-धीरे सुधार किया। रामानुजन की अंतर्दृष्टि इतनी उन्नत थी कि हार्डी ने भी स्वीकार किया कि वह पूरी तरह से यह नहीं बता सकता था कि रमनुजन ने इसे कैसे खोजा।

यह फार्मूला इतना खास क्यों है

रामानुजन पीएसपी की पाई श्रृंखला न केवल कुशल है - यह रहस्यमय रूप से सटीक है। इसकी संरचना गहराई से जुड़ी हुई है:

अण्डाकार कार्य
मॉड्यूलर रूप
जटिल विश्लेषण

ये सिर्फ अमूर्त गणितीय विचार नहीं हैं। आज, वे आधुनिक भौतिकी, क्रिप्टोग्राफी और यहां तक कि स्ट्रिंग सिद्धांत में भी केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। औपनिवेशिक भारत में एकांत में काम करते हुए रामानुजन ने किसी तरह ऐसे रिश्तों को सहज रूप से समझा जो बाद में 20वीं सदी के गणित की आधारशिला बन गए।

ब्रह्मांड के लिए एक पुल

रामानुजन के सूत्र को विशेष रूप से दिलचस्प बनाने वाली बात यह है कि इसका मॉड्यूलर समरूपता (एक प्रकार का छिपा हुआ क्रम जो प्रकृति में दिखाई देता है) से संबंध है। उनके पाई सूत्र के पीछे वही गणितीय वस्तुएं अब वर्णन करने के लिए उपयोग की जाती हैं:

स्पेसटाइम की ज्यामिति
ब्लैक होल एन्ट्रॉपी
क्वांटम क्षेत्र सिद्धांत
स्ट्रिंग सिद्धांत में तारों के कंपन मोड

भौतिकविदों का तेजी से मानना है कि ब्रह्मांड गहरी गणितीय समरूपता पर बना है। रामानुजन के काम से पता चलता है कि पी जैसी संख्याएं केवल स्थिरांक नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय क्रम को समझने के द्वार हैं।

रामानुजन से लेकर आधुनिक विज्ञान तक

1980 के दशक में, गणितज्ञों ने रामानुजन के विचारों को पुनः खोजा और उनका उपयोग कम्प्यूटिंग पी के लिए अब तक बनाए गए सबसे तेज़ एल्गोरिदम बनाने के लिए किया। इन एल्गोरिदम ने सुपर कंप्यूटरों को सत्यापित करने में मदद की और संख्यात्मक गणना को नई सीमाओं तक पहुंचा दिया।

इससे भी अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि रामानुजन के सूत्रों ने संख्या सिद्धांत को भौतिकी से जोड़ने वाले शोध को प्रेरित किया - विशेष रूप से क्वांटम यांत्रिकी के साथ गुरुत्वाकर्षण को एकीकृत करने के प्रयासों में। उनका अंतर्ज्ञान एक गहन सत्य को प्रतिध्वनित करता प्रतीत होता है: ब्रह्माण्ड को गणितीय भाषा में लिखा जा सकता है, जो हमारी कल्पना से कहीं अधिक समृद्ध है।

बिना सबूत के जीनियस

शायद सबसे बड़ा रहस्य यह है कि रामानुजन को इन परिणामों के बारे में कैसे पता चला। उनके कई सूत्र बिना प्रमाण के लिखे गए थे। दशकों बाद, गणितज्ञों ने उन्हें कठोरता से सिद्ध किया - केवल उन्हें सही खोजने के लिए। रामानुजन ने खुद कहा कि उनके विचार उन्हें सपनों में आए, जो देवी नामगिरी से प्रेरित थे।

चाहे कोई इसे आध्यात्मिक रूप से देखे या वैज्ञानिक रूप से, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि रामानुजन ने ऐसे पैटर्न देखे जो दूसरों के लिए अदृश्य थे।

R एक विरासत जो अभी भी सामने आ रही है

एक सौ साल बाद, रामानुजन ने पाई फार्मूला जारी रखा है। यह हमें याद दिलाता है कि मानवीय अंतर्ज्ञान, जब अपनी सीमा तक धकेल दिया जाता है, तो वह उन सत्यों को देख सकता है जो वास्तविकता की नींव पर स्थित हैं। इस अर्थ में, रामानुजन के काम की गणना से कहीं अधिक है - यह ब्रह्मांड के रहस्यों को फुसफुसाता है।

पर्यावरण के लिए मुसीबत बना प्लास्टिक : डॉ विजय गर्ग

ऐसा लगता है कि आधुनिक जीवनशैली में प्लास्टिक एक अनिवार्य तत्त्व बन गया है।

यह भले ही सस्ता, टिकाऊ और बहुपयोगी होता है, लेकिन यही प्लास्टिक आज हमारे पर्यावरण के लिए एक गंभीर संकट बन चुका है। प्लास्टिक प्रदूषण विश्व स्तर पर चिंता का विषय है और यह न केवल भूमि को, बल्कि जल और वायु को भी 1 भी प्रदूषित कर रहा। है। यह प्रदूषण मनुष्य, पशु-पक्षियों और समुद्री जीवों समेत संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित कर रहा है। यही वजह है कि आज दुनियाभर के लिए प्लास्टिक कचरा बड़ी मुसीबत बन चुका है। विश्व स्तर पर हर वर्ष लगभग चार करोड़ लाख टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जो पिछले दो दशकों में तेजी बढ़ा है। इसमें से लगभग अस्सी लाख टन प्लास्टिक समुद्रों में पहुंचता है, जिससे समुद्री जीवों की करीब सात सौ प्रजातियों पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। भारत में भी लगभग 56 लाख टन प्लास्टिक कचरा प्रतिवर्ष पैदा हो रहा है, जिसका पर्यावरण पर प्रतिकूल असर साफ तौर पर देखा जा रहा है।

हाल के वर्षों में प्लास्टिक प्रभाव को लेकर जो कुछ स्पष्ट के प्रदूषण हुआ है, उसमें जलवायु परिवर्तन के साथ इसका बढ़ता संबंध भी शामिल है। यह ऐसे समय में चिंता बढ़ा रहा है, जब दुनिया जलवायु परिवर्तन कारण कई तरह के संकट का सामना कर रही है। वास्तव में प्लास्टिक दुनिया के लिए एक बड़ा खतरा बनता जा रहा और वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहने में भी यह बाधा पैदा करता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि प्लास्टिक के पुनर्चक्रण में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। प्लास्टिक के उत्पादन और उपभोग में पृथ्वी के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 3.3 फीसद हिस्सा शामिल है। ये देखने में मामूली लग सकता है, लेकिन प्लास्टिक का हमारी पृथ्वी पर दुष्प्रभाव व्यापक है। ऐसे में ये याद करना जरूरी है कि प्लास्टिक की थैली या पानी की बोतल जो हम फेंक देते हैं, वह हमारी धरती के लिए कितनी बड़ी मुसीबत बन गई है। प्लास्टिक का कचरा न सिर्फ हमारे आस-पास गंदगी फैलाता है, बल्कि ये धरती को गर्म करने वाली गंभीर समस्या जलवायु परिवर्तन को भी गति देता है।

बदलते जलवायु और वैश्विक ताप की वजह से हिमनद तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर बढ़ा रहे हैं। इससे समुद्र किनारे बसे अनेक कस्बों एवं महानगरों के डूबने का खतरा मंडराने लगा है। बीते दो दशक 5में ये स्पष्ट हुआ है कि वैश्वीकरण की नवउदारवादी और निजीकरण की प्रक्रिया ने हमारे सामने बहुत-सी चुनौतियां खड़ी कर दी है। जिससे आर्थिक विकास के माडल लड़खड़ाने लगे है। पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रही है। इनसे निपटने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के प्रयास भी किए जा रहे हैं। मौजूदा चुनौतियों के सामने ये प्रयास कारगर साबित नहीं हो रहे हैं। यह सर्वविदित है कि इंसान और प्रकृति के बीच गहरा संबंध है। इंसान के लोभ, सुविधावाद एवं तथाकथित विकास की अवधारणा पर्यावरण का भारी नुकसान पहुंचाया है, जिस कारण न केवल नदियां, वन, रेगिस्तान, जलस्रोत सिकुड़ रहे हैं, बल्कि हिमनदों के पिघलने की रफ्तार भी तेज हो रही है। तापमान का 50 डिग्री पार करना वास्तव में खतरे का संकेत है, जिससेहै। मौजूदा वक्त में पूरी दुनिया विभिन्न। मगर,मानव जीवन भी असुरक्षित होता जा रहा है। बढ़ते तापमान ने न केवल जीवन को जटिल बनाया है, बल्कि इससे अनेक लोगों की जान भी गई है। पूरी दुनिया में बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैव विविधता विनाश का एक जहरीला मिश्रण बनता जा रहा है। यह स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान में बदल रहा है, समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र को कमजोर कर रहा है और इससे मानव जीवन पर तरह-तरह के खतरे पैदा हो रहे हैं।

विदित रहे कि प्लास्टिक की खोज वर्ष 1907 में की गई थी, बहुत कम समय में ही इसका उपयोग बढ़ गया। कभी वरदान समझा जाने वाला प्लास्टिक आज दुनिया के लिए बड़ी समस्या बन चुका है। भले ही प्लास्टिक ने हमारे जीवन को काफी आसान बनाया है, लेकिन दूसरी तरफ यह आज धरती के लिए एक बड़ी चुनौती भी बन गया है। सस्ता और टिकाऊ होने की वजह से प्लास्टिक का उपयोग बड़े पैमाने पर हो रहा है। इस कारण हर साल लाखों टन न का प्लास्टिक कचरा पैदा होता है, जोकि पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंचाने का काम करता है। प्लास्टिक कचरा नदियां, , समुद्र, वायु हर जगह फैल चुका है, इसलिए । वैश्विक आपदा की संज्ञा देना गलत नहीं होगा। आज प्लास्टिक प्रदूषण र कोने में फैल चुका है. यह हमारे पीने के पानी, भोजन और पर्यावरण में समा रहा है। इस स्थिति में प्लास्टिक कचरे की गंभीर समस्या से निपटने के लिए वैश्विक संकल्प की जरूरत है। यह अब सिर्फ पर्यावरण का मुद्दा नहीं, बल्कि वैश्विक मानव अस्तित्व और स्वास्थ्य के लिए भी एक गंभीर खतरा बन चुका है। पिछली सदी में । जब प्लास्टिक के विभिन्न रूपों का आविष्कार हुआ, तो उसे विज्ञान और मानव सभ्यता की बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया था। अब जब हम न तो इसका विकल्प तलाश पा रहे हैं और न इसका उपयोग ही रोक पा हैं. क्यों न इसे विज्ञान और मानव सभ्यता की सबसे बड़ी असफलता मान लिया जाए।

इसे दुनिया के हर कम्युनिकेशन्स अर्थ एंड एनवायरनमेंट' पत्रिका में प्रकाशित एक नई रपट के अनुसार, दुनिया भर में प्लास्टिक का उत्पादन हर साल 8.4 फीसद की दर से बढ़ रहा है, जबकि इसके पुनर्चक्रण की दर 9.5 फीसद तक सीमित है। खतरनाक असंतुलन केवल धरती पर प्लास्टिक कचरे का पहाड़ खड़ा कर रहा है, बल्कि इंसानों और जीव-जंतुओं की सेहत पर भी नकारात्मक असर डाल रहा है। रपट में कहा गया है कि वर्ष 2022 में वैश्विक स्तर पर चालीस करोड़ टन प्लास्टिक का उत्पादन हुआ, जिसमें केवल 3.8 करोड़ टन का ही पुनर्चक्रण किया गया। अनुमान है कि प्लास्टिक उत्पादन की मौजूदा रफ्तार इसी तरह जारी रही तो वर्ष 2050 तक यह आंकड़ा दोगुना होकर अस्सी करोड़ टन तक पहुंच सकता है, जो पूरी दुनिया में एक बड़े संकट का रूप ले सकता है।

भारत में सरकार की ओर से पूर्व में देश को स्वच्छ भारत मिशन के तहत एकल उपयोग प्लास्टिक को बंद करने की घोषणा की गई है। हालांकि इस दिशा में अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। सरकार की ओर से इस मामले में जागरूकता और प्रोत्साहन की अभी भी बहुत जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूएनईपी की एक रपट के मुताबिक, अच्छी योजना के साथ काम किया जाए तो प्लास्टिक से दूरी बनाने पर दुनिया वर्ष के अंत तक 4,500 अरब डालर बचा सकती है। इसमें एकल उपयोग प्लास्टिक का उत्पादन न करने से । बचने वाली लागत भी शामिल है। वैसे फिलहाल एक बड़ी राशि प्लास्टिक के कारण सेहत और पर्यावरण को होरहे 2040 नुकसान पर खर्च हो रही है। जलवायु परिवर्तन पर र प्लास्टिक उत्पादन देने की का प्रभाव एक ऐसा क्षेत्र है, जिस पर समय रहते गंभीरता से ध्यान देने आवश्यकता है। इस समस्या से निजात पाने के लिए न केवल प्रभावी नीति निर्माण, बल्कि वैश्विक सहयोग, तकनीकी नवाचार और जन-भागीदारी की भी नितांत जरूरत है। वरना वह दिन दूर नहीं, जब प्लास्टिक का जहर हमारी अगली पीढ़ियों की सांसों तक पहुंच जाएगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कसौटी पर नैतिकता

डॉ विजय गर्ग

यह 'जियो और जीने दो' का दर्शन, जो मूलतः भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धांत का उच्च आदर्श है, आज के विखंडित समाज में विकृत होकर केवल स्वार्थ और अलगाव का एक विचित्र मंत्र बन गया है। यह वह छद्म-आधुनिकता है, जहां भावनात्मक दूरी को 'आत्मनिर्भरता' का मुलम्मा चढ़ाकर स्वीकार किया जाता है। स्नेह का पात्र अपनी समस्त उपयोगिता खोकर उपेक्षित हो जाता है। यह हृदय की वही पीड़ा है, जिसमें एकाकीपन की टीस है। उपेक्षित हृदय अपनी संतानों के जीवन को देखकर खुद को समझाता है, पर भीतर ही भीतर वह अपने अस्तित्व के मौन एकांत को गिनता है। रिश्तों की वह गर्माहट, जो एक समय जीवन का आधार थी, अब केवल 'अनचाही सलाह' की संज्ञा पाकर उपेक्षा का शिकार हो जाती है। तकनीकी संजाल में गुम नई उम्र के लोगों ने जिस तरह अपनी एक आभासी दुनिया में ही अपना जीवन झोंक दिया है, उसमें वे तो शायद इस बात का अहसास भी नहीं कर पाते होंगे कि परिवार से लेकर समाज तक में आसपास जीवंत रिश्तों से जीवन को कैसी ऊर्जा मिलती थी । अब तक हालत यह है कि सिर्फ 'निजी दायरा' के नाम पर एकाकीपन की दुनिया और उसके दंश को भी जीवनशैली का एक सहज और स्वाभाविक हिस्सा मान लिया जाता है । यह समझने की जरूरत तक महसूस नहीं की जाती कि इससे उपजे खालीपन से आगे की जिंदगी एक चुनौती भी बन सकती है। स्नेह और प्रेम का महत्त्व अब मायने नहीं रखता। मगर यह ध्यान रखने की जरूरत है कि जब स्नेह की उपेक्षा होती है, तो व्यक्ति का मूल्य घट जाता है, उसकी बात का नहीं। इस उपेक्षित हृदय का 'होना' ही अब व्यक्ति का दुख बन गया है, जो एकांत में आंसू पोंछता है और अपनी पीड़ा को 'आजादी' का नाम देता है।

वर्षों के इस भावनात्मक सूनेपन पर

अचानक 'राय' की मांग आना, शुष्क भूमि पर अचानक बरसी पहली बूंद होती है। यह क्षण एक उपेक्षित हृदय के लिए किसी वरदान से कम नहीं, भले ही यह मांग प्रेमवश नहीं, बल्कि स्व-उपयोगिता के लिए की गई हो। उस हृदय की तृप्ति का आधार केवल यह होता है कि उसे 'योग्य' समझा गया है। मगर यह एक विडंबना है कि जीवन के बड़े निर्णय और खुशियों में जिसे विस्मृत कर दिया गया, उसे याद केवल तब किया जाता है, जब अंतरात्मा पर कोई पाप - बोध का भारी बोझ आ जाए । यह कैसा विश्वास है, जहां स्नेह का अधिकार केवल नैतिक शुद्धि और पाप - क्षालन के कर्मकांड तक सीमित रह जाता है! आजकल के लोग कई महीनों तक लोभ और भय द्वंद्व में जीते हैं, प्राप्त अशुभ धन को छिपाते हैं और आखिरकार उसे नकदी में बदल देते हैं । इस लोभ की शुद्धि के लिए वे उस हृदय के पास आते हैं, जिन्हें वे अखंड ममता की शक्ति मानते हैं। यह जानते हुए भी कि उनकी व्यावहारिक चेतना इस समस्या का सामना नहीं कर सकती, वे उस निष्कपट प्रेम के पास आते हैं, जो उसके अशुभ धन से चिपके अनजान आंसुओं को अपनी पवित्रता से धो सके ।

जब उपेक्षित हृदय कहता है कि जिस धन में किसी का दुख जुड़ा हो, वह अपने पास नहीं रखना चाहिए, तो यह केवल धर्म-सम्मत सलाह नहीं होती, बल्कि स्वयं की पीड़ा का मौन प्रक्षेपण होता है । यह एक परोक्ष प्रश्न है कि जाने अनजाने में ही सही, हम सबके जीवन में जो यह उपेक्षा और परित्याग का दुख जुड़ा है, उसका शोधन और निवारण कहां किया जाए! यह सलाह अवसरवादियों के लिए एक नैतिक छूट - पत्र बन जाती है। उन्हें गरीबों को दान या कन्या पूजन का मार्ग दिखाया जाता है। यह भारतीय संस्कृति के 'दान' के सिद्धांत पर आधारित है, जैसा कि यजुर्वेद में कहा गया है- 'दानेन परिचर्या च', यानी दान से ही परिचर्या (शुद्धि) होती है। मगर यहां यह दान केवल नैतिक रिश्वत है- अपने लोभ और कायरता के पाप-बोध को एक त्वरित 'पुण्य' में बदलकर मुक्ति पाने का सौदा। यों भी ' और भी दुख हैं जमाने में मोहब्बत के सिवा... राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा ।' यहां दुख की बात यह है कि उस हृदय की 'राहत' केवल दूसरों के पाप को धोने में सिमट गई है। गरीब और कन्याएं यहां सामाजिक हाशिये की भूमिका निभाते हैं, जहां स्वार्थी लोग अपनी अमानवीय कुंठा निकालते हैं ।

इस पूरे प्रसंग में सबसे बड़ा पाखंड वह क्षण है, जब व्यक्ति कहता है कि 'शुभता वस्तु में नहीं, भावना में होती है।' अगर यह सत्य होता, तो कर्म में इसकी झलक दिखती । श्रीमद्भगवद्गीता में कृष्ण कहते हैं- 'यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि' यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।' यानी जो कुछ भी आप करते हैं, खाते हैं, हवन करते हैं, दान देते हैं या तप करते हैं, वह सब मुझे अर्पित कर दें। यहां 'शुभता' तो तब प्रकट हुई, जब उपेक्षित हृदय ने दान का आसान मार्ग सुझाया। यह भावना नहीं, बल्कि सुविधा थी, जिसने लोभ और कायरता पर पवित्रता का आवरण डाल दिया गया । कवि अदम गोंडवी ने शायद ऐसी ही नैतिकता पर व्यंग्य किया होगा- 'तुम्हारी फाइलों में गांव का मौसम गुलाबी है, मगर ये आंकड़े झूठे हैं, ये दावा किताबी है।' यह शुभता का दावा भी वैसा ही झूठा है, जिसने नैतिक स्वीकृति को ही अपनी उपलब्धि मान लिया ।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

इंटरनेट मीडिया कंटैंट नहीं, बच्चे हैं देश के भविष्य

डॉ विजय गर्ग

आज का युग सूचना और प्रौद्योगिकी का है, जहाँ इंटरनेट और सोशल मीडिया (इंटरनेट मीडिया) हमारे जीवन का एक अविभाज्य अंग बन चुके हैं। कंटेंट की बाढ़ है—वीडियो, पोस्ट, रील्स, और लगातार स्क्रॉलिंग। इस डिजिटल शोरगुल के बीच, हम अक्सर एक मूलभूत सत्य को अनदेखा कर देते हैं: इंटरनेट मीडिया कंटैंट केवल एक साधन या क्षणिक मनोरंजन है, जबकि बच्चे (हमारी नई पीढ़ी) हमारे देश का वास्तविक और चिरस्थायी भविष्य हैं।

1. प्राथमिकता का पुनर्निर्धारण

वर्तमान समय में, अधिकांश परिवारों में, बच्चों की स्क्रीन टाइम (इंटरनेट मीडिया के उपभोग) में बेतहाशा वृद्धि हुई है। माता-पिता अक्सर बच्चों को शांत रखने या व्यस्त रखने के लिए उनके हाथ में गैजेट थमा देते हैं। यह व्यवहार दर्शाता है कि हमारी तात्कालिक प्राथमिकता डिजिटल कंटैंट को सहज पहुंच प्रदान करने की हो गई है, न कि बच्चों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करने की।

चुनौती: कंटेंट की दुनिया मोहक और व्यसनी है। यह बच्चों को केवल उपभोक्ता बना रही है, न कि निर्माता (या विचारक ।

समाधान: हमें यह समझना होगा कि बच्चों के बचपन के ये महत्वपूर्ण वर्ष एक मज़बूत आधारशिला हैं, जिन्हें केवल रचनात्मक मानवीय संपर्क, खेल, किताबें और वास्तविक दुनिया के अनुभवों से ही पोषित किया जा सकता है।

२. मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल पर प्रभाव

अत्यधिक इंटरनेट मीडिया का उपयोग बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक-भावनात्मक विकास पर गहरा प्रभाव डालता है।

फोमो (गायब होने का डर : सोशल मीडिया पर दूसरों की 'आदर्श' जीवनशैली देखकर बच्चे अपने जीवन और आत्म-छवि को लेकर असुरक्षित महसूस कर सकते हैं।

आत्म-छवि : लगातार 'लाइक' और सत्यापन की चाहत उनकी आत्म-छवि को बाहरी मापदंडों पर निर्भर कर देती है।

सामाजिक कौशल में कमी: वास्तविक दुनिया के दोस्तों के साथ खेलना, विवादों को सुलझाना, और भावनात्मक संकेतों को समझना - ये सभी महत्वपूर्ण सामाजिक कौशल ऑनलाइन इंटरैक्शन में विकसित नहीं हो पाते।

३. सुरक्षा और डिजिटल साक्षरता

सोशल मीडिया के भविष्य में 18 साल से कम उम्र के लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने वाली अधिक सुविधाएँ आ सकती हैं, जैसे माता-पिता का नियंत्रण। लेकिन केवल तकनीक पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है।

सकारात्मक दृष्टिकोण: इंटरनेट केवल खतरा नहीं है; यह ज्ञान का एक विशाल भंडार भी है।

आवश्यकता: हमें बच्चों को केवल कंटेंट से दूर रखने के बजाय, उन्हें जिम्मेदार डिजिटल नागरिक बनाना होगा। उन्हें यह सिखाना होगा कि ऑनलाइन क्या सुरक्षित है और क्या असुरक्षित (ऑनलाइन सुरक्षा), फर्जी खबरों को कैसे पहचानें, और अपनी व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा कैसे करें (डिजिटल साक्षरता)। यह शिक्षा ही उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करेगी।

4. निवेश: भविष्य की पीढ़ी में

देश का भविष्य किसी एल्गोरिथम या ट्रेंडिंग हैशटैग पर निर्भर नहीं है; यह हमारे बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, नैतिक मूल्यों और क्षमताओं पर निर्भर करता है।

समय का निवेश: माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों के साथ सार्थक समय बिताना चाहिए। उन्हें उनकी रुचियों को पहचानने और विकसित करने में मदद करनी चाहिए, चाहे वह विज्ञान हो, कला हो, या खेल।

मूल्यों का निवेश: शिक्षा प्रणाली में नैतिक और मानवीय मूल्यों (जैसे करुणा, सहयोग, सत्यनिष्ठा) पर जोर दिया जाना चाहिए, ताकि वे एक समावेशी और मजबूत समाज का निर्माण कर सकें।

निष्कर्ष

यह समय है कि हम एक समाज के रूप में अपनी प्राथमिकताओं को फिर से जाँचें। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम अपने बच्चों को डिजिटल दुनिया के सेवक नहीं, बल्कि उसके मालिक बनने के लिए प्रशिक्षित करें।

इंटरनेट मीडिया कंटैंट क्षणभंगुर है, लेकिन हमारे बच्चे देश की सबसे अमूल्य संपत्ति हैं। उनका संपूर्ण विकास ही भारत के एक सशक्त, समृद्ध और नैतिक भविष्य की गारंटी है। हमें कंटैंट को प्राथमिकता देना बंद करके, मानव पूंजी पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करना होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

झारखंड के मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान ने दुमका से राष्ट्रीय लोक अदालत का वर्चूअल उद्घाटन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान आज दुमका पहुंचे. यहां के कन्वेंशन हॉल में उन्होंने राष्ट्रीय लोक अदालत का वर्चुअल उद्घाटन किया. साथ ही स्टेट लेवल लीगल सर्विसेज कम एंपावरमेंट कैंप में भी भाग लिया. इस अवसर पर उन्होंने 22575 लाभुकों के बीच 13 करोड़ 86 लाख की परिसंपत्ति का वितरण किया.

राष्ट्रीय लोक अदालत का वर्चुअल उद्घाटन के मौके पर झारखंड उच्च न्यायालय के तीन जस्टिस न्यायाधीश सुजीत नारायण प्रसाद, न्यायाधीश आनंदा सेन और न्यायाधीश प्रदीप कुमार श्रीवास्तव भी मौजूद रहे. इसके साथ ही जिले के उपायुक्त अभिजीत सिन्हा, एसपी पीताम्बर सिंह खेरवार की उपस्थिति रही. साथ ही काफी संख्या में लाभुकों ने भाग लिया. इस मौके पर झारखंड सरकार के कल्याणकारी योजनाओं के स्टालों का भी उन्होंने निरीक्षण किया. वे अपने परिवार के साथ दुमका पहुंचे

अपने संबोधन में उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान ने कहा कि हमें ऐसी न्याय प्रणाली का निर्माण करना होगा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति केवल एक केस फाइल नहीं बल्कि गरिमा और संवेदनशीलता से युक्त एक मानव के रूप में दिखे. जब हम कमजोर वर्ग के लोगों की बात ध्यान से सुनते हैं तो हमें यह समझ में आता है कि उनकी पीड़ाएं कितनी वास्तविक हैं. उन्होंने कहा, ₹घरेलू हिंसा से पीड़ित व्यक्ति केवल कानूनी संरक्षण का ही नहीं चाहता बल्कि वह भावनात्मक सहारा और आर्थिक सुरक्षा भी चाहता है. शोषण से बचाया गया कोई बच्चा केवल पुनर्वास ही नहीं बल्कि शिक्षा और स्नेह भी चाहता है. अधिकारों से वंचित किया गया कोई श्रमिक केवल मुआवजा ही नहीं बल्कि शोषण के विरुद्ध दीर्घकालिक सुरक्षा भी चाहता है.₹ लोगों को संबंधित करते हुए मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान ने कहा, ₹न्याय केवल कानून के माध्यम से ही प्रदान नहीं किया जाना चाहिए बल्कि संकट में पड़े लोगों का साथ करुणा और भावनापूर्ण तरीके से देना होगा. भविष्य में हमें न्याय प्रणाली को और अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनाना होगा. कानूनी सेवाओं में टेक्नोलॉजी को अधिक सशक्त करना होगा ताकि राज्य के दूर-दराज क्षेत्रों तक भी हमारी पहुंच सुनिश्चित हो सके. हमें नीतियों और योजनाओं को बदलती सामाजिक वास्तविकताओं के अनुरूप ढालना होगा.

मुख्य न्यायाधीश ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि टकराव के स्थान पर संवाद और सुलह को प्राथमिकता देना ही किसी समाज के नैतिक और सामाजिक ताने-बाने को सुदृढ़ करता है. लोक अदालतें इसी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं. वे ऐसा मंच प्रदान करती हैं जहां विवादों को बढ़ाया नहीं जाता, बल्कि करुणा, सम्मान और आपसी समझ के साथ सुलझाया जाता है. वे न केवल लंबित मामलों को कम करती हैं, बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से मानवीय पीड़ा को कम करती हैं. वे ऐसे समाधान प्रस्तुत करती हैं जो थोपे नहीं जाते, बल्कि पक्षकारों द्वारा स्वेच्छा से स्वीकार किए जाते हैं. झालसा अब केवल निःशुल्क कानूनी प्रतिनिधित्व प्रदान करने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि समग्र सशक्तिकरण की सुविधा प्रदाता बन गई है.

चाईबासा के भ्रष्ट कार्यपालक अभियंता अरविंद सिंह 70 हजार घूस

भ्रष्टाचार के बारूदी ढेर पर बसा झारखंड अभियंत्रण सेवा जहां पीड़ित ठेकेदार रितेश चिरानिया ने की थी एसीबी से शिकायत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड का अभियंत्रण विभाग भ्रष्टाचार के मकड़े जाल बुनकर काम करता है . यहां भवन हो या सड़क हर विभाग में कुछ खास चहेते ठेकेदारों, राजनीति में पैठ रखने वालों की तूती बोलती है शेष ऊपर वाले के भरोसे किसी प्रकार अपना कार्य निष्पादन कर पाते हैं. कुछ अभियंता विभिन्न विभागों में तो सरकारी दमाद माने जाते हैं . सच पुछा जाय तो मंत्री भी यहां ईडी के जाल में फंस काल कोठरी में बंद है वहीं अनेक अभियंताओं की आज भी सिक्का खूब चलता है. आज भी यहां कितने ही 'विरेंद्र राम' के अनुयाई हैं कहना मुश्किल है . इन्हीं के राह चलते आज एक कार्यपालक अभियंता चाईबासा में भ्रष्टाचार निवारण विभाग के हत्थे चढ़ गया, शेष में खलबली मची हुई है . झारखंड राज्य एंटी करप्शन ब्यूरो की टीम ने शनिवार को चाईबासा में भ्रष्टाचार के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर लिया गया है . एसीबी ने भवन निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता अरविंद कुमार सिंह को 70 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया है. यह कार्रवाई पुराने उपायुक्त कार्यालय परिसर से की गई.

जानकारी के अनुसार, एक भवन निर्माण कार्य के बकाया भुगतान को लेकर अभियंता ने ठेकेदार से घूस की मांग की थी. करीब 55 लाख रुपये की लागत से कराए गए निर्माण कार्य में से ठेकेदार को अब तक 29 लाख रुपये का भुगतान किया जा चुका था. शेष राशि का बिल पास कराने के बदले अभियंता ने 2.5 प्रतिशत कमीशन की मांग की थी, जो करीब 70 हजार रुपये होती है. लगातार रिश्वत की मांग से परेशान ठेकेदार रितेश चिरानिया ने इस मामले की लिखित शिकायत एसीबी जमशेदपुर से की. शिकायत की जांच के बाद एसीबी ने आरोप सही पाए जाने पर जाल बिछाने का फैसला किया.

पूर्वनिर्धारित योजना के तहत जैसे ही कार्यपालक अभियंता अरविंद कुमार सिंह ने ठेकेदार से 70 हजार रुपये लिए, एसीबी की टीम ने मौके पर ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया. गिरफ्तारी के बाद आरोपी अभियंता को पूछताछ और आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए एसीबी जमशेदपुर कार्यालय ले जाया गया है. एसीबी पूरे मामले की गहन जांच कर रही है. मामला कुछ भी हो कोल्हान आज भी ईंजिनियरों की पहला पसंदीदा इलाका है .अगर देखा जाए तो अनेक अभियंता है इसी कोल्हान के तीनों सिंहभूम के विभिन्न विभागों में जो दशकों, वर्षों से जमकर लूट मचाये हुए हैं. सरकार सबकुछ जनती पर चढ़ावा पहुंचते ही नतमस्तक रहना हर पार्टी की सरकार का नियम है यहां.

वंदना डाडेल तथा मस्तराम मीणा को मुख्य सचिव रैंक में प्रोन्नति मिली

अमिताभ कौशल बनेगें प्रिंसिपल सेक्रेटरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड कैडर की आईएएस वंदना दादेल तथा मस्तराम मीणा को मुख्य सचिव रैंक में प्रोन्नति देने का साफ साफ हो गया है. जानकारी के अनुसार, सरकार ने इससे संबंधित संचिका पर अपनी सहमति दे दी है. वंदना दादेल को सीएस रैंक का लाभ एक जनवरी 2026 से मिलेगा. इससे संबंधित आदेश जल्द ही जारी कर दिया जाएगा. वंदना दादेल 1996 बैच की आईएएस हैं. वहीं पेयजल विभाग के प्रधान सचिव मस्तराम मीणा भी 1996 बैच के अफसर हैं. ऐसा माना जा रहा है झारखंड वंदना दादेल की प्रशासनिक स्तर पर कद-काठी आगे और अधिक बढ़ने वाली है ।

वर्तमान में झारखंड कैडर के तीन सीएस रैंक के अफसर केंद्रीय प्रतिनियुक्त में हैं. इनमें शैलेश कुमार सिंह, निधि खरे और सत्येंद्र सिंह शामिल हैं. शैलेश कुमार सिंह भारत सरकार ग्रामीण विकास मंत्रालय के सचिव हैं और 1991 बैच के अफसर हैं. वे 31 मार्च 2026 को रिटायर हो जाएंगे. वहीं 1992 बैच की निधि खरे केंद्र में उपभोक्ता मामले की सचिव हैं. जबकि 1995 बैच के सत्येंद्र सिंह केंद्र में कैबिनेट सचिवालय के एडिशनल सेक्रेट्री के पद पर कार्यरत हैं.

झारखंड में मुख्य सचिव सहित तीन सीएस रैंक के अफसर हैं. मुख्य सचिव अविनाश कुमार 1993 बैच के अफसर हैं. राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव नितिन मदन कुलकर्णी 1995 बैच के अफसर हैं. वहीं स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह 1995 बैच के अफसर हैं.

कमर्शियल टैक्स विभाग के सेक्रेट्री अमिताभ कौशल प्रिंसिपल सेक्रेट्री के पद पर प्रोन्नत होंगे. अमिताभ कौशल 2001 बैच के अफसर हैं. वहीं वर्तमान में प्रधान

सचिव रैंक में 1999 बैच के राहुल पुरवार और सुनील कुमार हैं. इस रैंक के 1999 बैच के अफसर विनय चौबे सस्पेंड हैं.

प्रिंसिपल सेकेट्री रैंक के पांच अफसर केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर हैं. इसमें 1997 बैच के सुनील वर्णवाल नेशनल हेल्थ ऑथिरिटी के सीइओ हैं. 1998 बैच के राहुल शर्मा केंद्रीय कैबिनेट सचिवालय में एडिशनल सेकेट्री हैं. 1998 बैच के केके सोन जलशक्ति मंत्रालय में एडिशनल सेक्रेट्री हैं. 1998 बैच की हिमानी पांडेय प्रमोशन ऑफ इंडस्ट्रीज एंड इंटरनल ट्रेड में एडिशनल सेक्रेट्री हैं. 1998 बैच की अराधना पटनायक स्वास्थ्य मंत्रालय में एडिशनल सेक्रेट्री हैं.

राज्य सरकार ने चार आईएएस अफसरों को सचिव रैंक में प्रोन्नति की मंजूरी दी है. इसमें अमित कुमार जो वर्तमान में कॉमर्शियल टैक्स कमिश्नर हैं. अमित कुमार 2010 बैच के अफसर हैं. वहीं केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर तैनात अमित कुमार जो वर्तमान में केंद्रीय प्रतिनियुक्ति में हैं. वे वर्तमान में ट्राइबल अफेयर मिनिस्टर के पीएस हैं. ये भी 2010 बैच के अफसर हैं. इन्हें भी सचिव रैंक में प्रोन्नति दी जाएगी. इसके अलावा 2010 बैच के राजीव रंजन और अबु इमरान को भी सचिव रैंक में प्रोन्नति दी जाएगी।

स्लाइट में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन (एफ.आई. एफ.ए.टी.एफ. - 2025) का समापन

लोंगोवाल, 13 दिसंबर (जगसीर सिंह)-

संत लोंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, लोंगोवाल के खाद्य अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा आयोजित ₹खाद्य नवाचार, खाद्य एलर्जी और पारंपरिक खाद्य पदार्थ₹ विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन (एफ. आई. एफ. ए. टी. एफ. - 2025) का समापन 12 दिसंबर, 2025 को ज्ञानवर्धक सत्रों, विशेषज्ञ व्याख्यानों और उत्साहवर्धक शोध प्रस्तुतियों से भरे एक दिन के बाद हुआ। दूसरे दिन देश भर के शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और छात्रों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली, जिससे दो दिवसीय शैक्षणिक सम्मेलन का शानदार समापन हुआ।

सम्मेलन के दौरान, सार-पुस्तिका को हार्ड कॉपी और कॉम्पैक्ट डिस्क पर जारी किया गया और शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और उद्योग जगत के अधिकारियों के लिए सूचना के प्रसार और पहुंच में सुधार के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन ऑनलाइन पोर्टल पर भी लॉन्च किया गया। एफ. आई. एफ. ए. टी. एफ. -2025 के अध्यक्ष प्रोफेसर कमलेश प्रसाद ने बताया कि खाद्य प्रौद्योगिकी पर नियमित पाठ्यक्रम या शोध संचालित करने वाले सभी संस्थानों और विश्वविद्यालयों को सार-पुस्तिका की हार्ड कॉपी भेजी जाएंगी। दिन की शुरुआत खाद्य क्षेत्र में उभरते विकासों की गहरी समझ विकसित करने वाले आमंत्रित विशेषज्ञ व्याख्यानों से हुई। प्रतिष्ठित वक्ताओं में मैसूरु स्थित सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के डॉ. सुकुमार देबनाथ; इम्फाल स्थित केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की प्रो. एनजी. इबोयाइमा सिंह; और असम स्थित तेजपुर विश्वविद्यालय के प्रो. लक्ष्मीकांत एस. बडवाइक शामिल थे। उनके व्याख्यानों ने व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान की और भारत की खाद्य प्रणालियों के विकसित होते परिदृश्य को आकार देने वाली चल रही प्रगति पर प्रकाश डाला।

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के विशिष्ट अतिथि डॉ. दलबीर सिंह सोगी ने सभा को संबोधित करते हुए एसएलआईआईटी द्वारा एक जीवंत शैक्षणिक मंच के निर्माण की सराहना की, जो संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं और छात्रों के बीच रचनात्मक संवाद और सार्थक जुड़ाव को सक्षम बनाता है। एसएलआईआईटी लोंगोवाल के निदेशक और मुख्य संरक्षक प्रो. मणिकांत पासवान ने भी सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो. कमलेश प्रसाद के समर्पित प्रयासों की प्रशंसा की और शैक्षणिक संस्थानों और उद्योग भागीदारों के बीच निरंतर सहयोग के महत्व पर प्रकाश डाला।

दिन का एक महत्वपूर्ण आकर्षण शोध प्रस्तुतियों की श्रृंखला थी। आठ तकनीकी सत्रों में, प्रतिभागियों ने खाद्य क्षेत्र में वर्तमान रुचियों, नवाचारों और चुनौतियों को दर्शाने वाले कार्यों का प्रदर्शन किया। दो पोस्टर सत्रों ने कार्यक्रम में और अधिक जीवंतता जोड़ी, जहाँ युवा शोधकर्ताओं ने रचनात्मक दृश्य प्रदर्शनों के माध्यम से अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए।

सम्मेलन का समापन बहुप्रतीक्षित पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ, जिसमें उत्कृष्ट शोध को सम्मानित किया गया। सभी आठ तकनीकी सत्रों में सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुतियों के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए, जिनमें असाधारण स्पष्टता, प्रासंगिकता और प्रस्तुति की गुणवत्ता को मान्यता दी गई। इसी प्रकार, दो पोस्टर सत्रों से सर्वश्रेष्ठ पोस्टर प्रस्तुति पुरस्कार विजेताओं को उनके नवाचार और वैज्ञानिक संचार कौशल के लिए सम्मानित किया गया। एसएलआईआईटी के संकाय सदस्यों और गणमान्य व्यक्तियों ने प्रतिभागियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी और हॉल तालियों और प्रशंसा से गूंज उठा।

विविध शैक्षणिक सत्रों और देश भर से संस्थागत भागीदारी के साथ, एफ. आई. एफ. ए. टी. एफ. - 2025 के दूसरे दिन ने खाद्य अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी में सार्थक संवाद को आगे बढ़ाने और ज्ञान साझाकरण को बढ़ावा देने के लिए SLIET की प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित किया। सम्मेलन का समापन सकारात्मक रूप से हुआ, जिसमें भारत की खाद्य प्रणालियों की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए निरंतर अनुसंधान, सहयोग और नवाचार के महत्व पर जोर दिया गया।

राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजन पर सरायकेला कोर्ट ने बनाया नया रिकॉर्ड

*7468 न्यायिक मामलों का हुआ रिकार्ड तोड निपटारा ,₹1.33 करोड़ से अधिक राजस्व प्राप्ति *

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला कोर्ट, राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, रांची के दिशा-निर्देशों तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सरायकेला -खरसावां रामा शंकर सिंह के मार्गदर्शन में आज राष्ट्रीय लोक अदालत का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन ऐतिहासिक शहर स्थित सरायकेला सिविल कोर्ट तथा उप-न्यायालय, चांडिल में एक साथ संपन्न हुआ।

जहां कुल 08 पीठों का गठन किया गया। जहां अब तक के सभी रिकॉर्ड तोड़ते हुए कुल 7468मामलों का निपटारा किया गया। जहां कुल राजस्व संग्रह: ₹1,33,74,186/-, 6349 प्री-लिटिगेशन मामले: ₹1,16,03,002/- तथा 1119 लंबित मामले: ₹17,71,184/- में कुल रकम मिले । सामाजिक कल्याण और रोजगार कार्यक्रम के दौरान न्यायिक निपटान के साथ-साथ सामाजिक कल्याण योजनाओं का भी लाभ दिया गया। जहां चयनित अभ्यर्थियों को ऑफ़र/नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए।वही मातृत्व प्रसूति प्रसुविधा योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को सुविधाएँ वितरित की गईं।

आजके इस कार्य में श्रम विभाग का विशेष सहयोग रहा । जहां भारी जनसमागम और सुगम प्रक्रिया राष्ट्रीय लोक अदालत में भारी संख्या में वादकारी उपस्थित हुए।यारा लीगल वॉलंटियर्स की टीम ने प्रत्येक पीठ पर उपस्थित रहकर वादकारियों को मार्गदर्शन दिया।

इससे उपस्थित जनसमूह को न्यायिक लाभ सहजता से प्राप्त हुआ और प्रक्रिया सुचारु रूप से संपन्न हुई। जिला मुख्यालय एवं चांडिल में आयोजित इस राष्ट्रीय लोक अदालत ने न केवल न्यायिक निपटान में नया किर्तिमान रचा, बल्कि सामाजिक कल्याण योजनाओं के वितरण से जनहित को भी सशक्त किया। यह आयोजन न्याय और जनसेवा का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर सदैव रहेगा ।

शांति घोष और सुनीति चौधरी : क्रांति की प्रेरक एवं निर्भय मशाल

• प्रमोद दीक्षित मलय

वह 14 दिसम्बर, 1931 की एक सामान्य सुबह थी। प्रकृति ने शीत ऋतु की चादर ओढ़ रखी थी। मार्ग किनारे लगे पेड़ मानो वृक्षासन की मुद्रा में मौन साधे साधनारत थे। सड़कों पर बिछी काली डामर पर पड़ी ओस में साईकिल और मोटर गाडियां अपने पगचिह्न अंकित करते जा रहे थे। सूरज भी रजाई से निकल नीले गगन में चहलकदमी करने लगा था। क्रांति के उद्घोष वंदेमातरम्की जन्मभूमि बंगाल के एक जिला मुख्यालय कोमिला (अब बांग्लादेश में है) ने ठंडी रात की गहरी नींद से जाग चूल्हे पर अभी चाय की केतली रख नाश्ता बनाना शुरू ही किया था। रसोईघरों से मसालों की ताजी खुशबू झरोखों से निकल माहौल में बिखर रही थी। स्कूल जाने वाले बच्चों का कलरव घरों की खिड़कियों से छनकर वातावरण में नाच रहा था। दुकानों में रोजमर्रा का सामान करीने से सहेजा जाने लगा था। सड़कों से गुजरते इक्का-तांगों की टक-टक और घोड़ों की हिनहिनाहट की संगति से उपजी मधुर ध्वनि परिवेश में संगीत घोल रही थी। किंतु ठंड से जकड़े शहर के हृदय में जिला मजिस्ट्रेट चार्ल्स जेफ्री बॉकलैंड स्टीवंस का भारतीय क्रांतिकारियों एवं जनता के विरुद्ध किए जा रहे अमानवीय एवं दमनात्मक व्यवहार के विरुद्ध आक्रोश के अंगारे दहक रहे थे। स्टीवंस को उसका क्रूरता का फल चखाने के लिए क्रांतिकारी दल योजना बना रहे थे। उस ठंडी सुबह में क्रांति की अग्नि की लपटों से स्वयं को बचाए स्टीवंस अपने दफ्तर और अदालत न जाकर दो स्तरीय सुरक्षा घेरे में अपने बंगले से ही सभी व्यवस्थाओं का संचालन कर रहा था। तभी बंगले के फाटक पर एक घोड़ागाड़ी रुकी और 14-15 वर्ष की दो बालिकाएं उतर बंगले की ओर बढ़ीं।

"ठहरो, वहीं रुक जाओ", पहरेदार संतरी जोर से चिल्लाया। लड़कियां ठिठक गईं। संतरी निकट आ गया था। लड़कियों ने बताया कि उनको अपने स्कूल द्वारा आयोजित तैराकी प्रतियोगिता के सम्बन्ध में अनुमति एवं सहयोग हेतु मजिस्ट्रेट साहब से मिलना है और एक कागज में अपने छद्म नाम लिखकर संतरी के हाथ पर रख दिया। संतरी ने बालिकाओं को वहीं गेट पर रोक, नाम की पर्ची आगे बढ़ा दी और उनके बस्तों की सघन तलाशी लेने लगा, पर कुछ न मिला। थोड़ी देर में अंदर से मिलने हेतु बुलावा आ गया। दोनों किशोरियों को एक सिपाही साथ लेकर मजिस्ट्रेट के कमरे के द्वार तक छोड़ आया। लड़कियों ने कमरे में प्रवेश कर उचित अभिवादन कर परिचय दिया, ₹मैं शांति घोष, फैजन्नुसा गर्ल्स हाईस्कूल की कक्षा 8वीं की छात्रा और विद्यालय के छात्रा संघ की संस्थापक सचिव हूं। और यह है मेरी सहयोगी सुनीति चौधरी।₹ स्टीवंस बालिकाओं की प्रखरता, निडरता और बातचीत के सलीके से प्रभावित हो कुर्सी पर बैठने का संकेत कर मिलने का उद्देश्य पूछा। शांति घोष ने कहा कि विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती कल्याण देवी के निर्देशन में छात्रा संघ द्वारा एक तैराकी प्रतियोगिता आयोजित की गई है। प्रतियोगिता आयोजन हेतु अनुमति और सफलता हेतु आपका सहयोग चाहिए। तब तक सुनीति चौधरी ने मेज पर स्टीवंस के सम्मुख प्रार्थना पत्र रख दिया। उसने प्रार्थना पत्र उठाकर पढ़ा और बोला, ₹अच्छा आयोजन है, अनुमति मिल जाएगी। पर यह प्रार्थना पत्र अपूर्ण है, इसमें प्रधानाध्यापिका का हस्ताक्षर और मुहर नहीं है। यह पूरा कराकर लाओ।₹ तब सुनीति चौधरी ने अनुरोध किया कि यह टिप्पणी अंकित कर दें, तो हमें आसानी होगी। स्टीवंस ने प्रार्थना पत्र पर टीप निर्देश लिखने हेतु पेन निकाल ज्यों ही सिर झुकाया, दोनों बालिकाओं ने स्वचालित पिस्तौलों से उसके सीने पर फायर झोंक दिया। स्टीवंस जल्दी से उठा, लड़खड़ाता अंदर कमरे की ओर भागा। किंतु कमरे के पहले देहरी पर ही औंधे मुंह गिर गया। उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे। इसी बीच गोलियों की आवाज सुनकर अर्दली और अन्य सिपाही भाग कर अंदर घुसे तथा शांति घोष एवं सुनीति चौधरी को पकड़ लिया। दोनों बालिकाओं के मुखमंडल कार्य की सिद्धि के तेज से दमक रहे थे। गर्व से उठे शीश पर बलिदानी क्रांतिकारी नभ से भाव सुमन बरसा रहे थे। मजिस्ट्रेट स्टीवंस की द्वि-स्तरीय सुरक्षा के बीच दिन दहाड़े दो बालिकाओं द्वारा हत्या किये जाने से अंग्रेजी सत्ता की लंदन तक बड़ी किरकिरी हुई।

शांति घोष और सुनीति चौधरी को 18 जनवरी, 1932 को अदालत में पेश किया गया। उस दिन वे दोनों गर्व से ऐसे चल रही थीं जैसे दो सिंहनी किसी आदमखोर भेड़िए का शिकार कर विजय का उत्सव मना रही हों। अदालत की कार्रवाई तो केवल दिखावा थी। अंग्रेजी सरकार को तो बदला लेना था। किंतु 16 वर्ष से कम उम्र होने के कारण फांसी नहीं दे सकते थे। आखिर 27 जनवरी, 1932 को फैसला कर दोनों को आजीवन कारावास की सजा दे काला पानी भेज दिया गया। जेल जीवन में दोनों के ऊपर बहुत जुल्म एवं अत्याचार किए गए किंतु वे न डरीं, न झुकी बल्कि साहस के साथ मां भारती की अर्चना-आराधना में जुटीं रहीं। आगे महात्मा गांधी और अंग्रेज सरकार के बीच एक समझौते के बाद 1939 में दोनों को रिहा कर दिया गया। जेल से छुटने के बाद शांति घोष ने पुनः पढ़ाई शुरू की, 1942 में विवाह किया और राजनीति में भाग लेकर 1952 से 1967-68 तक पश्चिम बंगाल विधान सभा और परिषद की सदस्य रहीं। वर्ष 1989 में निधन हुआ। सुनीति चौधरी भी सामाजिक जीवन जीते हुए 70 वर्ष की आयु पूर्ण कर 1988 में स्वर्ग सिधार गईं।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास के पृष्ठों पर शांति घोष और सुनीति चौधरी के इस महनीय कार्य को भले ही महत्वपूर्ण जगह न मिली हो, उनके नाम पर संस्थानों का नामकरण न हुआ हो, भले ही उनके योगदान को उपेक्षा की धूल से ढक दिया गया हो, किंतु इससे उनकी भूमिका कमतर नहीं हो जाती। वे दोनों क्रांति का अग्निधर्मी स्वर थीं, प्रेरणा और निर्भयता की मशाल थीं। भारत माता के चरणों में समर्पित ये दोनों पुष्प युगों-युगों तक अपनी सुगंध से स्वतंत्रता का गौरव बोध कराती रहेंगी।

लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।
बांदा, उ.प्र.

जस्टिस के विरुद्ध इंडि गठबंधन का महाभियोगी षड्यंत्र!!

विजय सहगल

10 दिसम्बर 2025 को जहां एक ओर देश में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन की इस घोषणा हर्ष और खुशी की लहर थी कि भारतीय संस्कृति के पुण्य दीपोत्सव पर्व ₹दीपावली₹ को विश्व सांस्कृतिक धरोहर की सूची शामिल किया जा रहा था वही दूसरी ओर देश के 12 विपक्षी दलों का एक समूह अपने राजनैतिक हित लाभ और स्वार्थ के वशीभूत सनातन धर्म की परम्पराओं, रीति रिवाजों और प्रथाओं के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा था। भारतीय त्योहारों, पर्वों और मंगल उत्सवों मे दीपों का प्रज्वलन एक आवश्यक और अति महत्वपूर्ण परिपाटी है जो सदियों से सनातन धर्म का एक अभिन्न अंग रहा है। साधारणतः आज भी ग्रामीण और शहरी घरों मे सनातनी हिन्दू धर्मावलम्बियों के घर मे तुलसी चौरा और घरों की दहलीज़ पर संध्या के समय प्रज्वलित दीपक रखने की परंपरा निभाई जाती है लेकिन डीएमके के टीआर बालू, कनिमोझी कॉंग्रेस नेत्री प्रियंका बाड्रा, समाजवादी मुखिया अखिलेश यादव, असुद्दीन ओवैसी, शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले, शिवसेना उद्धव गुट सहित इंडि गठबंधन 120 से भी ज्यादा सांसदों ने मदुरै हाई कोर्ट के जस्टिस स्वामीनाथन को उनके पद से हटाने के लिए सिर्फ इसलिये महाभियोग का नोटिस लोकसभा अध्यक्ष को दिया है क्योंकि उन्होने अभी 1 दिसम्बर 2025 को तमिलनाडू के मदुरै, पहाड़ी पर स्थित थिरुपरनकुन्द्रम सुब्रमानिस्वामी मंदिर के दीप स्तम्भ, कार्तिगई पर पारंपरिक दीप प्रज्वलित करने के आदेश जिला प्रशासन और मंदिर प्रशासन को दिये थे।

न्यायालय का मानना था कि इस दीप स्तंभ पर दीप प्रज्वलन से दरगाह के किसी भी अधिकारों का हनन नहीं होता। डीएमके सरकार ने उक्त आदेश इसलिये मानने से इंकार कर दिया क्योंकि दीप स्तंभ से 15 मीटर दूर एक दरगाह के कारण कानून व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो सकती है? यही नहीं, इस आदेश के पालन की अवेहलना पर जस्टिस जीआर स्वामीनाथन ने पुनः आवेदक रमा रविकुमार को सीआईएसएफ़ बलों की अभिरक्षा मे मंदिर में स्वयं ही दीप प्रज्वलन के आदेश दिये और तमिलनाडू सरकार के मुख्य सचिव अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून व्यवस्था) को न्यायालय की अवमानना के लिये 17 दिसम्बर को कोर्ट मे पेश होने के आदेश दिये।

संविधान की धारा 61, 124 (4, 5), 217 एवं 218 के तहत हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों के विरुद्ध सिद्ध कदाचार या अक्षमता के आधार पर महाभियोग चलाने का आधार है। प्रायः न्यायालयों के आदेशों के विरुद्ध उच्चतम न्यायालयों में अपील के माध्यम से सरकारे राहत का रास्ता खोजती हैं पर देश मे ऐसा पहली बार हुआ है कि इंडि गठबंधन के इन माननीयों ने मदुरै हाई कोर्ट बेंच के न्यायाधीश जीआर स्वामीनाथन के विरुद्ध महाभियोग इसलिये लाया क्योंकि उन्होने एक सनातनी हिन्दू रमा रविकुमार को अपने धार्मिक रीति रिवाजों की अनुपालना हेतु माननीय न्यायालय से दीप स्तम्भ पर दीप प्रज्वलन की परंपरा के निर्वहन का निवेदन किया था और माननीय न्यायाधीश ने आवेदक के मंदिर के दीप स्तम्भ पर दीप प्रज्वलन के धार्मिक अधिकारों की पूर्ति हेतु शासन को आदेश दिये थे।

माननीय न्यायाधीश ने उस तमिलनाडू की पूर्वाग्रही स्टालिन सरकार और उसके मंत्री पहले भी सनातन धर्म के विरुद्ध अनर्गल, अकारण और असमय टिप्पणी करते रहे है लेकिन खेद और अफसोस तो ये है कि अपने आपको धर्मनिरपेक्ष दल का ढिंढोरा पीटने वाली कॉंग्रेस, डीएमके, समाजवादी पार्टी और राष्ट्रवादी कॉंग्रेस (शरद पवार) जैसे दल सिर्फ अपने राजनैतिक स्वार्थ और अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के कारण डीएमके के साथ खड़े हो रहे हैं जो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। कल के दिन यदि सरकार दूसरे धर्म संप्रदाय के दुराग्रह पर दीपावली उत्सव पर दिये जलाने की परंपरा का विरोध करेंगे तो क्या इस दीपोत्सव पर भी प्रतिबंध लगाए जाएंगे? क्या 1675 मे हिन्दू धर्म बचाने के लिये, दुष्ट औरंगजेब के आदेश पर और इस्लाम न अपनाने के कारण, नौवें सिक्ख गुरु तेग बहादुर साहब के सिर काटे जाने के बलिदान को सिर्फ इसलिए न मनाएँ क्योंकि गुरु तेग बहादुर जी का ये महान बलिदान मुगल शासक औरंगजेब की क्रूरता, निर्दयीता और अत्याचार और अमानवीयता को दर्शाता है?

इंडि गठबंधन के इन राजनीतिक दलों की अपने राजनैतिक वोट बैंक की खातिर किसी अल्पसंख्यक धर्म संप्रदाय के तुष्टिकरण की पराकाष्ठा है। आज मदुरै हाई कोर्ट की बेंच के जस्टिस जीआर स्वामीनाथन के विरुद्ध लाये जाने वाले महाभियोग प्रस्ताव के साथ इंडि गठबंधन के साथी दल, तमिलनाडू की स्टालिन सरकार के साथ इसलिए खड़े हैं क्योंकि आने वाले पाँच माह बाद 2026 में तमिलनाडू मे विधान सभा के चुनाव हैं। तमिलनाडू की डीएमके सरकार जस्टिस स्वामीनाथन पर महाभियोग लाने की आड़ में अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के माध्यम से वोटों का ध्रुवीकरण करना चाहती है अन्यथा क्या कारण थे कि हाई कोर्ट ने जिस सनातन धर्मावलम्बी रमा रविकुमार के धार्मिक अधिकारों के रक्षार्थ हुए निर्णय को दरकिनार करते हुए डीएमके सरकार, कानून व्यवस्था की ओट लेकर दरगाह के अनुयायियों के पक्ष में खड़ी हो गयी। इंडि गठबंधन के दल ये भलीभाँति जानते हैं कि अल्पसंख्यक तुष्टिकरण से जो वोट बैंक उन्हे मिलेगा, कदाचित ही हिन्दू धर्मावलम्बियों से मिले?

अमृतसर में राष्ट्रीय लोक अदालत के दौरान 30,298 मामलों का निपटारा

अमृतसर, 13 दिसंबर (साहिल बेरी)

माननीय न्यायमूर्ति श्री अश्वनी कुमार मिश्रा, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय–सह–कार्यकारी अध्यक्ष, पंजाब राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, एस.ए.एस. नगर के मार्गदर्शन में आज आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत को विभिन्न न्यायालयों से भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि लोक अदालतों ने विवादों के त्वरित निपटारे और मामलों के शीघ्र समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे लंबित मामलों में कमी आई है और न्याय तक पहुंच तेज हुई है।

आज अमृतसर जिले में राष्ट्रीय लोक अदालत के दौरान कुल 33,181 मामलों को सुनवाई हेतु लिया गया, जिनमें से 30,298 मामलों का निपटारा किया गया। निपटाए गए मामलों की कुल राशि 59,09,14,425/- रही, जो विवाद समाधान और वित्तीय वसूली में लोक अदालतों की प्रभावशीलता को दर्शाती है। इस अवसर पर कुल 26 बेंचों का गठन किया गया, जिनमें से 20 बेंच अमृतसर मुख्यालय में तथा 3-3 बेंच तहसील अजनाला और बाबा बकाला साहिब में स्थापित की गईं।

अमृतसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन श्रीमती जतिंदर कौर, जिला एवं सत्र न्यायाधीश–सह–अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अमृतसर के नेतृत्व में किया गया, जिसमें श्री अमरदीप सिंह बैंस, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अमृतसर द्वारा सक्रिय प्रयास किए गए। लोक अदालत ने अपने मुख्य उद्देश्य—विवादों के सौहार्दपूर्ण निपटारे और लंबे समय से लंबित मामलों के त्वरित समाधान—में सफलता प्राप्त की। प्री-लोक अदालत कार्यवाहियों के दौरान किए गए निरंतर प्रयासों और लोक अदालत के दिन प्रभावी आयोजन के कारण अमृतसर की विभिन्न अदालतों में कई वर्षों से लंबित सिविल और नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट्स एक्ट के मामलों का निपटारा हुआ।

इनमें श्री अमरजीत सिंह, सिविल जज (जूनियर डिवीजन)–सह–जे.एम.आई.सी., अमृतसर की अदालत में सिविल वसूली का मामला इलाहाबाद बैंक बनाम एम/एस पाल टेलर्स, जो वर्ष 2018 से लंबित था और वर्ष 2025–26 की एक्शन प्लान श्रेणी में शामिल था, का विधिवत निपटारा किया गया। बैंक द्वारा 6,05,561.40/- की वसूली का दावा किया गया था, परंतु अदालत के हस्तक्षेप से यह मामला 4,23,000/- में निपट गया। एक बड़ी राशि मौके पर अदा की गई और शेष राशि किस्तों में चुकाने पर सहमति बनी।

इसी प्रकार डॉ. गुरदर्शन सिंह, पी.सी.एस., सिविल जज (जूनियर डिवीजन)–सह–जे.एम.आई.सी., अमृतसर की अदालत में सिविल मामला एम/एस सुरिंदर कोल सप्लाई बनाम एम/एस ए.पी. ऑटो पिस्टन इंजीनियरिंग, जो वर्ष 2018 में दर्ज हुआ था और दलीलें पूर्ण होने तथा मुद्दे तय होने के बावजूद लंबित था, को प्री-लोक अदालत के दौरान किए गए निरंतर प्रयासों से सुलझा लिया गया।

सुश्री तरजानी, पी.सी.एस., न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, अमृतसर की अदालत में भी महत्वपूर्ण सफलता दर्ज की गई, जहां नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट्स एक्ट के तहत लगभग नौ वर्षों से लंबित मामला एम/एस देवी दास एंड सन्स बनाम संजय खन्ना—जिससे संबंधित कई कार्यवाहियां माननीय उच्च न्यायालय में भी चल रही थीं—का निपटारा किया गया। अदालत के सशक्त प्रयासों से 16,25,000/- की राशि पर पूर्ण समझौता हुआ, जिससे लंबे समय से चली आ रही मुकदमेबाजी और सभी संबंधित कार्यवाहियों का अंत हुआ।

इसके अतिरिक्त, सुश्री नीलम, पीठासीन अधिकारी, राष्ट्रीय लोक अदालत, अमृतसर की देखरेख में वर्ष 2019 से 2021 तक लंबित रहे कई नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट्स एक्ट के मामलों का सफलतापूर्वक निपटारा किया गया। इन मामलों में चेक राशियां 20,000/- से 5,00,000/- तक थीं, जो पक्षकारों के बीच विवादों के कारण वर्षों से लंबित थीं। प्री-लोक अदालत और राष्ट्रीय लोक अदालत के दौरान निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप आरोपियों द्वारा शिकायतकर्ताओं—जिसमें निजी पक्ष और वित्तीय संस्थाएं शामिल थीं—की पूर्ण संतुष्टि के अनुसार भुगतान किया गया।

इसके अलावा अजनाला में श्री पलविंदर सिंह, अतिरिक्त सिविल जज (सीनियर डिवीजन) की अदालत में दो वर्ष से अधिक समय से लंबित सिविल मामला विकास भाटिया एवं अन्य बनाम रणजीत सिंह एवं अन्य का भी राष्ट्रीय लोक अदालत के दौरान निपटारा किया गया। यह मामला लोक अदालत बेंच द्वारा सुना गया, जिसमें पीठासीन अधिकारी के साथ श्री एच.एस. निज्जर, अध्यक्ष, बार एसोसिएशन, अजनाला तथा श्री सुखचरणजीत सिंह, सचिव, बार एसोसिएशन, अजनाला शामिल थे। बेंच के प्रभावी हस्तक्षेप और विद्वान अधिवक्ताओं की सहायता से पक्षकारों की काउंसलिंग की गई, जिससे समझौता हुआ और मामले को वापस लेने के आदेशों के साथ अंतिम निपटारा किया गया।

इस प्रकार राष्ट्रीय लोक अदालत त्वरित न्याय, वित्तीय वसूली, लंबित मामलों में कमी तथा पक्षकारों के बीच संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए एक प्रभावी मंच सिद्ध हुई। सभी न्यायालयों के संयुक्त प्रयासों से वैकल्पिक विवाद निपटारा प्रणाली सुदृढ़ हुई और न्याय तक पहुंच और अधिक सशक्त बनी।

मेयर भाटिया ने गुजराती पूजक समाज द्वारा निकाली गई शोभा यात्रा में की शिरकत

अमृतसर 13 दिसंबर (साहिल बेरी)

अमृतसर – नगर निगम अमृतसर में आम आदमी पार्टी के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने गुजराती पूजक समाज द्वारा 09 ज्योतों के साथ निकाली गई भव्य शोभा यात्रा में भाग लिया और माता रानी के समक्ष शीश नवाया। इस अवसर पर मेयर भाटिया ने समस्त शहरवासियों की सुख-शांति, खुशहाली और प्रगति के लिए प्रार्थना की।

गुजराती पूजक समाज के प्रधान बंसी लाल के नेतृत्व में 51वां वार्षिक जागरण पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ आयोजित किया गया, जिसके उपरांत समाज की ओर से यह शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा के दौरान भजनों और जयकारों से पूरा क्षेत्र भक्तिमय वातावरण में सराबोर रहा।

इस अवसर पर मेयर भाटिया ने कहा कि माता रानी की असीम कृपा से समाज में भाईचारे, आपसी सहयोग और सद्भावना की भावना बनी रहती है। उन्होंने कहा कि धार्मिक और सामाजिक

आयोजन लोगों को एकजुट करने के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करते हैं। इस दौरान मेयर भाटिया ने शोभा यात्रा की सुचारु व्यवस्थाओं की सराहना करते हुए कहा कि गुजराती पूजक समाज द्वारा हर वर्ष इस प्रकार के धार्मिक आयोजन अनुशासन और श्रद्धा के साथ करना अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ने के साथ-साथ समाज में प्रेम, एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत करते हैं।

अंत में मेयर भाटिया ने गुजराती पूजक समाज के सभी सदस्यों को 51वें वार्षिक जागरण और शोभा यात्रा की हार्दिक बधाई दी और कहा कि नगर निगम अमृतसर सदैव धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों के लिए पूर्ण सहयोग करता रहेगा।

रेलवे स्टेशन अमृतसर ने एक व्यक्ति से 60 ग्राम हेरोइन के साथ किया गिरफ्तार

अमृतसर, 12 दिसंबर (साहिल बेरी)

दिनांक 12-12-2025 को एएसआई राजिंदर सिंह नं. 349 के नेतृत्व में एलआर/एएसआई बलजिंदर सिंह नं. 1383/जीआरपी, सीआईआई लव कुमार नं. 1037, एलआर/एएसआई अवतार सिंह नं. 209, एलआर/एएसआई अजमेर सिंह नं. 725 तथा कांस्टेबल सुखविंदर सिंह नं. 377/जीआरपी की टीम द्वारा रेलवे स्टेशन अमृतसर पर संदिग्ध व्यक्तियों एवं तस्करों के खिलाफ चेकिंग की जा रही थी।

चेकिंग के दौरान करीब शाम 5:30 बजे, यात्री शेड के बाहर उत्तर साइड एक व्यक्ति ने पुलिस पार्टी को देखकर अपनी पहनी हुई जींस पैंट की जेब से काले रंग का मोमी लिफाफा निकालकर कूड़े के ढेर की ओर फेंक दिया और मौके से भागने की कोशिश की। पुलिस पार्टी ने तत्परता दिखाते हुए उक्त व्यक्ति को काबू कर

लिया।

फेंके गए मोमी लिफाफे की जांच करने पर उसमें से 60 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। पूछताछ के दौरान आरोपी ने अपना नाम गौतम पुत्र स्व. रवि कुमार, निवासी दशरथ फौजी के किराए के मकान, गांधी कॉलोनी, गली नंबर 24, मॉडल टाउन, पानीपत (हरियाणा) बताया।

इस संबंध में थाना जीआरपी अमृतसर में मुकदमा नंबर 107 दिनांक 12-12-2025 धारा 21-61-85 एनडीपीएस एक्ट के तहत दर्ज कर लिया गया है। आरोपी को आज माननीय अदालत में पेश किया जा रहा है।

टीएलएम मेला–3 का भव्य, प्रेरक एवं अत्यंत सफल आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

पताही/मोतिहारी। पताही प्रखण्ड अंतर्गत बेतौना संकुल में टीचिंग लर्निंग मटेरियल (टीएलएम) मेला–3 का आयोजन अत्यंत उत्साह, शैक्षणिक नवाचार और रचनात्मक वातावरण के बीच सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस शैक्षणिक मेले का मुख्य उद्देश्य बच्चों में सीखने की रुचि बढ़ाना, सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप देना तथा बाल केंद्रित शिक्षण को मजबूती प्रदान करना रहा।

टीएलएम मेले में संकुल के अंतर्गत आने वाले सभी विद्यालयों से प्रत्येक वर्ग के एक-एक छात्र ने भाग लिया। बच्चों द्वारा अपने-अपने स्तर के अनुसार स्वयं तैयार किए गए टीएलएम मॉडल, चार्ट एवं नवाचारपूर्ण शिक्षण सामग्री मेले का मुख्य आकर्षण रहे। इन प्रदर्शनों ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि बच्चों को उचित मार्गदर्शन और अवसर मिले, तो वे सीमित संसाधनों में भी उत्कृष्ट और प्रभावशाली शिक्षण सामग्री का निर्माण कर सकते हैं।

प्रदर्शनी में गणित, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, भाषा एवं सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों से संबंधित विविध प्रकार के मॉडल और चार्ट लगाए गए। कहीं गणितीय अवधारणाओं को सरल रूप में दर्शाया गया था, तो कहीं विज्ञान एवं पर्यावरण से जुड़े प्रयोगात्मक मॉडल प्रस्तुत किए गए। भाषा एवं सामाजिक विज्ञान के टीएलएम में कहानी, चित्र, मानचित्र और चार्ट के माध्यम से विषयवस्तु को रोचक तरीके से समझाने का प्रयास किया गया। बच्चों की

मेहनत, कल्पनाशीलता, समझ और प्रस्तुति कौशल हर स्टॉल पर स्पष्ट रूप से नजर आ रहा था।

टीएलएम मेला–3 के सफल आयोजन में सीआरसी बेतौना के संचालक गोबिंद कुमार सिंह एवं नितीश कुमार की प्रमुख भूमिका रही। इनके कुशल नेतृत्व, सतत मार्गदर्शन एवं बेहतर समन्वय के कारण कार्यक्रम व्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से संपन्न हुआ। साथ ही करूणाकर कुमार एवं पुष्पा कुमारी ने भी आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण एवं सराहनीय योगदान दिया।

मेला के समापन से पूर्व संचालक गोबिंद कुमार सिंह द्वारा प्रदर्शित टीएलएम का सूक्ष्म अवलोकन एवं मूल्यांकन किया गया। इसके पश्चात तीन उत्कृष्ट टीएलएम का चयन कर संबंधित विद्यालयों के शिक्षकों एवं छात्रों को मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव एनपीएस बेतौना परती टोला को मिला। द्वितीय स्थान राजकीय मध्य विद्यालय गम्हरिया को प्राप्त हुआ। तृतीय स्थान एनपीएस खुटौना यादव टोला के नाम रहा। सम्मान प्राप्त करने वाले छात्रों एवं शिक्षकों का उत्साह देखते ही बन रहा था, जिससे अन्य बच्चों को भी भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिली।

इस अवसर पर मृत्युंजय कुमार, अमित कुमार, मो. खुर्शीद आलम, सरोज ठाकुर, बीरेन्द्र राम, हरिश्चंद्र कुमार साह, चंदा कुमारी एवं सपना कुमारी सहित कई शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं। सभी ने बच्चों की प्रशंसा करते हुए ऐसे आयोजनों को नियमित रूप से आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

कुल मिलाकर, टीएलएम मेला–3 न केवल बच्चों की प्रतिभा को मंच प्रदान करने वाला आयोजन रहा, बल्कि यह गुणवत्तापूर्ण, रोचक एवं प्रयोगात्मक शिक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी पहल सिद्ध हुआ। ऐसे आयोजन निश्चित रूप से विद्यालयों में नवाचार, सहभागिता और सीखने के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण करते हैं।

सीवरमैन वेलफेयर यूनियन अमृतसर द्वारा महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन

अमृतसर, 13 दिसंबर (साहिल बेरी)

सीवरमैन वेलफेयर यूनियन अमृतसर की ओर से आज एक महत्वपूर्ण बैठक/एकत्रीकरण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यूनियन के वरिष्ठ भाई सोनू शर्मा जी तथा उनके सहयोगी जॉनी हंस विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस दौरान उनकी टीम के सदस्य साहिल मल्होत्रा, साजन, सन्नी कल्याण, रवि कल्याण और सन्नी भाजी भी मौजूद रहे। बैठक के दौरान सीवरमैनों की भलाई, उनके अधिकारों तथा उन्हें पेश आने वाली समस्याओं को लेकर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया।

सोनू शर्मा जी ने कहा कि सीवरमैन

समाज की प्रगति और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए यूनियन हमेशा प्रतिबद्ध रहेगी तथा आने वाले समय में और भी कल्याणकारी कार्य किए जाएंगे।

अपनी ज़मीं खो दी...!

नहीं हो सकती 'असरदार विपक्ष' की कल्पना,
कहें अश्विनी हर-बार न हो ईवीएम संकल्पना।
पार्टी ने देश में कहीं-कहीं अपनी ज़मीं खो दी,
बेअसर 'मुद्दों' ने भी चुनावों में लुटिया डूबो दी।

आइडियोलॉजी के लिए मन में बहुत इज्जत है,
इस्तीफा इसलिए दिया हो रहीं हमें फ़ज़हित हैं।
अब भी नेताओं के लिए बहुत मन में सम्मान है,
वह चुनाव जीत के ईवीएम से क्यों हलाकान है।

अब पार्टी को भीतर झांकने की हैं आवश्यकता,
आज जवाब देने में भी नाकाम हो जाते प्रवक्ता।
वाकई में ईवीएम में अगर कोई होती हैं गड़बड़ी,
न लें चुनाव में हिस्सा जहां जीत रहे दो
इस्तीफा।
(संदर्भ-अश्विनी कुमार का पार्टी से इस्तीफा)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

रिटायर्ड अधिकारियों पर सरकार का भरोसा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भर्ती में राज्य सरकार का यू-टर्न। रिटायर्ड अधिकारी फिर से होंगे, नौकरी ढूंढने वाले निराश रिटायरमेंट के बाद किसी को डबल अपॉइंटमेंट दिया जा रहा है तो किसी को घर से लाया जा रहा है। जल संसाधन विभाग के टॉप इंजीनियर चंद्रशेखर पाढ़ी को जुलाई में रिटायरमेंट के बाद 6 महीने के लिए OSD बनाया गया था। लेकिन 6 महीने बाद ही उन्हें फिर से नियुक्त किया जा रहा है। सवाल उठता है कि इतनी मेहरबानी क्यों? क्या विभाग में कोई काबिल नहीं है? एक को रिटायरमेंट के बाद दो बार अपॉइंटमेंट मिल रहा है। SC-ST विभाग से दो और लेटर आए। उन्हें घर से लाकर फिर से नियुक्त किया जा रहा है। रिटायर्ड चीफ इंजीनियर चित्तरंजन जेना को टेक्निकल कंसल्टेंट के तौर पर सालाना अपॉइंटमेंट दिया गया है। बाबू इसके लिए हर महीने 75 हजार रुपये लेंगे। वहीं, SC-ST विभाग के उस रिटायर्ड अधिकारी को। हालांकि, एडिशनल चीफ इंजीनियर अजय कुमार मिश्रा को भी टेक्निकल कंसल्टेंट के तौर पर सालाना अपॉइंटमेंट दिया गया है।

यहां सवाल यह उठता है कि राज्य में लाखों पढ़े-लिखे युवा नौकरी के लिए सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं। नौकरी की उम्र कम होने से मानसिक तनाव के कारण कई युवा आत्महत्या कर रहे हैं। लेकिन, नई पीढ़ी को मौके देने के बजाय सरकार बार-बार रिटायर्ड कर्मचारियों को फिर से नौकरी पर रख रही है।

सरकार ने OSD के तौर पर जिम्मेदारी दी है। रिटायर्ड अधिकारियों की लिस्ट बनाने का ऑर्डर आया है कि वे किस डिपार्टमेंट में अपॉइंट हुए हैं। इसके लिए एक कमेटी भी बनाई गई है। रिटायर्ड अधिकारियों पर सरकार का भरोसा। जल संसाधन विभाग के टॉप इंजीनियर का कार्यकाल फिर बढ़ा दिया गया है।

जिला मजिस्ट्रेट को धान हटाने केलिए किसान की मांग

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

बरागढ़/भूबनेश्वर : बरगढ़ जिले में धान की कटाई का काम नॉर्मल नहीं रहा है। जिले की अलग-अलग मंडियों में बड़ी मात्रा में धान पड़ा हुआ है। इससे किसानों की चिंता बढ़ गई है। राजबोदासम्बा किसान संघ की ओर से पद्मपुर सब-कलेक्टर के ऑफिस के सामने, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट आदित्य गोयल की मौजूदगी में, उन्होंने उनके पैरों तले धान फेंका और उनसे तुरंत सारा धान खरीदने की रिक्वेस्ट की। बताया जा रहा है कि पिछले खरीफ सीजन में पद्मपुर RMC से 30 लाख क्विंटल धान खरीदा गया था। इस साल 92 धान खरीद केंद्र खोले गए हैं, लेकिन 42 केंद्रों पर धान की खरीद शुरू नहीं हुई है। अलग-अलग मंडियों में 3 लाख पैकेट धान पड़ा है, लेकिन सिर्फ 40 हजार पैकेट धान ही खरीदा गया है। 70% किसानों के टोकन अभी तक नहीं आए हैं, कई किसानों के टोकन जमीन से काफी कम आए हैं। कुछ टोकन जनवरी में बिकने वाले हैं। बिना सिंचाई वाले इलाकों के लिए प्रति एकड़ 13 क्विंटल धान बेचने की इजाजत है। सरप्लस धान का क्या करना है, इस पर सरकार ने कोई फैसला नहीं लिया है। चुनावी वादा किया था कि धान का दाम 800 रुपये प्रति क्विंटल की जगह 731 रुपये दिया जाएगा। ये सभी समस्याएं दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं। बार-बार विरोध करने के बाद भी किसानों की शिकायत है कि सिर्फ वादे किए जा रहे हैं। इससे किसान नाखुश हैं। किसानों ने चेतावनी दी है कि वे अगले सोमवार को धान लगाने के लिए मजबूर होंगे।

भाखड़ा ब्यास इंप्लाइज यूनियन एटक ऐफी ने की गेट मीटिंग

परिवहन विशेष न्यूज

संगरूर, (जगसीर लोगोंवाल)– आज भाखड़ा ब्यास इंप्लाइज यूनियन एटक ऐफी शाखा संगरुर पटियाला कि गेट मीटिंग प्रधान श्री सरबजीत सिंह की अध्यक्षता में हुई इस समय सम्बोधित करते हुए युनियन महासचिव श्री सुरेश कुमार सैनी ने दिनांक 07 दिसंबर को हुई गंगूवाल बी बी एम बी ओफीसर क्लब में केंद्रीय कार्यकारणी की मीटिंग में लिए गए निर्णय से अवगत कराते हुए सभी कर्मचारी साथियों को एक जुट होकर संघर्ष सील होने की और सभी को आने वाली 25 दिसंबर के बाद काले झंडे लेकर विरोध प्रदर्शन करना तथा दिनांक 21 जनवरी 2026 को बोर्ड कार्यालय चंडीगढ़ में पहुंचने कि अपील भी कि गई। इस समय शाखा प्रधान श्री सरबजीत सिंह सहित उपसचिव श्री पंकज वर्मा जी, संयुक्त सचिव श्री तिजेन्द्र पाल सिंह जी, श्री ओमप्रकाश जी, श्री रणजीत सिंह जी, श्री जगसीर सिंह ने भी अपने अपने विचार सांझा करते हुए मीटिंग में उपस्थित सभी कर्मचारी साथियों को एकजुटता के साथ सहयोग देने हेतु अपील की।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023